● वर्ष-3
● अंक-232
रायपुर, बुधवार
08 मई 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› वर्किंग पैरेंट्स के बच्चों में दिखाई दे...

तीसरे चरण का मतदान संपन्न, असम में सबसे ज्यादा हुई वोटिंग

93 सीटों पर 60% मतदान दर्ज

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गृह राज्य गुजरात सहित ग्यारह राज्यों और क्षेत्रों में मंगलवार को भीषण तापमान के बीच लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में मतदान हुआ। मंगलवार को हुए मतदान में 93 लोकसभा सीटें शामिल थीं, क्योंकि कांग्रेस उम्मीदवार के नामांकन पत्र खारिज होने और अन्य के दौड़ से हटने के बाद भाजपा ने सूरत में निर्विरोध जीत हासिल की थी। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, शाम 5 बजे तक लगभग 60त्न मतदान दर्ज किया गया, अधिकांश क्षेत्रों में बादल छाए रहने और हल्की बारिश के बावजूद भाजपा शासित असम (74.86%) में सबसे अधिक मतदान हुआ।

असम के अलावा बिहार में 56.01त्न, छत्तीसगढ़ में 66.87%, दादर और नगर हवेली और दमन और दीव में 65.23%, गोवा में 72.52त्न, गुजरात में 55.22%, कर्नाटक में 66.05%, मध्य प्रदेश में 62.28%, महाराष्ट्र में 53.40%, उत्तर प्रदेश में 55.13त्न और पश्चिम बंगाल में 73.93% वोटिंग हुई है। असम की जिन चार लोकसभा सीटों पर आज मतदान हुआ, उनमें धुबरी में सबसे अधिक 79.7त्न मतदान हुआ, इसके बाद बारपेटा में 76.2%, कोकराझार में 74.2त्न और गुवाहाटी में 67.6% मतदान हुआ।

पश्चिम बंगाल में शाम 5 बजे तक लगभग 73.9% मतदान हुआ, दो मुस्लिम बहुल जिलों के चार निर्वाचन क्षेत्रों में काफी हद तक शांतिपूर्ण मतदान हुआ। छत्तीसगढ़ की 11 लोकसभा सीटों में से सात पर मंगलवार को मतदान हुआ, शाम 5 बजे तक 66.87% मतदान दर्ज किया गया। रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, कोरबा, जांजगीर-चांपा, सरगुजा और रायगढ़ संसदीय क्षेत्रों में मतदान हुआ। मध्य प्रदेश में तीसरे चरण के मतदान वाले नौ निर्वाचन क्षेत्रों में शाम 5 बजे तक 62.28% मतदान दर्ज किया गया। सबसे अधिक मतदान राजगढ़ में 72.08%, उसके बाद विदिशा (69.20%) और गुना (68.93%) में हुआ। मध्य प्रदेश में पहले और दूसरे चरण में क्रमशः 58.59% और 67.75% मतदान हुआ था। मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव चार चरणों में हो रहे हैं। चौथा, जो राज्य में लोकसभा चुनाव का आखिरी चरण है, 13 मई को होगा। चुनाव अधिकारियों के अनुसार, तीसरे चरण में महाराष्ट्र के 48 लोकसभा क्षेत्रों में से 11 पर शाम 5 बजे तक 53.40% मतदान हुआ। इनमें कोल्हापुर में सबसे अधिक 63.71% मतदान हुआ, इसके बाद हटकनंगले (62.18%), लातूर (55.38%), सतारा (54.11%),रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग (53.75%), उस्मानाबाद (52.78%), सांगली (52.56%), रायगढ़ (50.31%), माधा (50%), सोलापुर (49.17%), और बारामती (45.68%) रहे। उत्तर प्रदेश में आगरा में 51.53 प्रतिशत, आँवला में 54.73 प्रतिशत, बदायूँ में 52.77 प्रतिशत, बरेली में 54.21 प्रतिशत, एटा में 57.07 प्रतिशत, फ़तेहपुर सीकरी में 54.93 प्रतिशत, फ़िरोज़ाबाद में 56.27 प्रतिशत, हाथरस में 53.54 प्रतिशत, मैनपुरी में 55.88 प्रतिशत और संभल में 61.10 प्रतिशत मतदान हुआ।

चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, गुजरात में 25 निर्वाचन क्षेत्रों में शाम 5 बजे तक 55.22% मतदान दर्ज किया गया। आदिवासी-आरक्षित वलसाड निर्वाचन क्षेत्र में सबसे अधिक 68.12% मतदान हुआ, जबकि अमरेली में सबसे कम 45.59% मतदान हुआ। बिहार की पांच लोकसभा सीटों - अररिया, झंझारपुर, सुपौल, मधेपुरा और खगड़िया - पर शाम 5 बजे तक 56% मतदान दर्ज किया गया - ये सभी सीटें वर्तमान में सत्तारूढ़ एनडीए के पास हैं। शाम 5 बजे तक सुपौल में सबसे अधिक 58.91% मतदान हुआ, इसके बाद अररिया (58.57%), मधेपुरा (54.92%), खगड़िया (54.35%) और झंझारपुर (53.29%) का स्थान रहा।

ईवीएम की पूजा करने के लिए महिला आयोग की प्रमुख और सात अन्य पर मुकदमा दर्ज

बारामती लोकसभा क्षेत्र के खडकवासला खंड में एक मतदान केंद्र के अंदर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की कथित तौर पर पूजा करने के लिए महाराष्ट्र महिला आयोग की अध्यक्ष रूपाली चाकणकर और सात अन्य लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

चाकणकर, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा)से ताल्लुक रखती हैं। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया, चाकणकर और अन्य लोगों ने आज (मंगलवार) सुबह सिंहगढ़ रोड इलाके में स्थित मतदान केंद्र के अधिकारी के आदेशों की अवहेलना की, अंदर गए और ईवीएम की पूजा की। निर्वाचन आयोग के एक अधिकारी द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के आधार पर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 131 (मतदान केंद्रों में या उसके निकट अव्यवस्थित आचरण के लिए जुर्माना) और 132 (मतदान केंद्र पर कदाचार के लिए जुर्माना) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। चाकणकर, राज्य के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के नेतृत्व वाले राकांपा से ताल्लुक रखी हैं वहीं जिन सात अन्य लोगों पर मामला दर्ज किया गया है उनमें राकांपा (शरद पवार गुट) और शिवसेना-उद्धव बालासाहेब ठाकरे (शिवसेना-यूबीटी) खेमे के एक-एक सदस्य शामिल हैं।

कांग्रेस की सरकार आने पर एससी/एसटी से छीनकर धार्मिक आधार पर दिया जाएगा आरक्षण?: मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि तुष्टीकरण की सनक में शहजादे एक और खतरनाक चाल चल रहे हैं। बाबा साहेब अंबेडकर ने दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को आरक्षण का अधिकार दिया था। कांग्रेस पार्टी दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों का आरक्षण छीनकर उसे धर्म के नाम पर देना चाहती है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि इंडी अघाड़ी एक ही एजेंडे से चुनाव लड़ रही है और वह है मिशन कैंसिल... इन्होंने कहा इंडी वाले जब सरकार में आएंगे तो धारा 370 को फिर से लागू करेंगे, सीएए को कैंसिल करेंगे। इतना ही नहीं, कांग्रेस और इंडी अघाड़ी वाले राम मंदिर को भी कैंसिल करना चाहते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीड में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज तीसरे चरण का मतदान खत्म होने को है और साथ ही इंडी अघाड़ी की उम्मीदें भी खत्म हो गई है। पहले चरण में इंडी अघाड़ी पस्त हुआ, दूसरे में ध्वस्त हुआ और आज तीसरे चरण में इंडी अघाड़ी का कहीं अगर छोटा-मोटा दीया जल रहा था तो वह भी बुझ गया।

कांग्रेस अब खुलेआम तुष्टीकरण और वोट बैंक का खेल खेल रही है।

इंडी एलायंस वोट जिहाद की अपील कर रहा है। 26/11 हमले के आतंकियों को क्लीन चिट दे रही है महाराष्ट्र कांग्रेस। जाहिर है, कांग्रेस का कसाब और पाकिस्तान के अन्य 10 आतंकवादियों से गहरा संबंध है। इंडी-अघाड़ी का एक ही एजेंडा है- ये सरकार में आएंगे तो मिशन कैंसिल चलाएंगे। इन्होंने कहा कि जब इंडी वाले सरकार में आएंगे तो वो धारा 370 को फिर लाएंगे। मोदी सीएए लाया है तो उसको कैंसिल करेंगे, तीन तलाक के कानून को कैंसिल करेंगे। मोदी जो गरीब को मुफ्त राशन दे रहा है उसको कैंसिल कर देंगे। इतना ही नहीं, इंडी-अघाड़ी वाले राम मंदिर को भी कैंसिल कर देंगे।

मोदी, विकसित भारत के मिशन पर निकला हुआ है। इस संकल्प के लिए आज मैं आपसे कुछ मांगने के लिए आया हूं। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। मेरी विरासत आप ही हैं। आपकी आने वाली पीढ़ियां वही मेरी विरासत है। मैं आपके भविष्य को बेहतर बनाने के लिए निकला हूं। आप सब ही मेरा परिवार हैं- मेरा भारत, मेरा परिवार। आज तीसरे फेज का मतदान खत्म होने को है और साथ ही इंडी-अघाड़ी की उम्मीदें भी खत्म हो गई हैं। पहले चरण में इंडी-अघाड़ी पस्त हुआ, दूसरे चरण में ध्वस्त हुआ और आज तीसरे चरण में इंडी-अघाड़ी का कहीं छोटा-मोटा दिया अगर जल रहा था, वो भी बुझ गया है।

सियासी लाभ के लिए मोदी ने फैलाई नफरत

नई दिल्ली, (ए)। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने तीसरे चरण की वोटिंग के बीच एक वीडियो संदेश जारी कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी पार्टी भाजपा पर तीखा और जोरदार हमला बोला है। मंगलवार को जारी अपने संदेश में गांधी ने कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने राजनीतिक फायदे के लिए देश में नफरत को बढ़ावा दिया है और समाज को कई हिस्सों में तोड़ दिया है। उन्होंने कहा है कि संविधान और लोकतंत्र के खतरे में होने और समाज के ताने-बाने के कमजोर होने से दुखी हूं। सोनिया गांधी ने वीडियो संदेश में कहा कि कांग्रेस और 'इंडिया' गठबंधन के घटक दल संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने झूठ और नफरत फैलाने वालों को खारिज करने और सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए कांग्रेस को वोट देने की अपील की है। गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में बेरोजगारी, महिलाओं के खिलाफ अपराध और दलितों, आदिवासियों एवं अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गया है।

बंगाल में बारिश और तूफान से भारी तबाही, 12 लोगों की मौत

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में आंधी-तूफान और बिजली गिरने से भारी तबाही मची है। इस आपदा की चपेट में आने से 12 लोगों की मौत हो गई। इस बीच, भारतीय मौसम विभाग के अनुमान ने चिंता और बढ़ा दी है। आईएमडी का कहना है कि अगले कुछ दिनों में आंधी-तूफान का सिलसिला जारी रह सकता है। साथ ही, राज्य के कई जिलों में बिजली गिरने की चेतावनी जारी की गई है। सोमवार को हुई भारी बारिश और आंधी-तूफान के चलते पूर्वी बर्दवान में 5 लोगों की मौत हो गई। पश्चिमी मिदनापुर और पुरुलिया में आंधी-तूफान और बिजली गिरने से 2-2 लोगों की मौत हुई।

प्रमुख समाचार

3 विधायकों ने वापस लिया समर्थन; कांग्रेस का पकड़ा हाथ

चंड़ीगढ़। लोकसभा चुनाव के बीच हरियाणा में सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका लगा है। तीन निर्दलीय विधायकों ने मंगलवार को घोषणा की कि उन्होंने नायब सिंह सैनी की अगुआई वाली सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया है। सोमबीर सांगवान, रणधीर गोलेन और धर्मपाल गोंदर ने कहा कि उन्होंने मौजूदा चुनाव में कांग्रेस को समर्थन देने का फैसला किया है। रोहतक में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को दौरान तीनों निर्दलीय विधायकों ने हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपिंदर सिंह हुड्डा और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष उदयभान की मौजूदगी में घोषणा की। गोंदर ने कहा, हम सरकार से अपना समर्थन वापस ले रहे हैं और अपना कांग्रेस को अपना समर्थन दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों समेत कई मुद्दों को लेकर उन्होंने यह फैसला किया है। मीडिया से बात करते हुए उदयभान ने कहा कि तीन निर्दलीय विधायकों ने भाजपा सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया है और अब कांग्रेस के साथ आ गए हैं। उदयभान ने दावा किया कि भाजपा सरकार अब अल्पमत में आ गई है और नायब सिंह सैनी को तुरंत इस्तीफा देना चाहिए।

मेरे दावे पर लालू यादव ने लगाई मुहर: मोदी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए मतदान के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अहमदनगर में जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने लालू यादव के बयान को लेकर जबरदस्त हमला बोला। उन्होंने कहा कि इस बार का चुनाव संतुष्टिकरण और तुष्टिकरण के बीच हो रहा है। भाजपा-एनडीए का पूरा प्रयास अपनी मेहनत से देशवासियों को संतुष्ट करने का है, वहीं इंडी-अघाड़ी वाले अपनी साजिशों से अपने वोट बैंक के तुष्टिकरण में लगे हैं। आज के दिन कांग्रेस और इंडी गठबंधन ने अपनी बहुत खतरनाक साजिश पर खुद ही मुहर लगा दी है। पीएम ने कहा कि इतने दिनों से मैं देश से कह रहा था कि कांग्रेस और उसके साथी बहुत खतरनाक खेल में लगे हैं, आज इंडी गठबंधन के सबसे बड़े नेता ने इससे पर्दा भी उठा दिया है। ये बिहार में अभी-अभी जेल से बाहर आए हैं। इन्होंने आज मीडिया के सामने साफ कहा है कि इंडी गठबंधन की सरकार आई तो देश में मुसलमानों को आरक्षण देंगे और पूरा का पूरा देंगे।

चुनाव आयोग से बीजेपी को झटका, विज्ञापन हटाने का आदेश

नई दिल्ली। चुनाव आयोग से भारतीय जनता पार्टी को मंगलवार को बड़ा झटका लगा। ईसी ने अपने फैसले में बीजेपी का विवादित विज्ञापन हटाने के लिए कहा है। आयोग ने माइक्रोब्लॉगिंग वेबसाइट एक्स को निर्देश दिया कि कर्नाटक भाजपा की ओर से पोस्ट आपत्तिजनक विज्ञापन को हटाया जाए। दरअसल, कर्नाटक में विपक्षी दल ने राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के आदेश के बाद भी इसे नहीं हटाया था। आपत्तिजनक पोस्ट को लेकर पहले ही एफआईआर दर्ज की जा चुकी है। कांग्रेस की ओर से यह मामला जोरशोर से उठाया जा रहा था। कांग्रेस ने कर्नाटक भाजपा प्रमुख बीवाई विजयेंद्र के खिलाफ चुनाव आयोग से शिकायत की थी। इसमें उन पर अपमानजनक सामग्री पोस्ट करने का आरोप लगाया गया। साथ ही कहा गया कि इससे कानून और व्यवस्था की समस्या पैदा हो सकती है। वीडियो में कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कुछ आरोप लगाए गए थे। ऐसा कहा गया कि केंद्र में विपक्षी पार्टी आरक्षण और फंड आवंटन में पिछड़े वर्गों की तुलना में मुसलमानों का पक्ष लेती है। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने इसे लेकर पुलिस और चुनाव आयोग के समक्ष याचिका दायर कर दी। इसमें आरोप लगाया कि वीडियो में आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया गया है.

केजरीवाल को जमानत मिली तो नहीं होगी सीएम वाली पावर!

नई दिल्ली। कथित शराब घोटाले में गिरफ्तार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की याचिका पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में कई घंटों तक बहस चली। गिरफ्तारी के खिलाफ हाई कोर्ट में दी गई याचिका पर आए फैसले को केजरीवाल ने देश की सबसे बड़ी अदालत में चुनौती दी है। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दिपांकर दत्ता की बेंच ने याचिका पर सुनवाई करते हुए केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने पर भी विचार किया। कोर्ट ने कहा कि केजरीवाल एक निर्वाचित मुख्यमंत्री हैं, आदतन अपराधी नहीं। लोकसभा पांच साल बाद चुनाव आता है, इसलिए प्रचार में हिस्सा लेने की अनुमति देने पर विचार किया जा सकता है। ईडी की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने अंतरिम जमानत याचिका पर विचार का विरोध किया और कहा कि एक नेता के लिए अलग नियम नहीं हो सकता है। केजरीवाल की ओर से वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने भी दलीलें रखीं। पीठ ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद कहा कि वह अंतिम जमानत पर आगे की सुनवाई गुरुवार या अगले सप्ताह पूरी होने पर कोई आदेश पारित करेगी। जस्टिस खन्ना ने कहा कि देखते हैं कि क्या मामला परसों खत्म हो सकता है.

पतंजलि केसः भ्रामक ऐड के लिए सिलेब्रिटी भी जिम्मेदारः सुको

नई दिल्ली। भ्रामक विज्ञापनों को प्रचारित करने वाले सिलेब्रिटीज और प्रभावशाली लोग भी इसके लिए उतरने ही जिम्मेदार हैं, जितना उसे तैयार करने वाली कंपनियां हैं। सुप्रीम कोर्ट ने पतंजलि आयुर्वेद की ओर से अपनी दवाओं को लेकर जारी भ्रामक विज्ञापनों के मामले की सुनवाई करते हुए यह अहम टिप्पणी की। अदालत ने कहा कि यदि किसी उत्पाद को लेकर किए गए दावे गलत पाए जाते हैं तो उनका प्रचार करने वाली सिलेब्रिटीज और सोशल मीडिया एन्फ्लुएंसर्स भी जिम्मेदार हैं। पतंजलि आयुर्वेद के मामले की सुनवाई करते हुए बेंच ने ड्रूू की भी खिंचाई की। अदालत ने कहा कि विज्ञापनों को प्रसारित करने से पहले चैनलों को भी एक सेल्फ डिक्लेरेशन फॉर्म भरना चाहिए। इसमें यह घोषणा करनी चाहिए कि हम सभी नियमों का पालन करते हैं। मंगलवार को जस्टिस हिमा कोहली और जस्टिस अमानुल्लाह की बेंच ने गाइडलाइंस फॉर प्रिवेंशन ऑफ मिसलीडिंग ऐड का जिक्र किया। अदालत ने कहा कि इस नियम की गाइडलाइन 13 में कहा गया है कि किसी विज्ञापन का प्रचार करने वाली हस्ती को संबंधित सेवा एवं उत्पाद के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। उसे यह पता होना चाहिए कि वह जिस चीज का प्रचार कर रहा है, वह किसी भी तरह से नुकसानदेह नहीं है।

क्या राधिका खेड़ा मामले की बड़ी कीमत कांग्रेस को चुकानी नहीं पड़ेगी?

अनिल पुरोहित

छह दिनों तक अपमान और अपने साथ हुई बदसलूकी के मामले में न्याय नहीं मिलने से मर्माहत कांग्रेस और राष्ट्रीय प्रवक्ता पद से त्यागपत्र देने के दो दिन बाद भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो चुकीं सुश्री राधिका खेड़ा ने जो खुलासे भाजपा प्रवेश से एक दिन पूर्व सोमवार को दिल्ली में आहूत अपनी पत्रकार वार्ता में किए हैं, उसके बाद यह कहने में कतई ऐतराज नहीं किया जा सकता कि कांग्रेस कार्यालय महिलाओं के लिए किसी भी रूप में सुरक्षित जगह नहीं रह गया है। सुश्री खेड़ा द्वारा किए गए खुलासों के बाद तो कांग्रेस के लोगों को शर्म से गड़ जाना चाहिए और अपने मुँह से नारी सुरक्षा, सम्मान और न्याय की बातें बिल्कुल नहीं करनी चाहिए।

कांग्रेस में महिलाओं के हर तरह के शोषण का यह इतिहास बहुत पुराना है और सुश्री राधिका खेड़ा ने कांग्रेस की इस निकृष्ट मानसिकता के खिलाफ जो आवाज बुलंद की है, उसकी गूंज से कांग्रेस का समूचा राजनीतिक वजूद भरभरा जाने के आसार बढ़ गए हैं। कांग्रेस में महिलाओं के अपमान की यह कोई पहली घटना नहीं हैं। कांग्रेस का तो इतिहास ऐसी शर्मनाक हरकतों की गवाही दे रहा है। फिल्म जगत से कांग्रेस में आईं नगमा के साथ कांग्रेस दफ्तर में ही हुए अपमानजनक व्यवहार को छत्तीसगढ़ भूला नहीं है। रायपुर में लगभग सालभर पहले हुए कांग्रेस के जिस राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रियंका वाड्रा ने गुलाब की पंखुड़ियों के लगभग दो किलोमीटर लंबे कालीन पर कदमताल की थी, उसी अधिवेशन के दौरान कांग्रेस के कैम्प कार्यालय (होटल) में कांग्रेस की उसी दलित महिला नेत्री अर्चना गौतम के साथ प्रियंका वाड्रा के ही निज सचिव ने अशिष्टता की सारी हदें पार कर दी थी, जो प्रियंका वाड्रा के जुमले %लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ% की पोस्टर गर्ल थीं। नैना साहनी को तंदूर में भून डालने, भँवरीदेवी कांड रचने और अपनी ही एक वरिष्ठ महिला नेत्री को भरी सभा में सौ टका टंच माल बताने की राजनीतिक संस्कृति की पोषक कांग्रेस में अपने प्रति ऐसे ही अशिष्ट आचरण से क्षुब्ध होकर ही प्रियंका चतुर्वेदी ने कांग्रेस को बाय-बाय किया था और महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए सुष्मिता देव ने कांग्रेस को छोड़ा था।

राधिका खेड़ा के मामले में कांग्रेस जाँच करने का दिखावा कर मामले की लीपापोती करने में लगी थी, यह सुश्री खेड़ा के त्यागपत्र से स्पष्ट प्रतीत हो रहा है। कांग्रेस के डीएनए में ही राम-द्रोह और महिलाओं का तिरस्कार रचा-बसा है। अयोध्या जाकर प्रभु श्रीरामलला का दर्शन करने पर जो दुर्व्यवहार सुश्री खेड़ा के साथ कांग्रेस में किया गया, क्या उसकी बड़ी कीमत कांग्रेस को चुकानी नहीं पड़ेगी? प्रभु श्रीरामलला के दर्शन करके टारगेट बनने वालीं सुश्री खेड़ा कांग्रेस में पहली नेता नहीं हैं। जिस-जिसने भी प्रभु श्रीरामलला प्राण-प्रतिष्ठा के न्योते को ठुकराने के कांग्रेस आलाकमान के फैसले से असहमति दर्ज की थी, जिस-जिसने भी अपनी आस्था के वशीभूत होकर अयोध्या जाकर भगवान रामलला के दर्शन किए, उन सबको या तो कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया या फिर उन्हें कांग्रेस छोड़ने के लिए विवश कर दिया गया। आचार्य प्रमोद कृष्णम के निष्कासन से लेकर सुश्री खेड़ा के इस्तीफे तक का यह दौर कांग्रेस के उस दावे की बखिया उधेड़ रहा है जिसमें कांग्रेस के लोकतंत्र में विश्वास और पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र की डींगें हाँकते कांग्रेसी देशभर में अपना रामद्रोही व महिला-विरोधी राजनीतिक चरित्र लिए फिर रहे हैं। सुश्री खेड़ा के साथ जिस कांग्रेस में बदसलूकी हुए 6 दिन बीतने के बाद भी जब न्याय नहीं मिल सका और उनका आत्म-सम्मान सुरक्षित नहीं रहा तो उस कांग्रेस से देश की महिलाओं के सम्मान की रक्षा और उनके साथ न्याय की क्या उम्मीद रखी जाए?

अगर कांग्रेस महिला न्याय के ढोल पीट रही है, तब सवाल यह भी उठता है कि सुश्री खेड़ा को न्याय के लिए इतना लंबा इंतजार क्यों पड़ा? जबकि, इस घटना के ठीक दूसरे दिन कांग्रेस के नेशनल मीडिया कोऑर्डिनेटर पवन खेड़ा तो रायपुर में थे। छत्तीसगढ़ आकर दिल्ली लौटने के बाद पवन खेड़ा को इस मामले की सुध लेना याद आया! अगर वह चाहते कि सचमुच राधिका खेड़ा को न्याय मिले तो वहीं आमने-सामने सारी बात सुनकर मामले का पटाक्षेप कर देते और सुश्री खेड़ा को न्याय दिलवा देते। इसी बीच कांग्रेस नेत्री प्रियंका वाड्रा छत्तीसगढ़ आकर दो सभाएँ लेकर लौट गईं पर इस मामले में उनके मुँह से दो बोल तक नहीं फूटे और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तो इस मुद्दे पर सवालों से बचने के लिए यहाँ आयोजित अपनी पत्रकार वार्ता ही रद्द करके दिल्ली लौट गए। इसके बाद अपनी राष्ट्रीय प्रवक्ता का आत्म-सम्मान महफूज रखकर उन्हें न्याय के लिए 6 दिन का इंतजार कराया गया। सवाल यह है कि राधिका खेड़ा के मामले में कांग्रेस जाँच करने का दिखावा कर मामले की लीपापोती क्यों कर रही थी?

बेमेतरा में मतदान का बहिष्कार, पोलिंग बूथ में जड़ा ताला

ग्रामीण बोले विकास के नाम पर मिला सिर्फ नेताओं से आश्वासन

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ में तीसरे और अंतिम चरण का मतदान जारी है। बेमेतरा के नवागढ़ विधानसभा क्षेत्र में रामपुर गांव के लोगों ने मतदान का बहिष्कार किया है। ग्रामीणों की मांग है कि उन्होंने कई सालों से मूलभूत सुविधाओं को पूरा करने की मांग की थी।लेकिन सरकार आई और गई।लेकिन उनकी मांगों पर किसी भी तरह की कोई सुनवाई नहीं हुई।ग्रामीणों ने चुनाव से पहले क्षेत्र में सड़क निर्माण की मांग की थी।लेकिन सड़क नहीं बनीं।इसलिए मतदान वाले दिन ग्रामीणों ने सड़क नहीं बनने पर मतदान का बहिष्कार कर दिया है।

आपको बता दें कि जिस जगह पर मतदान का बहिष्कार हुआ है,वो मंत्री दयालदास बघेल का क्षेत्र है।ग्रामीणों के मुताबिक सड़क नहीं होने पर उनके गांव में एंबुलेंस नहीं आती।यदि कोई बीमार पड़ जाए तो उसे खाट पर टांगकर नजदीकी सड़क वाले गांव तक ले जाया जाता है।

मीडिया से बातचीत करते हुए ग्रामीणों ने कहा कि आजादी के 75 वर्ष बाद भी गांव को सड़क नसीब नहीं हुई है।सड़क नहीं होने के कारण ग्रामीणों को आवागमन में असुविधा हो रही है। एंबुलेंस भी समय से नहीं पहुंच पाती है। जिससे ग्रामीण काफी दुखी हैं।इसलिए सभी मिलकर लोकसभा चुनाव का बहिष्कार कर रहे हैं। ग्रामीणों के मुताबिक यदि अफसर मीडिया के सामने लिखित में आश्वासन दें दे तो वो मतदान करेंगे।

रामपुर के ग्रामीणों ने मतदान से एक दिन पहले बेमेतरा कृषि उपज मंडी परिसर में सड़क निर्माण को लेकर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन सौंपा था। ग्रामीणों ने सड़क नहीं होने के कारण मतदान नहीं करने की बात कही

थी।वहीं रामपुर के ग्रामीणों को मनाने के लिए बेमेतरा जिला पंचायत के सीईओ टेकचंद अग्रवाल अपर कलेक्टर डॉ अनिल बाजपेयी नवागढ़ के एसडीएम तहसीलदार पटवारी मौके पर मौजूद थे।

वहीं दूसरी ओर बेमेतरा जिला के आन्दू घठोली के ग्रामीणों ने पीने की पानी की समस्या को लेकर मतदान का बहिष्कार किया है। ग्रामीण महिलाओं ने मतदान केंद्र में ताला जड़ कर सामने खड़े होकर विरोध दर्ज कराया है। मतदान बहिष्कार की जानकारी मिलने के बाद एसडीएम घनश्याम तंवर, तहसीलदार परमानंद बंजारे और पुलिस की टीम मौके पर ग्रामीणों को समझाने की कोशिश की है,लेकिन ग्रामीणों ने अधिकारियों की बात नहीं मानी।

ग्रामीण सावित्री बाई ने कहा 20 वर्ष से पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। गांव में पीने की पानी की समस्या है ।बच्चे गंदा पानी पीने मजबूर हैं। हम हर मतदान करते है यहां नेताओं ने सिर्फ आश्वासन दिया पानी नहीं।इसलिए जब तक पानी नहीं आएगा मतदान नहीं करेंगे।

आपको बता दें कि पूरा मामला बेमेतरा जिला के आन्दू घठोली का हैं। जहां वर्षों से ग्रामीण पेयजल की समस्या से जूझ रहे हैं। गांव में वाटर लेबल नीचे होने कारण हैंडपंप पानी की जगह हवा उगल रहे हैं। वही स्वच्छ पेयजल जल प्रदाय और नल जल योजना का समुचित लाभ ग्रामीणों को नही मिल पाया हैं। इसलिए समस्या को लेकर ग्रामीणों ने लोकसभा चुनाव का बहिष्कार किया है।

बिलासपुर में वोटिंग के लिए पोलिंग बूथ पर लंबी लाइन

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ की बिलासपुर लोकसभा सीट पर लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के तहत वोटिंग हुई। बिलासपुर के रण में बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला है। इस बार बीजेपी ने यहां साहू वोट बैंक को साधने के लिए तोखन साहू को चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं कांग्रेस ने इस सीट पर भिलाई नगर सीट से मौजूदा विधायक देवेंद्र यादव को उतारा है।

बिलासपुर लोकसभा सीट पर करीब 20 लाख 94 हजार 570 वोटर्स हैं। इनमें से 10 लाख 48 हजार 603 पुरुष मतदाता हैं, जबकि 10 लाख 36 हजार 778 महिला वोटर्स हैं। वहीं थर्ड जेंडर समुदाय के कुल 98 मतदाता भी हैं। बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र में कुल 2251 मतदान केंद्र हैं। इनमें संगवारी मतदान केंद्र, आदर्श मतदान केंद्र बनाए गए हैं। मतदाताओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए पोलिंग बूथ पर पीने का पानी, बैठक व्यवस्था, व्हीलचेयर के इंतजाम किये गए है।

कोरबा सीट पर वोटिंग का उत्साह

कोरबा। छत्तीसगढ़ की कोरबा लोकसभा सीट पर लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के तहत वोटिंग हुई। मंगलवार सुबह लगभग 6:00 बजे से ही वोटिंग के लिए लोग कतारों में लग गए थे। शहर के पास हाई स्कूल दर्री के मतदान केंद्र में वोटर्स की लंबी लाइन लगी हुई थी। जिले के दूसरे मतदान केंद्रों में भी धूप से बचने के लिए सुबह होते ही लोग लंबी कतारों में लग चुके थे। मतदान केंद्रों में मॉक पोल की प्रक्रिया हुई। मतदाताओं में उत्साह देखने को मिल रहा है।

कलेक्टर अजीत वसन्त ने पत्नी रूपल ठाकुर, पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी, निगमायुक्त प्रतिष्ठा ममगई, जिला पंचायत सीईओ संबित मिश्रा ने रामपुर पीडब्ल्यूडी आदर्श मतदान केंद्र 127 में किया मतदान। इस दौरान उन्होंने सभी से वोट डालने की अपील की और सेल्फी भी ली।

कोरबा के रण में बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला है। इस बार बीजेपी ने यहां बीजेपी की दिग्गज महिला नेता सरोज पांडेय को चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं कांग्रेस ने इस सीट पर वर्तमान सांसद ज्योत्सना महंत को उतारा है।

कोरबा लोकसभा सीट पर करीब 16 लाख 18 हजार 864 वोटर्स हैं। इनमें से 8 लाख 3 हजार 520 पुरुष मतदाता हैं, जबकि 8 लाख 15 हजार 292 महिला वोटर्स हैं। वहीं थर्ड जेंडर समुदाय के कुल 52 मतदाता भी हैं। कुल 14 हजार 335 दिव्यांग मतदाता हैं। यहां 18 से 19 वर्ष के 46 हजार 831 मतदाता हैं।

कोरबा लोकसभा क्षेत्र में कुल 2023 मतदान केंद्र हैं। इनमें संगवारी मतदान केंद्र, आदर्श मतदान केंद्र बनाए गए हैं। मतदाताओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए पोलिंग बूथ पर पीने का पानी, बैठक व्यवस्था, व्हीलचेयर के इंतजाम किये गए है। छत्तीसगढ़ के कोरबा लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत कोरबा संभाग के 8 विधानसभा क्षेत्र आती हैं। इनमें भरतपुर-सोनहत, मनेंद्रगढ़, बैकुंठपुर, रामपुर, कोरबा, कटघोरा, पाली तानाखार और मरवाही विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं।

अंतागढ़ टेप कांड: हाईकोर्ट ने मंतूराम पवार की याचिका को किया निराकृत

बिलासपुर। अंतागढ़ टेप कांड मामले में हाईकोर्ट ने मंतूराम पवार की याचिका निराकृत कर दी है। मामले की सुनवाई के दौरान शासन की तरफ से पैरवी कर रहे महाधिवक्ता प्रफुल्ल भारत ने कोर्ट को बताया कि इस केस में दर्ज एफआईआर का खारिज खात्मा हो चुका है। केस में बीजेपी के पूर्व मंत्री राजेश मूणत, दिवंगत अजीत जोगी, उनके बेटे अमित जोगी, पूर्व सीएम डॉ। रमन सिंह के दामाद पुनीत गुप्ता, मंतूराम पवार पर धोखाधड़ी और पैसों के प्रलोभन और भ्रष्टाचार अधिनियम की धाराओं के तहत जो मामला पंडरी थाने में दर्ज किया गया था। मामले में जांच पूरी करने के बाद क्लोजर रिपोर्ट भी दाखिल हो चुकी है। मामले में सभी पक्षों को सुनने के बाद जस्टिस रजनी दूबे और जस्टिस रमेश सिन्हा की डिवीजन बेंच ने याचिका निराकृत कर दी।

बता दें कि साल 2014 में अंतागढ़ विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस ने मंतूराम पवार को प्रत्याशी बनाया था। ऐन वक्त पर उन्होंने नाम वापस लेकर भाजपा प्रत्याशी को वॉक ओवर दे दिया था। इस बीच एक सीडी सामने आई, जिसमें कथित तौर पर तत्कालीन कांग्रेस विधायक अमित जोगी, तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ। रमन सिंह के दामाद डॉ। पुनीत गुप्ता आदि के बीच बातचीत में सात करोड़ रुपये की डील की बात सामने आई। इस मामले में कांग्रेस ने उसी समय एफआईआर दर्ज कराने के लिए पुलिस थाने में शिकायत की, लेकिन मामला दर्ज नहीं किया गया था। इधर वर्ष 2018 में प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने एसआइटी जांच शुरू करा दी थी। इस मामले में कांग्रेस संगठन ने मुकदमा भी दर्ज कराया था। शिकायत में बताया गया कि कांग्रेस पार्टी को नुकसान पहुंचाने के लिए पूर्व सीएम अजीत जोगी, तत्कालीन मंत्री राजेश मूणत, तत्कालीन विधायक अमित जोगी और लोक सेवक डॉ। पुनीत गुप्ता ने साजिश रची थी। कांग्रेस प्रत्याशी को प्रलोभन देकर नाम वापस कराया, बाद में मंतूराम पवार भाजपा में शामिल हो गए थे। लेकिन राज्य में बीजेपी सरकार आने के बाद अब केस बंद कर दिया गया।

एक घंटे में ही ग्राम शेराडांड़ में मतदान हुआ संपन्न

बैकुंठपुर। छत्तीसगढ़ के सबसे छोटे मतदान केंद्र में मतदान शुरु होते ही 1 घंटे के भीतर ही 100 प्रतिशत मतदान हो गया। इस मतदान केंद्र में मतदाताओं की संख्या मात्र 5 ही है। ये सभी एक ही परिवार के हैं। यह मतदान केंद्र कोरिया जिले के भरतपुर-सोनहत विधानसभा अंतर्गत ग्राम पंचायत चंदहा का आश्रित ग्राम शेराडांड़ मतदान केंद्र क्रमांक 143 है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी विनय कुमार लंगेह ने समस्त मतदाताओं के प्रति लोकतंत्र में अपनी शत प्रतिशत हिस्सेदारी के लिए आभार व्यक्त किया है। छत्तीसगढ़ का शेराडांड़ ऐसा मतदान केंद्र है जहां शुरुआती 1 घंटे में ही 100 प्रतिशत मतदान हो गया। यहां सिर्फ 5 ही मतदाता हैं। वर्ष 2009 में यहां 2, वर्ष 2013 में 3 जबकि वर्ष 2018 में 4 मतदाता थे। सुबह 7 बजते ही पांचों मतदाता मतदान केंद्र पहुंचे और अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

शेराडांड़ के ये हैं 5 मतदाता- सिंगारो बाई चेरवा पति राम प्रसाद, राम प्रसाद पिता देवराज चेरवा, दशरू अहिंद पिता कबूर, सुमित्रा पति दशरू, महिपाल राम रौतिया पिता मुटुर राम रौतिया।

मतदान केंद्र में मधुमक्खियों का हमला, 8 मतदाता घायल

जशपुर नगर। जशपुर के आरा मतदान केंद्र में मधुमक्खियों ने हमला कर दिया। इस हादसे में मतदान करने कतार में लगे 8 लोग घायल हो गए। सभी घायलों को तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस जानकारी जैसे ही जशपुर की विधायक को हुई वे तत्काल अस्पताल पहुंच कर घायल मतदाताओं से मुलाकात की और उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना की।

धान केंद्रों में नहीं हुआ शत-प्रतिशत उठाव

- कलेक्टर ने नोडल को हटाने सहकारिता पंजीयक को लिखा पत्र

गरियाबंद। छत्तीसगढ़ में धान खरीदी को खत्म हुए 3 महीने से अधिक हो चुके हैं। इसके बाद भी गरियाबंद जिले के 42 केंद्रों में शतप्रतिशत धान का उठाव नहीं हो पाया है। इसके पीछे का कारण है धान की कमी। इस लापरवाही से नाराज होकर कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने नोडल को हटाने के लिए सहकारिता पंजीयक को पत्र लिखा है।

सरकार ने केंद्रों में खरीदे गए धान का शतप्रतिशत उठाव के निर्देश दिए थे, जिससे शासन द्वारा केंद्रों को 37 प्रतिशत की कमीशन राशि दी जा सके। वहीं इन केंन्द्रों से अब भी 29380 क्विंटल का उठाव होना है, लेकिन केन्द्रों में केवल 18000 क्विंटल धान ही मौजूद है। केंद्रों में धान की कमी के कारण डीओ जारी होने के महीने भर बाद भी मिलरों ने उठाव नही किया है। लाटापारा,घूमरगुड़ा,चिचिया ,बोरसी, भसेरा, परसदा कला, कुंडेलभाठा जैसे केंद्रो में 1,1 हजार क्विंटल उठाव होना बाकी है।इसके अलावा 21 केंद्र ऐसे है जिन्हे 200 क्विंटल से भी ज्यादा का धान उपलब्ध कराना है।

वहीं चिचिया खरीदी केंद्र में रिकार्ड में दर्ज मात्रा से धान काफी कम है,जो मौजूद है उसकी गुणवत्ता खराब होने के कारण मिलर उठाव नही कर रहे। कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने इस मामले में आदेश के बाद भी काम में लापरवाही के चलते नाराज होकर 1 मई को पंजीयक सहकारी संस्थाएं नवा रायपुर को

खरीदी नियंत्रण के नोडल अधिकारी प्रहलाद पूरी गोस्वामी को हटाने के लिए पत्र जारी किया है। उन्होंने पत्र में लिखा है कि नोडल ने धान खरीदी की तैयारी,भौतिक सत्यापन, बारदाना व्यवस्था,भंडारण एवम सुरक्षा व्यवस्था में रुचि नही दिखाई। खरीदी के दौरान केंद्र वार नियंत्रित टोकन जारी करने के अलावा अंतिम निराकरण और प्रवेक्षण के कार्य में लापरवाही बरती गई है। बता दें, इसके पूर्व कलेक्टर ने इन्ही लापरवाही को गिनाते हुए 9 अप्रैल 2024 को विभागीय सचिव के नाम पत्र लिख, मार्कफेड द्वारा बैंक व्यय के रूप में सहकारिता विभाग को कुल धान खरीदी के अनुपात में दिए जाने वाले 5 प्रतिशत व्यय राशि को रोकने के लिए कहा था। मीडिया ने 28 मार्च को सरकारी रिकार्ड के हवाले से एक खबर में बताया था कि 60 केंद्रो से 2 करोड़ किमति धान बोरा समेत गायब थे। इस खबर के बाद सहकारिता विभाग गायब बोरे को सुखत वजन में बदल दिया। जिला प्रशासन के सख्त रवैए के बाद समितियों ने मिलर से साठ गांठ कर गायब कुछ बोरो को उठाव दिखा कर मैनेज करने की कोशिश की।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

मुख्यमंत्री साय ने गृह ग्राम बगिया में किया मतदान

सरगुजा। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने गृह ग्राम बगिया के प्राथमिक शाला बूथ क्रमांक 49 में सपरिवार मतदान किया। मतदान के लिए साय, मां जसमनी साय, पत्नी कौशल्या साय, बेटा तोशेंद्र साय, बेटी स्मृति साय, बहु राजकुमारी साय सहित पूरे परिवार ने लाइन में लगकर अपने बारी का इंतजार किया और मतदान किया। मतदान के बाद सीएम साय ने कहा कि जन-जन में मोदी और भाजपा के प्रति उत्साह है और हम छत्तीसगढ़ में 11 की 11 सीटें जीत रहे है। वहीं सरगुजा लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी चिंतामणी महाराज ने अपने गृह ग्राम श्रीकोट (कुसमी) में परिवार के साथ बूथ नंबर 241 में अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों से चर्चा करते हुए जीत का दावा किया।

जांजगीर चांपा सीट से भाजपा प्रत्याशी ने किया मतदान

जांजगीर चांपा। जांजगीर चांपा में मंगलवार सुबह 7 बजे से वोटिंग शुरू हो गई थी। जांजगीर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी कमलेश जांगड़े ने मतदान किया। सक्ती के अपने ग्रह ग्राम मसनिया में भाजपा प्रत्याशी ने वोट डाला। मतदान के बाद भाजपा प्रत्याशी ने कहा- मोदी पर भरोसा जता रहे लोग। भारी मतों से जीतने का किया दावा। कांग्रेस की ओर से पूर्व मंत्री शिव कुमार डहरिया मैदान में हैं। जबकि बीजेपी ने कमलेश जांगड़े को मैदान में उतारा है। जांजगीर चांपा लोकसभा के वोटर्स की बात करें तो यहां आठ विधानसभा सीटें आती हैं। जिनमें जांजगीर, अकलतरा, पामगढ़, सक्ती, चंद्रपुर, जैजैपुर, बिलाईगढ़ और कसडोल शामिल हैं। इन आठ विधानसभा क्षेत्रों में 2212 पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। जांजगीर चांपा जिले के तीन विधानसभा अकलतरा में 235 बूथ, पामगढ़ में 214, जांजगीर चांपा में 220 बूथ हैं। सक्ती जिले में 3 विधानसभा सक्ती में 235, जैजैपुर में 270, चंद्रपुर में 260 बूथ है। वहीं, बलौदा बाजार जिले के कसडोल विधानसभा में 402 बूथ और सारंगढ बिलाईगढ़ जिले के बिलाईगढ़ में 376 बूथ कुल 2212 बूथ हैं।

मृतक को मुआवजा नही देने पर डीएफओ कार्यालय सील

जगदलपुर। जिला एवं सत्र न्यायाधीश के न्यायालय के द्वारा बस्तर वन मंडल अधिकारी का कार्यालय सील कर दिया गया हैं। दरअसल वर्ष 2021 में भानपुरी इलाके में कमल कश्यप नामक एक ग्रामीण की वन विभाग कि वहान से दुर्घटना हो गई थी, इस दुर्घटना में कमल कश्यप की मौत हुई थी। मृतक पत्नी दो बच्चों और माता-पिता का अकेला वारिश था। वर्ष 2023 में न्यायालय ने छत्तीसगढ़ शासन और बस्तर वन मंडल अधिकारी को एक करोड़ 84 लाख रुपए राशि भुगतान करने का आदेश किया, लेकिन विभाग के द्वारा शासन को पत्र लिखने व उच्च न्यायालय में जाने का हवाला देकर मुआवजा राशि नहीं दी जा रही थी। अंत में 6 मई 2024 को जगदलपुर न्यायालय ने इस पर कड़ी आपत्ति जताते हुए डीएफओ कार्यालय को सील कर कुर्क करने का आदेश जारी कर दिया, सोमवार देर शाम न्यायालय के कर्मचारी डीएफओ कार्यालय पहुंचे और मुख्य कामकाजी दफ्तरों को सील कर दिया गया। पीड़ित पक्ष के वकील के अनुसार लगातार वन विभाग राशि देने में आनाकानी करता रहा लेकिन राशि देने में टाल मटोल करता रहा।

घर के बरामदे में सो रहे दंपती पर गिरा शेड, तीन घायल

जगदलपुर। बस्तर जिले में सोमवार रात शुरू हुई बारिश से एक ओर जहां शहर के अधिकांश हिस्से में बिजली गुल हो गई। वहीं शहर से लगे नगरनार थाना क्षेत्र के ग्राम मगनपुर में शेड के गिरने से उसकी चपेट में आने से दंपती के साथ ही एक 10 साल का बच्चा भी इसकी चपेट में आ गया। घायलों को बेहतर उपचार के लिए मेकाज में भर्ती किया गया। जानकारी के मुताबिक, मगनपुर निवासी जग्गू नाग 41 वर्ष, उसकी पत्नी तुलसा 39 वर्ष, घर के एक 10 वर्षीय बच्चे को लेकर घर के बरामदे में सोए हुए थे। अचानक से देर रात से शुरू हुई बारिश और तेज हवाओं के चलते घर में लगा हुआ शेड पति-पत्नी के साथ ही बच्चे पर आ गिरा। इस घटना में पत्नी तुलसा के सिर के साथ ही पैर में गंभीर चोट आई है। वहीं पति के पैर और सिर में चोट लगी। घटना के बाद घर में सो रहे परिवार के लोग घायलों की आवाज सुनकर बाहर आये और घायलों को मेकाज ले गए। परिजनों का कहना था कि घर में टाइल्स लगाने का काम चल रहा था। जिसके कारण कमरे में ना सोकर बाहर बरामदे में सो रहे थे।

पुलिसकर्मी ने हवाई फायरिंग की, एसपी ने किया सस्पेंड

कबीरधाम। कबीरधाम जिले के कवर्धा में बीती रात नशे में धुत एक पुलिस जवान ने हवाई फायरिंग कर दी। हवाई फायरिंग किए जाने के बाद हड़कंप मच गया। एसपी अभिषेक पल्लव के पास जानकारी आने के बाद आज पुलिस जवान को सस्पेंड कर दिया है। मिली जानकारी के अनुसार कवर्धा के कन्या हायर सेकेंडरी स्कूल में पेपर गार्ड ड्यूटी में लगा जवान कोमल कुर्रे ड्यूटी न जाकर विक्की ढाबा के पास पेट्रोल पंप में और अपने घर ग्राम बरबसपुर में जाकर हवाई फायरिंग की है। जानकारी आने के बाद रात को ही कवर्धा टीआई ने पुलिस जवान को ग्राम बरबसपुर से कोतवाली थाना लेकर आए। पुलिस जवान कोमल कुर्रे नशे के हालत में था। उसने अपने इंसास राइफल की एक मैगजीन खाली दी है। बाकी की दो मैगजीन कन्या स्कूल में रखी हुई है।

माओवादियों के अंत की तैयारी, 25 से अधिक मूलभूत सरकारी सुविधाएं

मधुरेंद्र सिन्हा

हाल ही में छत्तीसगढ़ के जंगलों में सुरक्षा बलों से मुठभेड़ में हैरतअंगेज दृश्य सामने आया। कांकेर जिले में जबर्दस्त गोलीबारी में कुल 29 माओवादी मारे गए, जिनमें उनका सबसे बड़ा नेता 25 लाख रुपये का इनामी शंकर राव भी शामिल था। इस मुठभेड़ में माओवादी आधुनिक हथियारों जैसे, असॉल्ट राइफलों तथा ग्रेनेड लॉन्चरों से लैस थे। फिर भी सुरक्षा बलों ने बेहद आक्रामक ढंग से मुकाबला करते हुए उनका खात्मा किया।

छत्तीसगढ़, झारखंड के जंगलों के बड़े हिस्से में एक तरह से माओवादियों का राज था और वहां उनसे लड़ना आसान नहीं था। जिन लोगों ने छत्तीसगढ़ के घने और विस्तृत जंगल नहीं देखे हैं, उन्हें यह बताना जरूरी है कि वहां माओवादियों की चप्पे-चप्पे पर नजर रहती है और उनके कैडर हर जगह पहुंचे रहते हैं। उन्हें हथियारों का भी बेहतर प्रशिक्षण दिया जाता है और घात लगाकर हमला करने में उन्हें महारत हासिल है।

पिछले कुछ वर्षों से केंद्र सरकार ने माओवादियों पर लगाम कसनी शुरू कर दी है। गृह मंत्रालय ने इनसे निपटने के लिए सुरक्षा बलों को न केवल आधुनिकतम हथियार देना शुरू किया है, बल्कि अन्य संसाधन भी। माओवादियों से निपटने में सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि राज्य सरकारें पर्याप्त मदद नहीं करतीं। उन्हें लगता है कि ऐसी मुठभेड़ों से आम जनता भी चपेट में आ जाएगी, जो पूरी तरह से गलत भी नहीं है। लेकिन अब स्थिति बदलने लगी है और नागरिकों की सुरक्षा और कल्याण पर ध्यान दिया जाने लगा है। इससे सरकार के प्रति जनता में अब कटता का भाव नहीं रहा है। उनकी सहानुभूति अब माओवादियों के साथ न होकर सुरक्षा बलों के साथ है।

ताजा मामले में, गृह मंत्रालय ने इन उग्रवादियों की गतिविधियों पर अपने स्रोतों से नजर रखी और जब सूचना बिल्कुल पक्की हो गई, तो राज्य के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ मिलकर बीनागुंडा और आसपास के इलाकों में ऑपरेशन चलाया। दिन में चलाए गए इस ऑपरेशन का लाभ यह हुआ कि सुरक्षा बलों को सभी कुछ साफ दिख रहा था और वे उन पर हावी हो गये। और बड़ी संख्या में माओवादियों को जान से हाथ धोना पड़ा। सुरक्षा बलों की आक्रामकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब तक चार महीने में लगभग 80 माओवादी मारे गए हैं और 125 से अधिक गिरफ्तार हुए हैं तथा 150 से अधिक ने आत्मसमर्पण किया है। यह केंद्र तथा राज्य सरकार के बीच सामंजस्य से संभव हुआ है। गृह मंत्रालय इस मामले में दृढ़ संकल्पित है कि माओवादियों से सख्ती से निपटना है, लेकिन बातचीत के रास्ते खुले हुए हैं।

माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में 2019 के बाद से 250 से भी ज्यादा सुरक्षा शिविर स्थापित किए गए हैं। इन माओवादियों के कारण राज्य का विकास रुक रहा है और जन जीवन प्रभावित हो रहा है। बस्तर जिले के सीधे-सादे आदिवासियों को डराकर ये माओवादी उनके बच्चों तक को अपने साथ ले जाते हैं और उन्हें कम उम्र से ही हथियारों की ट्रेनिंग देते हैं।

साठ के दशक के उत्तरार्ध में बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से नक्सलवाद आंदोलन की शुरुआत हुई, जहां माओवादियों ने भूमिहीन किसानों के साथ मिलकर बड़े पैमाने पर सशस्त्र आंदोलन किया, जिसका वहां की सरकार भी ठीक से जवाब नहीं दे पाई। इसी आंदोलन की तर्ज पर कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी लेनिन) ने छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, ओडिशा आदि में हिंसक आंदोलन किया। बंगाल के आंदोलन के विपरीत यहां सिद्धांतों की लड़ाई नहीं थी, बल्कि अपना वर्चस्व स्थापित करने की जिद है। इन माओवादियों के कैडर पैसे की वसूली करते हैं। खनन कार्य में लगी कंपनियों से मोटी रकम वसूली जा रही है। लेकिन अब समय बदलने लगा है और केंद्र सरकार माओवादियों से निपटने के लिए कमर कस चुकी है।

छत्तीसगढ़ सरकार ने केंद्र के साथ मिलकर नक्सल प्रभावित जिलों के लिए नई योजनाएं भी बनाई हैं। इसके तहत उन्हें 25 से अधिक मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत ग्रामीणों को आवास उपलब्ध कराने की बड़ी योजना पर काम हो रहा है। इस तरह के कल्याणकारी कार्यों से ग्रामीण माओवादियों से दूरी बनाने लगे हैं। हालांकि इस तरह के प्रयासों के कार्यान्वयन में वक्त लगेगा, लेकिन इस दिशा में यह एक बड़ी पहल है।

मतदाताओं के बीच लाइन में लगकर मंत्री, विधायक और प्रत्याशियों ने किया मतदान

रायपुर। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए छत्तीसगढ़ की 7 लोकसभा सीटों पर मंगलवार को मतदान हुआ। मतदाता बड़ी संख्या में उत्साह के साथ मतदान केंद्र पहुंचकर मतदान किए। वहीं नेता और प्रत्याशी भी लाइन में लगकर मतदान कर लोकतंत्र के पर्व में हिस्सा लिए।

उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन ने कोरबा के कोहड़िया स्कूल में और रायपुर पश्चिम विधायक राजेश मूणत ने रायपुर के चौबे कॉलोनी में अपने-अपने परिवार के साथ मतदान किया। इस दौरान मंत्री लखनलाल ने सरोज पाण्डे की प्रचंड जीत का दावा किया, तो रायपुर विधायक ने कांग्रेस नेता विकास उपाध्याय के वायरल मैसेज का जमकर पलटवार किया है।

उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन ने वोट देने के बाद सभी मतदाताओं से अपने मताधिकार का सदुपयोग करते हुए सशक्त, सुरक्षित और समृद्ध भारत की नींव रखने की अपील की है। उन्होंने कहा- एक ऐसी सरकार का चयन करें जो देश के विकास, सीमा की सुरक्षा, हमारी विरासतों के संरक्षण और राष्ट्रहित में दृढ़ निर्णय लेने की क्षमता रखती हो। आपका प्रत्येक वोट विकसित भारत की दिशा में एक मजबूत कदम होगा।

उन्होंने आगे कहा- इस अवसर पर उन्होंने कहा की कोरबा लोकसभा में भाजपा के पक्ष में जबरदस्त माहौल है। कोरबा विधानसभा में भाजपा की सबसे बड़ी लीड रहेगी। सरोज पांडेय प्रचंड वोटो से जीत दर्ज़ करने जा रही हैं। प्रदेश की जनता मोदी जी के गारंटी और विष्णुदेव के सुशासन पर मुहर लगाने जा रही है।

वहीं विधायक राजेश मूणत ने इस मौके पर कहा- इस बार फिर कमल खिलेगा। सभी का बटन कमल पर दबेगा। विकास की गति बढ़ेगी। मोदी जी एक बार फिर प्रधानमंत्री बनेंगे। लोग अपने घर से निकल रहे हैं, मौसम भी साथ दे रहा है। जनता भी साथ दे रही है।

विकास उपाध्याय के द्वारा वायरल मैसेज को लेकर राजेश मूणत ने कहा कि, कि अगर कोई समाज सेवी संस्थाएं कुछ कर रही हैं। कोई पंडाल लगा रहा है, कोई जूस पिला रहा है, या मान लीजिए कोई कुछ कर रहा है। तो गलत काम कर रहा है क्या ? नेगेटिव थॉट के बारे में पहले 42 से हारे हुए हैं, उससे उभर नहीं पा रहे हैं। यह कांग्रेस प्रत्याशी है, राष्ट्रीय सचिव है, कांग्रेस पार्टी ने उसे अकेला छोड़ दिया है। आश्चर्य लगाता है, जिसके पंडाल में कोई आदमी नही बैठा है, उसके कार्यकर्ता भी नही हैं।

रायपुर से कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी विकास उपाध्याय ने बीजेपी और रायपुर कलेक्टर पर आरोप लगाते हुए एक ऑडियो मैसेज जारी किया है, जो काफी ज्यादा वायरल हुई है।

विकास उपाध्याय ने इस मैसेज में कहा है कि, बीजपी और जिला कलेक्टर द्वारा बहुत सारे बूथों पर सामाजिक संस्था के आड़ में बहुत सारे भाजपा कार्यकर्ता बूथ में नींबू पानी और शर्बत बांट रहे हैं और भाजपा प्रत्याशियों को वोट देने के लिए जनता को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। जो कि आचार संहिता का उल्लंघन हैं। मेरा आप सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं से निवेदन हैं कि जिस भी बूथ में ऐसी स्थिति निर्मित होती हैं, वहाँ सख्त विरोध करिए।

वहीं वोट डालने के बाद विधायक मूणत ने कहा- चाय की चर्चा पर आज विराम लग रहा है, शाम तक लोग वोट डालकर चले जाएंगे। 8 तारीख के बाद डेवलपमेंट पर चर्चा करेंगे कि, किस प्रकार से विकसित भारत की ओर बढ़ना चाहिए। जनता ने जिस गारंटी के साथ छत्तीसगढ़ में बीजेपी की सरकार बनाई है, उसकी प्रगति को आगे बढ़ाने और विकास की गति को आगे बढ़ाने को लेकर चर्चा होगी। इस बार 5 लाख पार वोट बीजेपी में पड़ेंगे।

मतदान के बीच कांग्रेस प्रत्याशी विकास उपाध्याय धरने पर बैठे

रायपुर लोकसभा सीट के सभी मतदान केंद्रों में

वोटिंग हुई। इस बीच कांग्रेस प्रत्याशी विकास उपाध्याय ने पुरानी बस्ती के शिशु मंदिर स्थित मतदान केंद्र में धरने पर बैठ गए हैं। इस दौरान कांग्रेस ने रायपुर कलेक्टर और निर्वाचन अधिकारी के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। विकास उपाध्याय ने रायपुर कलेक्टर पर आरोप लगाते हुए कहा कि आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, स्वास्थ कार्यकर्ताओं से बीजेपी का प्रचार प्रासार, नींबू शरबत बांटने के बहाने मतदाताओं से बीजेपी को वोट देने की दलाली रायपुर कलेक्टर करवा रहे है। जिसको लेकर कांग्रेस के रायपुर लोकसभा प्रत्याशी विकास उपाध्याय धरने में बैठे।

सूरजपुर लोकसभा से कांग्रेस के प्रत्याशी शशि सिंह आज अपने गृह ग्राम शिवपुर के पोलिंग भूत पहुंच कर अपना मतदान किया। साथ ही सभी सरगुजावासियों से ज्यादा से ज्यादा बोट करने की अपील किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि पूरे सरगुजा क्षेत्र से मुझे लोगों का अपार प्यार और आशीर्वाद मिला। निश्चित ही अगर जनता के आशीर्वाद और प्यार मिला तो सरगुजा की बेटी हूं, सरगुजा के लिए बहुत कुछ करने की सोच रखी हूं। सरगुजा की आवाज बनकर दिल्ली जाऊंगी।

बिलासपुर के बेल्थरा विधायक सुशांत शुक्ला ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। उन्होंने सरकंडा लोधीपारा के प्राथमिक शाला में कतर में लगकर मतदान किया। इसके साथ ही विधायक ने लोगों से मतदान करने की अपील की है। राज्य की महिला बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने अपने गृह ग्राम बीरपुर के बोलिंग बूथ जाकर मतदान किया। लोकतंत्र के इस पर्व में लोगों से ज्यादा से ज्यादा वोट करने की अपील भी की।

सरगुजा लोकसभा क्षेत्र के सूरजपुर के प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मारवी ने अपने गृह ग्राम पटना पोलिंग बूथ में जाकर मतदान किया। इस दौरान विधायक भूलन सिंह मरावी ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि सरगुजा लोकसभा में हम 2 लाख से अधिक वोट से जीत रहे हैं। वहीं प्रेममगर विधानसभा से 40 हजार वोट का लीड रहने की बात कही। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के 11 सीटों में भी हम जीत रहे हैं, भाजपा के पक्ष में माहौल है।

बिलासपुर संसदीय क्षेत्र के बिल्हा विधायक धरमलाल कौशिक ने परिवार समेत मतदान किया। उन्होंने मतदाताओं के साथ लाइन में लगकर मतदान किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मतदाताओं में गजब का उत्साह का माहौल है। मोदी जी को तीसरी बार

प्रधानमंत्री बनाने वोट कर रहे हैं। कांग्रेस इस चुनाव में पूरी तरह बर्बाद होगी। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस का पहले 71 फिर 75 पार का नारा फेल हुआ था।

रायगढ़ लोकसभा क्षेत्र के रायगढ़ विधायक और वित्त मंत्री ओपी चौधरी आयुर्वेदिक चिकित्सालय मतदान केंद्र 81 में पहुंचकर मतदान किया। कोरबा लोकसभा प्रत्याशी सरोज पांडे चुनाव के बीच कोसाबाड़ी स्थित निर्मला स्कूल पहुंची। लोकसभा प्रत्याशी सरोज पांडे ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान हो रहा है। वहीं लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। उन्होंने मतदाताओं से अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने की अपील की।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने सपरिवार मतदान किया। अरुण साव ने शेफर्ड स्कूल स्थित बूथ में लाइन में खड़े होकर मतदान किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि विकसित भारत को लेकर युवाओं बुजुर्गों और महिलाओं में उत्साह का माहौल है। लोग बड़ी संख्या में मतदान कर रहे हैं। रायगढ़ लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी राधेश्याम राठिया ने मतदान किया। उन्होंने अपने माता तिलकुंवर राठिया का आशीर्वाद लेकर कतार में लगकर पत्नि निद्रावती राठिया के साथ वोट डाला। मतदान करने के बाद उन्होंने मतदान केंद्र में बने सेल्फी पॉइंट पर सेल्फी भी ली। कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल ने सुबह 8 बजे रेलडबरी 227 प्राथमिक शाला में मतदान किया। उन्होंने लोगों से मतदान करने की अपील की। साथ ही विधायक ने कहा, देश के मतदाता मोदी जी को चुनने के लिए आतुर है। कोरबा लोगसभा में सरोज पांडे चुनाव जीतकर आएंगी।

बिलासपुर लोकसभा के भाजपा प्रत्याशी तोखन साहू ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ लोरमी विधानसभा के बूथ क्रमांक 179 में मतदान किया। इस दौरान उन्होंने बिलासपुर लोकसभा सीट से 101त्न जितने का दावा भी किया है। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत में पंच से लेकर छत्तीसगढ़ शासन में विधायक और संसदीय सचिव के बाद बिलासपुर लोकसभा से बीजेपी ने उन्हें सांसद प्रत्याशी के रूप में चुना है जो उनके और उनके परिवार वालों के लिए गौरव का विषय है।

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और टीएस सिंहदेव ने डाले वोट

दुर्ग। छत्तीसगढ़ लोकसभा चुनाव के तहत तीसरे चरण की वोटिंग हुई। दुर्ग लोकसभा सीट पर आम जनता के साथ दिग्गजों ने भी वोट डाला है।दुर्ग लोकसभा के कुरुदडीह पोलिंग बूथ पर प्रदेश के पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने सपरिवार वोट डाला। पूर्व मुख्यमंत्री

भूपेश बघेल अपने परिवार के साथ अपने गृहग्राम कुरूदडीह पहुंचकर मतदान किया। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि गांव पहुंचकर लोगों से मिलने का मौका मिला है। इस लोकतंत्र के पर्व पर मतदान करने पहुंचे हैं। भीषण गर्मी में लोग घरों से निकलकर अपने मतदान का उपयोग करें।

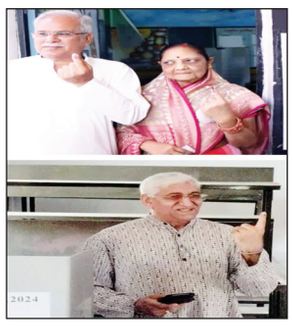

छत्तीसगढ़ में तीसरे चरण के मतदान को लेकर मतदाताओं में उत्साह देखा जा रहा है। पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने भी अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। टीएस सिंहदेव ने पोलिंग बूथ जाकर अपना वोट डाला।इस दौरान पूर्व डिप्टी सीएम ने लोगों से अपील की है कि वो भी अपने घरों से निकले और मतदान करें। सरगुजा लोकसभा सीट पर कुल 18 लाख 19 हजार 347 मतदाता हैं। इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या कुल 9 लाख 04 हजार 915 है। महिला मतदाताओं की संख्या कुल 9 लाख 14 हजार 398 है। जबकि ट्रांसजेंडर मतदाताओं की संख्या कुल 34 हैं। छत्तीसगढ़ के सरगुजा लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत तीन जिले बलरामपुर, सूरजपुर और सरगुजा आते हैं। इस लोकसभा क्षेत्र में सरगुजा संभाग के 8 विधानसभा क्षेत्र आती हैं। इनमें प्रेमनगर, भटगांव, प्रतापपुर, सामरी, रामानुजगंज, लुंड्रा, अंबिकापुर और सीतापुर विधानसभा शामिल हैं।

संक्षिप्त समाचार

राधिका खेड़ा के भाजपा जॉइन करने पर पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने साधा निशाना

रायपुर। राधिका खेड़ा के बीजेपी जॉइन करने पर छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि डील तो हुई है और कितने की डील हुई है ये राधिका खेड़ा बताएं। वहीं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कांग्रेस नेताओं को विलुप्त प्रजाति का बता दिया है। जिस पर भूपेश बघेल ने पलटवार करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री मतदाताओं को श्रद्धांजलि दे रहे हैं, बीजेपी के नेताओं का मानसिक स्थिति ठीक नहीं है।

बता दें कि कुछ दिन पहले कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता रही राधिका खेड़ा के साथ संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला के साथ बहसबाजी हुई थी। जिसके बाद सियासी गलियारे में जमकर बवाल हुआ। उसके बाद पार्टी से इस्तीफा देकर राधिका खेड़ा ने सोमवार को सुशील आनंद शुक्ला समेत कांग्रेस के अन्य नेताओं पर गंभीर आरोप लगाया था। वहीं आज राधिका भाजपा में शामिल हो गई। जिसके बाद राधिका खेड़ा पर भी कई सवाल खड़े किये जा रहे हैं।

जूनियर भारतीय हॉकी टीम में छत्तीसगढ़ की अनिशा साहू का चयन

रायपुर। हॉकी इंडिया ने सोमवार को 18 से 31 मई तक यूरो में आयोजित अंतरराष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए अंडर-21 बालिका टीम की घोषणा की जिसमें छत्तीसगढ़ की अनिशा साहू भी शामिल है। अनिशा को इस उपलब्धि के लिए छत्तीसगढ़ हॉकी संघ के पदाधिकारियों ने बधाई दी है। राजनांदगांव की अनिशा पिछले दो वर्षों से हॉकी इंडिया की कोर टीम के साथ बेंगलूरु साई सेंटर में प्रशिक्षण हासिल कर रही हैं। साई सेंटर और राष्ट्रीय स्पर्धा प्रतियोगिता में उसके उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन को देखते हुए अनिशा का चयन भारतीय टीम में किया गया है।

चेंबर अध्यक्ष अमर परवानी ने परिवार सहित किया मतदान

रायपुर। लोकतंत्र के महापर्व का उत्सव मनाते हुए छत्तीसगढ़ चेंबर आफ कामर्स के अध्यक्ष अमर परवानी ने अपने परिवार के साथ अपने मत का प्रयोग किया। पश्चात उन्होने कहा कि चुनाव का पर्व, देश का गर्व हैं। मतदान केवल हमारा अधिकार ही नहीं वरन् कर्तव्य भी हैं। उन्होने सभी नागरिकों से मतदान कर अपने मताधिकार का प्रयोग करने का अनुरोध किया। बता दें कि चेंबर आफ कामर्स ने पहले मतदान -फिर व्यापार का नारा देते हुए आज दोपहर तक कारोबार बंद रखकर मतदान को प्रोत्साहित करने की अनूठी पहल की थी जिसका काफी अच्छा प्रतिसाद देखने को मिला जब लोग अपने मताधिकार का प्रयोग करने पहुंचे।

राज्यपाल ने सपरिवार किया मतदान

रायपुर। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन अपनी पत्नि सुप्रभा हरिचंदन सहित सिविल लाइन के सिहावा भवन आदर्श मतदान केंद्र 170 में वोट डालने पहुंचे। राज्यपाल ने अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए वोट डाला। जिसके बाद राज्यपाल अपनी पत्नि के साथ सेल्फी जोन में फोटो भी खिंचवाई और मीडिया कर्मियों से मुखातिब हुए।

राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने प्रदेशवासियों को वोट करने की अपरील करते हुए कहा, वोट देना हमारा अधिकार है। इसलिए सभी से अपील है कि वोट जरूर डालें। मजबूत राष्ट्र बनाने के लिए हर किसी को वोट डालना चाहिए। सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग करके लोकतंत्र को सशक्त बनाने में अपनी भूमिका निभाए। इसलिए मेरी अपील है कि पोलिंग बूथ आए और अपने मताधिकार का प्रयोग करें और अपनी पसंद की सरकार चुने।

राज्यपाल के मतदान केंद्र पहुंचने पर वहां मौजूद लोगों अभिवादन राज्यपाल ने स्वीकार किया। जिसके बाद वे वोट डालने मतदान कक्ष में गए। इस दौरान राज्यपाल की पत्नि सुप्रभा हरिचंदन उनके साथ मौजूद रहीं।

संभागायुक्त और कलेक्टर गौरव ने सपरिवार किया मतदान

लोकसभा निर्वाचन के तहत रायपुर संभागायुक्त डॉ संजय अलंग ने आज

सपत्नीक पुरैना मतदान केंद्र पहुंच कर वोट डाला। उन्होंने पुरैना प्राथमिक शाला भवन में स्थापित मतदान केंद्र में सुबह सबसे पहले पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस दौरान डॉ अलंग की पत्नी सुमिता अलंग ने भी वोट मतदान किया। संभागायुक्त ने मतदान के बाद सेल्फ़ीज़ोन में सपत्नीक फोटो भी ली।

डॉ अलंग ने सभी मतदाताओं से मतदान की अपील भी की है। उन्होंने मतदान केंद्र पर लोगों से बात की और केंद्र पर उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। मतदान करने आये लोगों ने छाया, पानी, दिव्यांग मतदाताओं के लिए व्हील चेयर, मतदाताओं को बैठने की व्यवस्था की सराहना संभागायुक्त से की।

रायपुर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने बीपी पुजारी स्कूल में पहुंचे और सबसे पहले मतदान किया। साथ में उनकी पत्नी डॉ. सुनीता सिंह ने भी अपने मताधिकार का इस्तेमाल करते हुए मतदान किया। उन्होंने कलेक्ट्रेट परिसर स्थित पोल डे कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारी और कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

देवेंद्र नगर ऑफिसर्स कॉलोनी के आदर्श मतदान केंद्र क्रमांक 52 में सचिव डॉक्टर एस भारती दासन ने अपनी पत्नी मेनका के साथ के मतदान किया। सचिव अविनाश चंपावत ने भी उनकी पत्नी नेहा चम्पावत के साथ देवेन्द्र नगर आफिसर्स कॉलोनी स्थित आदर्श मतदान केन्द्र क्रमांक 52 में मतदान किया। सचिव सिद्धार्थ कोमल परदेशी ने सपरिवार अपने मताधिकार का प्रयोग किया। उन्होंने सभी मतदाताओं से अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील की।

हाईकोर्ट के न्यायाधीशों ने भी परिवार के साथ किया मतदान

बिलासपुर। लोकसभा के तीसरे चरण के चुनाव में न्यायपालिका से जुड़े लोग भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। इस कड़ी में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीशों ने भी सपरिवार मतदान किया।

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के जस्टिस राकेश मोहन पांडेय ने सपरिवार बिलासपुर विधानसभा क्षेत्र के मतदान केंद्र क्रमांक 38 गुरु तेग बहादुर स्कूल 27 खोली में मतदान किया। मतदान के बाद जस्टिस पांडेय ने फोटो शेयर किया।

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के सीनियर जस्टिस गौतम भादुड़ी ने भी सपत्नीक बिलासपुर विधानसभा के मतदान केंद्र क्रमांक 71 शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा कॉलेज में मतदान किया।

उच्च न्यायालय के जस्टिस संजय के। अग्रवाल ने पत्नी और बेटे के साथ बेलतरा विधानसभा के मतदान केंद्र क्रमांक 170 साइंस कॉलेज सरकंडा में मतदान किया। उच्च न्यायालय के जस्टिस पार्थ प्रतीम साहू ने परिवार के साथ बिलासपुर विधानसभा के मतदान केंद्र क्रमांक 37 कोल इंडिया कार्यालय 27 खोली में मतदान किया।

रेणु और अमित जोगी ने टॉर्च की रोशनी में किया मतदान

गौरेला पेण्ड्रा मरवाही। छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण का मतदान जारी है। जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जोगी) की राष्ट्रीय अध्यक्ष रेणु जोगी और प्रदेश अध्यक्ष अमित जोगी ने मोबाइल टॉच की रोशनी में मतदान किया। गौरेला के सार बहरा मतदान केंद्र में बिजली गुल होने के कारण मोबाइल टॉच की रोशनी में मतदान कराना पड़ा। इस दौरान अमित जोगी ने कहा, फिलहाल सक्रिय राजनीति से दूर हूं। कुछ समय बाद किसी नतीजे पर कह सकूंगा। वहीं उनकी मां रेणु जोगी ने कहा कि मैं क्षेत्र की बहू हूं। यही की निवासी हूं। मैं यहां के लोगों की सेवा करती रहूंगी।

भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन ने सपरिवार किया मतदान

रायपुर। रायपुर लोकसभा सीट के भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल अपने पिता, धर्मपत्नी, भाई के साथ दुर्गा कॉलेज पोलिंग बूथ पहुंचे और बारी-बारी से मतदान किया। इससे पहले श्री अग्रवाल परिवार के साथ बुढ़ापारा स्थित हनुमान मंदिर पहुंचे यहां पूजा अर्चना कर मतदान करने के लिए निकल गए।

दिग्गजों ने डाले वोट, 'छोड़ो सारे काम करो मतदान' का दिया संदेश

रायपुर। छत्तीसगढ़ लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए मंगलवार को मतदान हुआ। आम मतदाताओं के साथ ही वीआईपी मतदाता भी लगातार मतदान केंद्रों में पहुंचकर मतदान किए। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी रीना बाबासाहेब कंगाले ने रायपुर के धरमपुरा पूर्व माध्यमिक शाला मतदान केंद्र में मतदान किया। कंगाले और उनकी मां अनिता बाबासाहेब कंगाले ने आम मतदाताओं की तरह ही लाइन में लगकर वोटिंग की। कंगाले मतदान शुरु होने से 15 मिनट पहले ही मतदान केंद्र पहुंची थी।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कंगाले ने मतदान केंद्र में मतदाताओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का जायजा लिया। धरमपुरा पूर्व माध्यमिक शाला परिसर में दो मतदान केंद्र बनाए गए हैं। कंगाले ने इस दौरान लोगों से अपने परिवार के सभी मतदाताओं सहित मतदान अवश्य करने की अपील की। मतदाताओं की सक्रिय भागीदारी के लिए छोड़कर सारे काम सबसे पहले करें मतदान का संदेश दिया।

छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने परिवार सहित मतदान किया। बिलासपुर के शेफर स्कूल मतदान केंद्र में अरुण साव ने वोट डाला। इस दौरान अरुण साव ने प्रदेश की सभी 11 लोकसभा सीट बीजेपी के खाते में आने का दावा किया है। उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि जिस तरह का माहौल पूरे देश में है इससे पहले ही अंदाजा लगाया

जा रहा है कि एक बार फिर नरेंद्र मोदी की सरकार बनने वाली है।

डिप्टी सीएम अरुण साव ने कहा देश के भविष्य और विकास के लिए अब तक के 10 सालों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जितना काम किया है उतना काम 70 सालों में नहीं हुआ है। यही कारण है कि प्रदेश सहित देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लहर है और इसी लहर से बीजेपी 400 सीट पाने में कामयाब होगी। उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने दावा किया है कि जिस तरह से देश में लोग बीजेपी को मतदान करने बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं इसी तरह प्रदेश में वोट करने प्रदेश की जनता घर से निकल रही है और वह बीजेपी को वोट कर रही है।

ओपी चौधरी ने सोशल मीडिया पर मतदान के बाद लिखा कि आपका वोट आपकी ताकत।।एक वोट के कारण ही अटल जी की सरकार गिरी थी, यह है आपके एक वोट की ताकत, इस एक वोट की बहुत बड़ी कीमत होती है। दुनिया में लगभग 100 से अधिक देशों में वोट देने का अधिकार नहीं हैं, यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है कि एक-एक वोट बहुत जरूरी है। आपका एक वोट मोदी जी को तीसरी बार लाने में सहयोगी होगा। यह राष्ट्रीय चुनाव है, राष्ट्र को विकसित करने का चुनाव है।

बात करें कोरबा लोकसभा की तो प्रदेश के मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल का अलग अंदाज देखने को मिला। मत्री श्यामबिहारी जायसवाल अपनी पत्नी के साथ स्कूटी में सवार होकर मतदान स्थल तक पहुंचे।इस दौरान मंत्री ने अनिवार्य रूप से मतदान का संदेश भी दिया। आपको बता दें कि लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण का मतदान हो रहा है।जिसमें देश के 11 राज्य की 93 सीटों पर वोटिंग हो रही है। थर्ड फेस में गुजरात की सबसे ज्यादा 25 सीटों के लिए मतदान हो रहा है।वहीं छत्तीसगढ़ की बात करें तो पहले दो चरणों में 4 लोकसभा सीटों बस्तर, राजनांदगांव,कांकेर और महासमुंद के लिए वोटिंग हो चुकी है। वहीं अब 7 लोकसभा सीट रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, रायगढ़, सरगुजा, जांजगीर-चाम्पा और कोरबा में मतदान हो रहा हैं। इन सभी सात सीटों पर कुल 168 उम्मीदवार मैदान में हैं।

रायपुर में पहले मतदान, फिर जलपान की सोच के साथ वोटिंग, महिलाओं और युवाओं में दिखा उत्साह

रायपुर। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए मंगलवार को रायपुर में सुबह 7: 00 बजे से मतदान शुरू हो गया था। रायपुर में मतदान केंद्र पर सुबह से लंबी-लंबी कतार देखने को मिल रही है। बीटीआई ग्राउंड स्थित मतदान केंद्र में बड़े, बुजुर्ग, महिला लाइन लगाकर मतदान कर रहे हैं। मतदाताओं में काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। मतदाताओं का कहना है कि आज लोकतंत्र के इस महापर्व में शामिल होकर उन्हें अच्छा लग रहा है। वे चाहते हैं कि देश मे ऐसी सरकार बने, जो देश हित में काम करें। देश में भ्रष्टाचार ना हो, सभी को एक समान समझते हुए काम करें। वहीं फर्स्ट टाइम वोटर का कहना है कि सरकार को शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में भी बेहतर काम करना चाहिए। वहीं कुछ महिला ऐसी भी है, जो पहले मतदान करने आई, उसके बाद घर जाकर खाना बनाने की बात कर रही थी। उनका कहना है- पहले मतदान, फिर जलपान इस मतदान केंद्र में कुछ बच्चे भी मतदान कैसे होता है, देखने पहुंचे थे। वह भी काफी उत्साहित थे। उन्हें यह नहीं पता है कि मतदान क्या होता है, लेकिन इस लोकतंत्र के पर्व में वे भी भागीदारी निभाते हुए अपने माता-पिता या परिजनों के साथ मतदान केंद्र पहुंचे थे। रायपुर के मतदान केंद्रों में मतदाताओं की सुविधा के लिए पर्याप्त व्यवस्था बनाई गई है। पीने का पानी, पंखा-कूलर, पर्याप्त लाइट की व्यवस्था की गई है। दिव्यांगों के लिए व्हीलचेयर की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था भी मतदान केंद्र में की गई है। सुरक्षा के पर्याप्त व्यवस्था के लिए मतदान केंद्रों में जवानों को तैनात किया गया है।

चुनाव आयोग का कर्तव्य है लोकतंत्र की रक्षा

प्रभु चावला

साम्राज्य और सम्राट आते-जाते रहते हैं, पर कुछ संस्थाएं अमर्त्य होती हैं। रोमन साम्राज्य 476 ईस्वी में खत्म हो गया, पर पैक्स रोमाना आधुनिक न्याय का आधार बना। साल 1216 में सम्राट जॉन की मौत हो गयी, पर मैग्ना कार्टा ने लोकतंत्र की नींव रखी। प्रभारी व्यक्ति मरणशील होते हैं। जब तक उनके हाथ में चाबी होती है, वे अपने कृत्यों से भरोसेमंद संस्थाओं की छवि बेहतर कर सकते हैं या बिगाड़ सकते हैं। बीते कुछ सप्ताह से भारत के चुनाव आयोग का व्यवहार ऐसे ही क्षरण का उदाहरण हैं। आयोग पर फैसले में देरी, आंकड़ों के मामले में पारदर्शिता की कमी और सही शिकायतों, खासकर विपक्ष की, की अनदेखी के आरोप लगाये जा रहे हैं। पिछले हफ्ते 11 दिन के बाद मतदान के आंकड़े जारी करने को लेकर उसकी तीखी आलोचना हुई। जारी आंकड़े भी अधूरे हैं तथा संदेहास्पद रूप से चुनाव के तुरंत बाद आयोग के बताये आंकड़ों से बहुत अलग हैं। अतीत में भी ऐसी देर होने के उदाहरण हैं, पर इस बार तौर-तरीका ठीक नहीं था। आज के डिजिटल युग में चुनाव आयोग की धीमी गति को कोई स्वीकार नहीं कर सकता है। तमाम संसाधनों के बावजूद आयोग ने सात चरणों का चुनाव कार्यक्रम बनाया, जबकि उसे आसन्न लू की जानकारी थी। कभी वह दौर भी था, तब इतना बड़ा चुनाव कराने के लिए दुनियाभर में आयोग की प्रशंसा होती थी। सत्तर के दशक को छोड़कर भारत में चुनाव आम तौर पर स्वच्छ एवं शांतिपूर्ण रहे हैं। आयोग को राजनीतिक नाराजगी का सामना करना पड़ता था, पर सभी उम्मीदवार उसके परिणाम को मानते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब प्रतिद्वंद्वियों से कहीं ज्यादा आयोग उनके निशाने पर है। यह धारणा उसकी दुश्मन बन गयी है कि आयोग को एक खास दल द्वारा संचालित एवं निर्देशित किया जा रहा है। आयोग बड़ी मात्रा में नगदी और नशीले पदार्थों की बरामदगी के लिए अपने को शाबाशी दे रहा है, लेकिन चुनाव कार्यक्रम बनाने और आचार संहिता का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाई न करने जैसी बातें संदिग्ध ही कही जायेंगी। तीनों चुनाव आयुक्तों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा रहा है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार वित्त सचिव रह चुके हैं। उन्हें बैंकिंग क्षेत्र का कायापलट करने तथा प्रभावी वित्तीय सुधारों को लाने का श्रेय जाता है। दो आयुक्त वर्तमान सरकार की इंफ्रास्ट्रक्चर पहलों तथा गृह मंत्री से संबद्ध रहे हैं। लेकिन जिस तरह से और जल्दबाजी में उन्हें नियुक्त किया गया, उससे बड़े विवाद पैदा हुए। चुनाव आयोग उन कुछ नौकरशाहों के लिए सेवानिवृत्ति के बाद के लिए अच्छा अवसर बन गया है, जिनकी मुख्य योग्यता सत्ता प्रतिष्ठान से निकटता है। उनकी गुणात्मक उपलब्धियां अब नियम नहीं, अपवाद बन गयी हैं। आयोग का प्रारंभ एक उच्च नैतिक स्तर के साथ हुआ था, जब पहला लोकसभा चुनाव कराने के लिए प्रतिष्ठित सिविल सेवा अधिकारी सुकुमार सेन को नियुक्त किया गया था। उन्होंने दूसरा आम चुनाव भी कराया था। अब तक 24 मुख्य चुनाव आयुक्त हो चुके हैं। जब से मेधा पर राजनीति हावी हुई, तब से आयोग की छवि धूमिल होने लगी। मसलन, नवंबर, 1990 में वीपी सिंह की सरकार गिरने के बाद आंध्र प्रदेश की एक वकील वीएस रमादेवी को पहली महिला मुख्य चुनाव आयुक्त के तौर पर नियुक्त किया गया। दो हफ्ते बाद ही उनकी जगह टीएन शेषण की नियुक्ति हो गयी। उन्होंने नियमों के उल्लंघनों के विरुद्ध जो कड़ी कार्रवाई की, उससे संस्था का राजनीतिकरण हुआ। शेषण ने उम्मीदवारों पर तमाम वैध पाबंदियों को लगा दिया। मुख्य चुनाव आयुक्त की शक्तियों को नियंत्रित करने की मांग के साथ सरकार सर्वोच्च न्यायालय पहुंच गयी। तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने आयोग को तीन-सदस्यीय बना दिया और सभी की शक्तियां बराबर कर दी गयीं। पर वे बहुमत के अभाव में मुख्य आयुक्त को हटाने के नियम में बदलाव नहीं कर सके। मुख्य आयुक्त को केवल संसद द्वारा हटाया जा सकता है, जबकि आयुक्तों को हटाने की सिफारिश राष्ट्रपति से करने का अधिकार मुख्य आयुक्त को है। ऐसे में आयुक्तों के दबाव में आने की आशंका रहती है। तीन सदस्य होने से उनके बीच आंतरिक संघर्ष को बढ़ावा मिला। उदाहरण के लिए, जनवरी 2009 में मुख्य आयुक्त एन गोपालस्वामी ने अपने सहकर्मी नवीन चावला को हटाने के लिए राष्ट्रपति को लिख दिया। उन्होंने चावला पर कांग्रेस को खुलकर समर्थन देने का आरोप लगाया था। गोपालस्वामी वाजपेयी सरकार के दौरान गृह सचिव रह

कांग्रेस की दिशाहीनता

ललित गर्ग

कांग्रेस अनेकों विरोधाभासों एवं विसंगतियों से भरी है। चुनाव प्रचार हो या उम्मीदवारों का चयन, राजनीतिक वायदें हो या चुनावी मुद्दें हर तरफ कांग्रेस कई विरोधाभासों से घिरी है। उसकी सारी नीतियों में, सारे निर्णयों में, व्यवहार में, कथन में विरोधाभास स्पष्ट परिलक्षित है। यही कारण है कि उसकी राजनीति में सत्य खोजने से भी नहीं मिलता।

लोकसभा के चुनाव उग्र से उग्रतर होते जा रहे हैं, लोकतंत्र के महायज्ञ की 7 मई को आधी से ज्यादा आहुति पूरी हो गई है, पहले चरण में 102 और दूसरे चरण में 88 सीटों पर मतदान हो चुका है। तीसरे चरण में 94 सीटों पर मतदान मंगलवार को हुआ। इसके बाद 543 में से आधे से अधिक यानी 284 सीटों पर मतदान पूर्ण हो जाएगा। जैसे-जैसे चुनाव आगे बढ़ रहे हैं, कांग्रेस की मुश्किलें बढ़ती जा रही है। भाजपा की ओर रुख करते नेताओं ने कांग्रेस की नींद उड़ा कर रख दी है। यह सिलसिला आगे भी जारी रहने वाला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर आक्रामक, तीक्ष्ण एवं तीखे आरोप लगाने वाली कांग्रेस पार्टी में लगातार हो रही टूट एवं पार्टी छोड़ने के कांग्रेसी नेताओं के सिलसिले को रोक नहीं पा रही है। इस बड़े संकट से बाहर निकलने का रास्ता कांग्रेस को नहीं सूझ रहा है। कांग्रेस के लिए लोकसभा चुनाव के दौरान सबसे बड़ा झटका इंदौर में लगा, जहां से पार्टी के उम्मीदवार अक्षय कांति बम ने नामांकन वापसी के अंतिम दिन मैदान ही छोड़ दिया और वो भाजपा में शामिल हो गए। इससे पहले विपक्षी दलों का गठबंधन 'इंडिया' को खजुराहो में झटका लगा था, जहां आपसी समझौते के चलते यह सीट समाजवादी पार्टी को दी गई थी। समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार मीरा दीपक यादव का पर्चा निरस्त हो गया। इस तरह राज्य की 29 लोकसभा सीटों में से दो-खजुराहो और इंदौर ऐसी है जहां से कांग्रेस मुकाबले में ही नहीं है। कांग्रेस प्रवक्ता राधिका खेड़ा एवं दिल्ली के कांग्रेसी नेता अरविन्द सिंह लवली ने 'नाइंसाफी' के कारण पार्टी से इस्तीफा दिया है। लवली तो अपने अन्य साथियों के साथ भाजपा में शामिल हो गये हैं। पुरी से कांग्रेस प्रत्याशी सुचारिता महंती ने यह कहते हुए टिकट लौटा दिया कि पार्टी चुनाव लड़ने के लिए धन नहीं दे रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि उनके क्षेत्र में ओडिशा विधानसभा चुनावों के लिए कमजोर उम्मीदवार उतारे गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व में राजनीतिक अपरिपक्वता, दिशाहीनता एवं निर्णय-क्षमता का अभाव है। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कांग्रेस कई राज्यों में बेमन से चुनाव लड़ रही है।

आज के परिदृश्यों में कांग्रेस अनेकों विरोधाभासों एवं विसंगतियों से भरी है। चुनाव प्रचार हो या उम्मीदवारों का चयन, राजनीतिक वायदें हो या चुनावी मुद्दें हर तरफ कांग्रेस कई विरोधाभासों से घिरी है। उसकी सारी नीतियों में, सारे निर्णयों में, व्यवहार में, कथन में विरोधाभास स्पष्ट परिलक्षित है। यही कारण है कि उसकी राजनीति में सत्य खोजने से भी नहीं मिलता। उसका व्यवहार दोगला हो गया है। दोहरे मापदण्ड अपनाने से उसकी हर नीति, हर निर्णय समाधानों से ज्यादा समस्याएं पैदा कर रही हैं। यही कारण है कि कांग्रेस नेताओं के पार्टी छोड़ने या फिर चुनाव लड़ने से इन्कार करने का सिलसिला खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। यह निर्णय क्षमता का अभाव ही है या हार का डर कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी ने क्रमशः अमेठी और रायबरेली से चुनाव लड़ने का निर्णय लेने में बड़ी कोताही बनती है। अब राहुल ने अमेठी में स्मृति ईरानी का सामना करने में स्वयं को अक्षम पाया तो रायबरेली से नामांकन पत्र दाखिल कर दिया और प्रियंका एक बार फिर चुनाव लड़ने से दूर ठिठक गईं। राहुल गांधी का अमेठी के बजाय रायबरेली से चुनाव लड़ना भी कांग्रेस की दिशाहीनता का सूचक है। यह हास्यास्पद है कि गांधी परिवार के करीबी एवं चाटुकार कांग्रेस नेता राहुल के अमेठी से चुनाव न लड़ने के फैसले को यह कहकर बड़ी राजनीति जीत बता रहे हैं कि पार्टी ने स्मृति इरानी का महत्व कम कर दिया। क्या सच यह नहीं कि कांग्रेस ने अमेठी से स्मृति इरानी की जीत सुनिश्चित करने का काम किया है?

राहुल गांधी का दो-दो सीटों से का चुनाव लड़ना भी यह दर्शाता है कि दोनों में से एक सीट पर तो वे जीत हासिल कर ही लेंगे। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 का सेक्शन 33 प्रत्याशियों को अधिकतम दो सीटों से चुनाव लड़ने की अनुमति भी देता है। देश में लोकतंत्र की जड़ें लगातार मजबूत हो रही हैं। ऐसे में नेताओं के एक से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने को लेकर विसंगतियां भी सामने आ रही हैं। विमर्श इस बात पर हो रहा है कि जब एक व्यक्ति को एक वोट का अधिकार है तो प्रत्याशी को दो सीटों पर चुनाव लड़ने की अनुमति क्यों होनी चाहिए? नेता अपने राजनीतिक हितों के लिए एक साथ दो सीटों पर चुनाव लड़ते हैं और दोनों सीटों पर चुनाव जीतने की स्थिति में अपनी सुविधानुसार एक सीट से इस्तीफा दे देते हैं। कानूनी रूप से उनके लिए ऐसा करना जरूरी भी है। फिर उस सीट पर उपचुनाव होता है। इसमें न सिर्फ करदाताओं का पैसा खर्च होता है बल्कि उस क्षेत्र के मतदाता भी ठगा हुआ महसूस करते हैं। इस बात की पड़ताल जरूरी है कि दो सीटों से चुनाव लड़कर राहुल गांधी भारतीय लोकतंत्र को मजबूत कर रहे हैं या इस व्यवस्था से सिर्फ अपने राजनीतिक हित साध रहे हैं?

भले ही राहुल गांधी चुनाव प्रचार के दौरान बेहद आक्रामक दिख रहे हों, लेकिन वह अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं में जोश नहीं भर पा रहे हैं। इसका एक कारण गठबंधन के नाम पर अपने पुराने मजबूत गढ़ों में भी अपनी राजनीतिक जमीन छोड़ना है। यह कांग्रेस ही लगातार कमजोर होती राजनीति ही है कि वह जीत की संभावना वाली सीटों को भी महागठबंधन के अन्य दलों को दे रही है। ऐसे ही निर्णयों के चलते कांग्रेसजनों के लिए भी यह समझना कठिन है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी से समझौता करने से पार्टी को क्या हासिल होने वाला है? इस बार गांधी परिवार दिल्ली में उस आम आदमी पार्टी के प्रत्याशियों को बोट देगा, जिसने उसे रसातल में पहुंचाया। इस तरह के मामले केवल यही नहीं बताते कि कांग्रेस उपयुक्त प्रत्याशियों का चयन करने में नाकाम है, बल्कि यह भी इंगित करते हैं कि उसके पास अपनी खोई हुई जमीन वापस पाने और अपने कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार करने की कोई ठोस रणनीति नहीं है।

कांग्रेस की नीति एवं नियत भी संदेह के घेरों में हैं। क्या कारण है कि पड़ोसी देश पाकिस्तान के नेता अब दुआ कर रहे हैं कि कांग्रेस का 'शहजादा' भारत का प्रधानमंत्री बने। दुश्मन राष्ट्र के नेता अगर किसी व्यक्ति या नेता के प्रधानमंत्री बनने की कामना करते हैं तो निश्चित ही उस देश का हित जुड़ा होता है। पड़ोसी देश भले ही राहुल गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहता हो लेकिन भारत की जनता अपने हितों की रक्षा करते हुए विवेकपूर्ण मतदान के लिये तत्पर है। भारत मजबूत प्रधानमंत्री वाला मजबूत देश चाहता है। नए भारत के 'सर्जिकल और एयर स्ट्राइक' ने उस पाकिस्तान को हिलाकर रख दिया था जिसे कांग्रेस शासन के दौरान भारत पर आतंकी हमलों का समर्थन करने के लिए जाना जाता था। कांग्रेस ने बहुसंख्यक समुदाय की भावनाओं को नजरअंदाज करते हुए मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति की है, उसी का परिणाम है कि जिसने 500 वर्षों तक पीढ़ियों के संघर्ष के बाद बने प्रभु श्रीराम मंदिर के उद्घाटन समारोह एवं मन्दिर से कांग्रेस दूरी बनाये रखी है। जम्मू और कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के निर्णय का भी विरोध किया है, जबकि अब वहां आतंकवाद खत्म होकर शांति, अमन एवं विकास की गंगा प्रवहमान है। जनता ही नहीं, कांग्रेस के नेता भी कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की इन विसंगतियों एवं विडम्बनाओं को समझ रहे हैं और पार्टी से पलायन कर रहे हैं। मुगलों व अंग्रेजों की भाषा बोल रहे व हिंदू जनमानस व हिंदू संस्कृति के विरुद्ध जहर उगल रहे राहुल गांधी को पिछले दो लोकसभा चुनाव की तरह आगामी लोकसभा चुनाव में जनता क्या जबाव देती, यह भविष्य के गर्भ में हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

योगकुण्डल्युपनिषद् (भाग-14)

गतांक से आगे...

ऐसे कई योग्य साधक होते हैं, जो मंथन के बिना ही खेचरी सिद्ध कर लेते हैं, परन्तु जिन्होंने खेचरी मंत्र सिद्ध कर लिया है, वे ही मन्थन के बिना सिद्ध कर पाते हैं (अन्य नहीं)।

जप और मंथन दोनों करने से जल्दी लाभ मिलता है। मंथन हेतु लोहा, चाँदी या स्वर्ण की शलाका के एक सिरे पर दुग्ध लगा हुआ तन्तु लगाए, पुनः उसे नाक में डाल कर सुखासन में बैठ कर प्राण को हृदय में निरोध करके नेत्रों से भौंहों के मध्य देखते हुए उसी शलाका से मंथन करे। इस प्रकार छः मास तक मंथन करने पर इसका प्रभाव दिखलाई देने लगता है।

उस समय साधक की अवस्था सोते हुए बालक की तरह होती है। इस मन्थन को मास में एक बार करे, नित्य न करे। जिह्वा को भी ब्रह्मरन्ध्र में बार-बार प्रविष्ट करे। द्वादश वर्ष तक इसी तरह अभ्यास करने से सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

अभ्यास की इस अवस्था में योगी अपने अन्तर में पूरे विश्व का दर्शन कर लेता है; क्योंकि जिह्वा के ब्रह्म विवर में जाने वाले मार्ग में ही ब्रह्माण्ड की स्थिति है।

ब्रह्माजी ने कहा! खेचरी का मेलन मंत्र ह्रीं भं सं मं पं संक्ष है। हे शंकर जी! कृपा करके आप हमें यह बतायें कि साधक के लिए अमावस्या, प्रतिपदा एवं पूर्णमासी का क्या अभिप्राय है? (आत्मदर्शन के समय साधक की दृष्टि का वर्णन) आत्मानुसंधान की साधना के प्रथम चरण में साधक की दृष्टि एवं स्थिति प्रकाशरहित अमावस्या की, द्वितीय चरण में प्रतिपदा (अल्प प्रकाश की) तथा तृतीय चरण में पूर्णिमा (पूर्ण प्रकाश) की होती है। वही कल्याण की स्थिति है जब मनुष्य कामनाबद्ध होकर विषयों की ओर दौड़ता है, उस समय विषयों को प्राप्त करते हुए कामनाएँ बढ़ती जाती हैं।

क्रमशः ...

अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रॉस दिवस

प्रियंका सिंह

रेडक्रॉस एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, जो लोगों को हेल्थ के प्रति जागरूक करने के अलावा आकस्मिक दुर्घटनाओं में घायलों, रोगियों, आपातकाल और युद्धकालीन बंदियों की देख-रेख करती है। रेडक्रॉस की स्थापना साल 1863 में हुई थी, जिसका मुख्यालय जेनेवा में है। रेडक्रॉस की स्थापना मानवता प्रेमी जीन हेनरी ड्यूनेंट द्वारा की गई थी, इसलिए उनके जन्मदिन के अवसर पर ही हर साल दुनियाभर में 8 मई का दिन अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रॉस दिवस के रूप में मनाया जाता है और संस्था की गतिविधियों से आम आदमी को अवगत कराने के प्रयास किए जाते हैं।

डयूनेंट ने इटली में युद्ध के दौरान रक्तपात का ऐसा मंजर देखा था, जब चिकित्सीय सहायता के अभाव में युद्धक्षेत्र में अनेक घायल सैनिक दर्द से तड़प रहे थे। ऐसे घायलों की सहायता के लिए उन्होंने स्थाई समितियों के निर्माण को लेकर आवाज बुलंद की, जिसका असर भी दिखा। युद्ध में घायलों की स्थिति में सुधार के साधनों का अध्ययन करने के लिए उसके बाद एक आयोग का गठन किया गया। जिसके सदस्य जनरल डूफोर, स्विस सेना के सेनापति गस्टवे मोइनिए, हेनरी डयूनेंट, डॉ. लुई एपिया और डॉ. थियोडोर मोनोई थे। 26 से 29 अक्टूबर 1863 तक जेनेवा में एक अंतर्राष्ट्रीय बैठक हुई, जिसमें रेडक्रॉस के आधारभूत सिद्धांत निर्धारित किए गए और रेडक्रॉस आंदोलन का विकास करते हुए आहत सैनिकों और युद्ध पीड़ितों की सहायता संगठित करने के लिए दुनियाभर के सभी देशों में राष्ट्रीय समितियां बनाने पर जोर दिया गया। मानव सेवा के लिए हेनरी डयूनेंट को साल 1901 में पहला नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया। मानवीय सेवा को समर्पित रेडक्रॉस के उल्लेखनीय कार्यों की बदौलत इस संस्था को भी साल 1917, 1944 और 1963 में शांति के नोबेल पुरस्कार से नवाजा जा चुका है।

शुरुआती दौर में रेडक्रॉस की भूमिका युद्ध के दौरान बीमार और घायल सैनिकों, युद्ध करने वालों और युद्धबंदियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना और उन्हें उचित उपचार सुविधाएं उपलब्ध कराने तक ही सीमित थी, लेकिन अब इस संस्था के दायित्वों का दायरा लगातार बढ़ रहा है। दुनिया के किसी भी भाग में भूकंप, बाढ़, भूस्खलन व अन्य किसी प्रकार की प्राकृतिक या मानवीय आपदा आती है, तो सबसे पहले रेडक्रॉस सोसाइटी की टीमें वहां पहुंचकर राहत कार्यों में जुट जाती हैं। रेडक्रॉस की पहल पर दुनिया का पहला ब्लड बैंड अमेरिका में 1937 में स्थापित हुआ था और वर्तमान में दुनियाभर के अधिकांश ब्लड बैंकों की देखरेख रेडक्रॉस और उसकी सहयोगी संस्थाओं द्वारा की जाती है। जेनेवा में 8 मई 1928 को जन्मे डयूनेंट एक स्विस व्यापारी और समाजसेवक थे, जो 1859 में हुई सालफिरोनो (इटली) की लड़ाई में घायल सैनिकों की दुर्दशा देख बहुत आहत हुए क्योंकि युद्धभूमि में पड़े इन घायल सैनिकों के उपचार के लिए कोई चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी।

अस्तित्व बचाने के संकट से जूझती कम्युनिस्ट पार्टियां

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

देश की कम्युनिस्ट पार्टियों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। साल 2004 कम्युनिस्ट पार्टियों के उम्थान का काल कहा जाए तो उसके बाद वाम दलों का लोकसभा में प्रतिनिधित्व लगातार कम ही होता जा रहा है। अब 18 वीं लोकसभा के चुनावों में वामदलों के सामने अपने अस्तित्व को बचायें रखने का संकट खड़ा हो गया है। आजादी से पहले और उसके बाद के दौर में एक समय था जब वामदलों की पूरे देष में तूती बोलती थी। सरकार भले ही कम ही राज्यों में रही हो पर वामदल और उसके अनुसंघी संगठन चाहे वह स्टूडेंट फैडरेशन हो या मजदूर संगठन या लेखक संघ सभी की अपनी पहचान और फोलोवर्स रहे हैं। पर समय का बदलाव देखिये कि आज वामदलों के सामने पहचान बनाये रखने का संकट खड़ा हो गया है। प. बंगाल में तो वामदलों तीन दशक से भी अधिक समय तक एक सत्र राज किया, वहीं त्रिपुरा, केरल में भी वामदलों की सरकार रही है। पर 2019 के लोकसभा के चुनाव आते-आते तो हालात यह हो गई कि वामदलों के गढ़ प. बंगाल में तो वामदलों को एक भी सीट नहीं मिली, वहीं त्रिपुरा में भी खाता खोलने में विफल रही। दरअसल समय की मांग को समझना और उसके अनुसार समयानुकूल बदलाव करना अपने आप में बड़ी बात होती है। जनभावना को भी समझना जरुरी हो जाता है। केवल विचारधारा और एग्रेसिव होने से काम नहीं चल सकता। फिर अपने अपने अहम् के चलते समय पर सही निर्णय नहीं लेने का परिणाम देर सबेर भुगतना पड़ता है। ज्योति बसु के पास तीन बार प्रधानमंत्री बनने के अवसर आये पर पोलिट ब्यूरों ने उन्हें प्रधानमंत्री बनाने पर सहमति नहीं दी। कल्पना कीजिए कि ज्योति बसु तीन में से किसी एक अवसर पर प्रधानमंत्री बनते तो उसका लाभ अंततोगत्वा वामदलों को ही मिलता पर आपसी

मतभेदों या मनभेदों के चलते सही विकल्प नहीं चुनने का परिणाम आज सामने हैं।

गत 2019 के लोकसभा चुनावों की ही बात की जाएं तो वामदलों को लोकसभा के लिए छह सीटे मिली हैं। इसमें भी एक समय कम्युनिस्टों के गढ़ रहे प. बंगाल और त्रिपुरा में तो वामदलों का खाता भी नहीं खुल सका। तमिलनाडु में गठबंधन के सहारे माकपा और भाकपा को दो-दो सीटे मिल गई वहीं केरल में माकपा और आरएसपी एक-एक सीटें जीतने में सफल हो सकी। जैसे तैसे केवल माकपा राष्ट्रीय दल के रुप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। यह भी कोई ज्यादा पुरानी बात नहीं है कि लोकसभा के इससे पहले के तीन चुनावों के पहले 2004 के चुनावों में वामदलों के पास 59 सीटें थी। हालात यह थे कि कांग्रेस-भाजपा के बाद लोकसभा की तीसरी बड़ी ताकत वामदल थे। कांग्रेस के साथ गठबंधन कर वामदल सरकार में भी शामिल हुए। लोकसभा स्पीकर का पद भी वामदलों के पास ही गया। देखा जाए तो न्यूनतम साझा कार्यक्रम के तहत सरकार भी ठीक ही चली पर परमाणु समझौते के चलते बाद में वामदल सरकार से बाहर हो गए। ममता के चलते प. बंगाल में वामदल लगभग अप्रासंगिक होता जा रहा है और प. बंगाल में वामदल के स्थान पर भारतीय जनता पार्टी उभर रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि वायनाड़ से राहुल गांधी का चुनाव लडना भी वामदल को हानि पहुंचाने वाला ही रहा है। खैर यह अलग विचारणीय प्रश्न हो जाता है। एक समय था जब ज्योति बसु को केन्द्र की राजनीति में लाने के प्रयास हुए पर आपसी मतभेदों के चलते वामदलों ने इसे सिरे से चढ़ने ही नहीं दिया। वामदलों की अस्तित्व के संकट को यों भी समझा जा सकता है कि किसी समय विपक्षी दलों में वामदलों की तूती बोलती थी आज कोई बड़ा नाम सामने नहीं आ पा रहा है। प्रकाश करात या सीताराम येचुरी आदि के नाम यदा कदा ही सामने आ पाते हैं। एक समय था जब सोम दा, इन्द्र जीत गुप्त, एबी वर्द्धन, ज्योति बसु और उससे पहले की भारतीय राजनीति पर दृष्टिगोचर किया जाए तो पी. सुन्दरैया, सी. राजेश्वर राव, ईएमएस नंबुदरीपाद, एके गोपालन, बीटी रणदीव जैसे अनेक नाम थे जिनका भारतीय राजनीति में अपनी अलग हैसियत और पहचान रही।

वामदलों की चुनावों में सूखा 2009 के चुनावों से लगातार बढ़ता गया है। 2004 में जहां 59 सीटे थी जो 2009 में कम होकर 24 रह गई, 2014 के चुनावों में उसकी भी आधी यानी 12 और 2019 के चुनावों में उसकी आधी यानी कि 6 रह गई। अब 2024 के लोकसभा के चुनावों में वामदलों के सामने अपनी पहचान बनाये रखने का संकट आ गया है। प. बंगाल, त्रिपुरा से कोई खास लगता नहीं हैं, केरल में भी हालात ज्यादा नहीं बदले हैं।

दरअसल वामदलों के हाशिये में जाने के अन्य कारणों के साथ ही ममता का प. बंगाल में पकड़ बनाये रखना है तो बीजेपी वहां अपनी पैठ लगातार बढ़ाने के प्रयास कर रही है। दूसरी और कहने को कुछ भी कहा जाएं पर भाजपा या मोदी को सत्ता से हटाने के लिए विपक्षी दलों द्वारा आपसी सहमति या यों कहें कि इंडी का कंसेप्ट भी चल नहीं पाया है। तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि वामदल जिसे अपना वोट बैंक मान कर चलता रहा है उस वोट बैंक पर सैंध भी उन्हीं के साथ समझौता कर रही कांग्रेस पार्टी है। केरल में अल्पसंख्यकों के साथ ही हिन्दुओं के वामदलों के वोट कांग्रेस अपनी और करने में सफल रही है। फिर वामदलों के नेताओं की जो यूएसपी अच्छे वक्ता के रुप में होती थी वह आज दिखाई नहीं देती। समय के साथ बदलाव को आत्मसात् नहीं करने के कारण ही सोशल मीडिया जो आज प्रमुख माध्यम बन गया है, उस क्षेत्र में वामदल कहीं पिछड़ गए हैं। दरअसल गठबंधन की राजनीति के अपनी लाभ हानि है और एक कारण यह भी है कि यह गठबंधन एक चुनाव के लिए होता है तो राज्य स्तर पर होने वाले चुनाव में प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं। इससे जनता में भी मैसेज अलग तरह का जाता है।

ऐसे में वामदलों को 18 वीं लोकसभा में अपनी पहचान बनाये रखने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। वामदलों के सामने दरअसल अभी विकल्प कम ही है। वामदल के कमिटेड वोटर्स छिटक गए हैं तो नेतृत्व द्वारा ना तो दूसरी लाईन के नेता तैयार किये गया हैं और ना ही केडर को मजबूत करने के प्रयास किये गये हैं। जन आंदोलन जो कभी वामदल की पहचान होती थी वह कहीं नेपथ्य में चली गई है। एक समय था जब छोटी सी छोटी जगह भी कोई ना कोई कामरेड मिल जाता था जिसकी अपनी पहचान होती थी, उस तरह के नाम आज तलाशने पड़ते हैं। 2024 के चुनावों के नतीजें जो भी हो पर आगे के लिए वामदलों को भारतीय राजनीति में प्रासंगिक बने रहने के लिए ठोस रणनीति बनाकर एग्रेसिव रुप से आगे आना होगा।

आज का इतिहास

1898 इटली फुटबॉल लीग के पहला खेल खेला गया।
1921 स्वीडन ने फांसी की सजा को खत्म कर दिया।
1924 लिथुआनिया ने राजदूतों के सम्मेलन के राष्ट्रों के साथ क्लेपेडा समझौते पर हस्ताक्षर किए, ईस्टप्रासिया से क्लेपेडा क्षेत्र को लिया और लिथुआनिया के बिना शर्त वाले क्षेत्र में एक स्वायत्त क्षेत्र में बना दिया।
1927 फ्रांसीसी एविएटर्स चार्ल्स नुंगेसर और फ्रैंकोइस कोली अबोर्डल%ओसेऊ ब्लैंक बाइप्लेन, पेरिस से न्यूयॉर्क के लिए पहली गैर-स्टॉपट्रांसलेटिक उड़ान बनाने का प्रयास करते हैं, टेकऑफ़ के बाद गायब हो गए।
1945 यूरोप दिवस में विजय या बस वी-ई दिवस के रूप में जाना जाता है पहली बार यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के अंत को चिह्नित करने के लिए 8 मई, 1945 को मनाया गया था। इस दिन, द्वितीय विश्व युद्ध के मित्र देशों ने नाजी जर्मनी के सशस्त्र बलों के बिना शर्त आत्मसमर्पण को औपचारिक रूप से स्वीकार कर लिया।
1945 जर्मन नियंत्रण के तहत अधिकांश सशस्त्र बलों ने सक्रिय संचालन को बंद कर दिया। यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के अंत को चिह्नित करते हुए, समर्पण के जर्मन साधन को औपचारिक रूप से हटा दिया गया था।
1945 मित्र देशों के कमांडरों की उपस्थिति में ओबेरकोमांडो डेर वेहरमाच्ट के प्रतिनिधियों ने यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध (विल्हेम कीटल चित्र) को समाप्त करते हुए, जर्मनी के आत्मसमर्पण के समझौते पर हस्ताक्षर किए।
1945 द्वितीय विश्व युद्ध के अंत का जश्न मनाने के लिए एक परेड एक दंगे में बदल गई, जिसके बाद फ्रेंच अल्जीरिया के सेटीफ और उसके आसपास बड़े पैमाने पर गड़बड़ी और हत्याएं हुईं।
1956 ऑस्ट्रिया और इसराइल राजनयिक संबंधों को बढ़ाया।
1963 दक्षिण वियतनाम में, रिपब्लिक वियतनाम की सेना के सैनिकों ने बौद्ध प्रदर्शनकारियों की भीड़ में वेसाखा पर बौद्ध ध्वज के उड़ने पर प्रतिबंध लगाने, बौद्ध संकट को मारने और भड़काने के खिलाफ आग लगा दी।
1963 दक्षिण वियतनाम, वियतनाम गणराज्य की सेना के सैनिकों ने बौद्ध प्रदर्शनकारियों की भीड़ के खिलाफ वेसाखा में बौद्ध ध्वज के उड़ने पर प्रतिबंध लगाने, बौद्ध संकट को मारने और भड़काने के लिए आग लगा दी।

आरक्षण पर मुसलमानों की दावेदारी, किन राज्यों में है ऐसी व्यवस्था

अभिनय आकाश

आरक्षण एक ऐसा शब्द जिसकी स्थापना हमारे समाज में समानता को स्थापित करने के प्रयास के लिहाज से की गई थी। जिसके माध्यम से समाज के कमजोर वर्ग को सशक्त बनाया जाए ऐसी कोशिश की गई। लेकिन जब इसी शब्द का इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए होता है तो ये अपने मूल्य उद्देश्यों को अपनी मूल भावना को खो देता है और यही से विवाद का भी जन्म होता है। जातीय व्यवस्था ऊपर से जितनी सरल दिखाई देती है अंदर से ये व्यवस्था उतनी ही ज्यादा जटिल है। जब पूरी व्यवस्था में धर्म का आयाम जुड़ जाता है तो पूरी व्यवस्था और ज्यादा जटिल हो जाती है। चुनाव के माहौल में मुस्लिम आरक्षण को लेकर एक विवाद का जन्म हुआ है। ऐसे में आंध्र प्रदेश में मुस्लिम आरक्षण का मामला फिर से सुर्खियों में आया है। भारत आरक्षण के इर्द-गिर्द बुनियादी संवैधानिक सवालों पर बहस कर रहा है। क्या भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में धर्म आधारित आरक्षण हो सकता है? क्या कभी मुसलमानों को अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) या अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) का कोटा कम करके आरक्षण दिया गया है? क्या अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण जो केवल कुछ धार्मिक संप्रदायों तक सीमित है, धर्म के आधार पर आरक्षण के बराबर है?

हाल ही में एक इंटरव्यू में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धर्म आधारित आरक्षण का जिक्र करते हुए कहा कि जब संविधान लिखा गया था, उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू, बाबासाहेब अंबेडकर और राजेंद्र बाबू जैसे नेता वहां थे; आरएसएस या बीजेपी से कोई नहीं था और सभी समुदायों के प्रतिनिधि भी थे। एक लंबी चर्चा के बाद, यह निर्णय लिया गया कि धर्म के आधार पर आरक्षण समाज के लिए हानिकारक होगा। ई पी रॉयप्पा बनाम तमिलनाडु राज्य, 1973 में सुप्रीम कोर्ट ने माना है कि समानता कई पहलुओं और आयामों के साथ एक गतिशील अवधारणा है और इसे पारंपरिक और सैद्धांतिक सीमाओं के भीतर कैद और सीमित नहीं किया जा सकता है। वास्तविक समानता का संबंध परिणामों की समानता से है। सकारात्मक कार्रवाई वास्तविक समानता के इस विचार को बढ़ावा देती है। 1949 के संविधान ने प्रारूप संविधान के अनुच्छेद 296 (वर्तमान संविधान के अनुच्छेद 335) से अल्पसंख्यक शब्द को हटा दिया, लेकिन अनुच्छेद 16(4) को इसमें शामिल कर दिया, जो राज्य को किसी के भी पक्ष में आरक्षण के लिए कोई भी प्रावधान करने में सक्षम बनाता है। अनुच्छेद 15 विशेष रूप से राज्य को केवल धर्म और जाति (लिंग, नस्ल और जन्म स्थान के साथ) दोनों के आधार पर नागरिकों के खिलाफ भेदभाव करने से रोकता है। केरल राज्य बनाम एन एम थॉमस (1975) में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद, आरक्षण को अनुच्छेद 15(1) और 16(1) के समानता/गैर-भेदभाव खंड का अपवाद नहीं माना जाता है, बल्कि समानता के विस्तार के रूप में माना जाता है।

धर्म-आधारित आरक्षण पहली बार 1936 में त्रावणकोर-कोचीन राज्य में लागू किया गया था। 1952 में इसे सांप्रदायिक आरक्षण से बदल दिया गया। मुस्लिम, जिनकी आबादी 22% थी, ओबीसी में शामिल

थे। 1956 में केरल राज्य के गठन के बाद, सभी मुसलमानों को आठ उप-कोटा श्रेणियों में से एक में शामिल किया गया था और ओबीसी कोटा के भीतर 10% (अब 12%) का एक उप-कोटा बनाया गया था। मंडल आयोग की दोषपूर्ण रिपोर्ट के विपरीत, जिसमें हिंदुओं की तर्ज पर निष्कर्ष निकाला गया था कि केरल और कर्नाटक में केवल 52% मुस्लिम ओबीसी थे।

जस्टिस ओ चिन्नप्पा रेड्डी (1990) की अध्यक्षता में कर्नाटक के तीसरे पिछड़ा वर्ग आयोग ने हवानूर (1975) और वेंकटस्वामी (1983) आयोग की तरह पाया कि मुसलमानों ने पिछड़े वर्गों में शामिल होने की आवश्यकताओं को पूरा किया। 1995 में मुख्यमंत्री एच डी देवेगौड़ा की सरकार ने ओबीसी कोटा के भीतर 4त्न मुस्लिम आरक्षण लागू किया। ओबीसी की केंद्रीय सूची में शामिल छत्तीस मुस्लिम जातियों को कोटा में शामिल किया गया था। देवेगौड़ा की जद (एस) ने 2023 के विधानसभा चुनावों से पहले मुस्लिम कोटा खत्म करने के बसवराज बोम्मई सरकार के फैसले की आलोचना की थी। बाद में सुप्रीम कोर्ट ने बोम्मई सरकार के फैसले पर रोक लगा दी।

एम करुणानिधि की सरकार ने 2007 में जे ए अंबाशंकर (1985) की अध्यक्षता वाले दूसरे पिछड़ा वर्ग आयोग की सिफारिशों के आधार पर एक कानून पारित किया, जिसमें 30% ओबीसी कोटा के भीतर, 3.5% आरक्षण के साथ मुसलमानों की एक उप-श्रेणी प्रदान की गई। इसमें ऊंची जाति के मुसलमान शामिल नहीं थे। इस अधिनियम में कुछ ईसाई जातियों को आरक्षण दिया गया था, लेकिन बाद में ईसाइयों की ही मांग पर इस प्रावधान को हटा दिया गया।

112 अन्य समुदायों/जातियों के साथ मुसलमानों को आरक्षण देने का प्रश्न 1994 में आंध्र प्रदेश पिछड़ा वर्ग आयोग को भेजा गया था। 2004 में मुसलमानों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक पिछड़ेपन पर अल्पसंख्यक कल्याण आयुक्त की एक रिपोर्ट के आधार पर, सरकार ने पूरे समुदाय को पिछड़ा मानते हुए 5त्न आरक्षण प्रदान किया। उच्च न्यायालय ने तकनीकी आधार पर कोटा रद्द कर दिया कि पिछड़ा वर्ग के लिए एपी आयोग के साथ अनिवार्य परामर्श नहीं किया गया था। यह भी माना गया कि अल्पसंख्यक कल्याण रिपोर्ट कानून की दृष्टि से खराब थी क्योंकि इसमें पिछड़ेपन का निर्धारण करने के लिए कोई मानदंड नहीं रखा गया था। हालाँकि, अदालत ने माना कि मुसलमानों या उनके वर्गों/समूहों के लिए आरक्षण, किसी भी तरह से धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ नहीं है। एम आर बालाजी बनाम मैसूर राज्य (1962) पर भरोसा करते हुए अदालत ने कहा कि मुसलमानों या उस मामले के लिए ईसाई और सिख आदि को अनुच्छेद 15(4) या 16(4) के तहत लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से बाहर नहीं रखा गया है। एम आर बालाजी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा- यह संभावना नहीं है कि कुछ राज्यों में समूह बनाने वाले कुछ मुस्लिम या ईसाई या जैन सामाजिक रूप से पिछड़े हो सकते हैं। .यद्यपि हिंदुओं के संबंध में जातियाँ नागरिकों के समूहों या वर्गों के सामाजिक पिछड़ेपन का निर्धारण करने में विचार करने के लिए एक प्रासंगिक कारक हो सकती हैं, लेकिन इसे उस संबंध में एकमात्र या प्रमुख परीक्षण नहीं बनाया जा सकता है।

न्यायमूर्ति राजिंदर सच्चर समिति (2006) ने पाया कि समग्र रूप से मुस्लिम समुदाय लगभग एससी और एसटी जितना ही पिछड़ा है और गैर-मुस्लिम ओबीसी की तुलना में अधिक पिछड़ा है। न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा समिति (2007) ने अल्पसंख्यकों के लिए 15त्न आरक्षण का सुझाव दिया, जिसमें मुसलमानों के लिए 10त्न आरक्षण शामिल था। इन दो रिपोर्टों के आधार पर यूपीए सरकार ने 2012 में एक कार्यकारी आदेश जारी किया, जिसमें 27% के मौजूदा ओबीसी कोटा के भीतर अल्पसंख्यकों को 4.5% आरक्षण प्रदान किया गया। चूंकि यह आदेश यूपी, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव से कुछ दिन पहले ही जारी किया गया था, इसलिए चुनाव आयोग ने सरकार से इसे लागू नहीं करने को कहा। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने आदेश को रद्द कर दिया। वहीं ने उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगाने से इनकार कर दिया।

राजनीति में ज्यादा नहीं चमकते हिंदी सितारे

राजकुमार सिंह

हिंदी फिल्मों की स्वप्न सुंदरी हेमा मालिनी और दूरदर्शन के लोकप्रिय सीरियल 'रामायण' के राम अरुण गोविल की किस्मत लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान में ईवीएम में बंद हो गई। हेमा जीत की हैट्रिक के लिए लगातार तीसरी बार मथुरा से मैदान में हैं, जबकि गोविल पहला प्रयास मेरठ से कर रहे हैं। इन दोनों की हार-जीत का पता तो चार जून को चलेगा, लेकिन राजनीति में हिंदी सितारे अभी तक बहुत ज्यादा चमक नहीं बिखेर पाए। दक्षिण भारत में एमजीआर, एनटीआर और जयललिता सरीखे फिल्मी सितारे अपने दम पर मुख्यमंत्री की कुर्सी तक भी पहुंचे, लेकिन उत्तर भारत में हिंदी सितारे कहीं ज्यादा विशाल प्रशंसक वर्ग के बावजूद राजनीति में कोई बड़ी लकीर अभी तक नहीं खींच पाए। फिर भी हर चुनाव में सितारों के मैदान में उतरने और उतारने का सिलसिला बरकरार है तो इसलिए कि कम-से-कम एक चुनाव में तो इनके स्टारडम का जादू मतदाताओं पर चल ही जाता है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भी बड़ी संख्या में सितारे मैदान में नजर आते हैं। शायद ही कोई दल इस मामले में अपवाद हो। किसी भी अन्य नागरिक की तरह सितारों को भी चुनाव लड़ने का अधिकार है, लेकिन लोकप्रियता के सहारे संसद या विधानसभा में पहुंच कर अपने दल की एक सीट बढ़ा देने मात्र से निर्वाचित जनप्रतिनिधि के रूप में उनकी भूमिका पूरी नहीं हो जाती। दरअसल उसके बाद ही असली भूमिका शुरू होती है। विडंबना यह है कि मतदाताओं से लेकर संसदीय लोकतंत्र तक के प्रति अपेक्षित भूमिका की कसौटी पर ज्यादातर सितारे फेल हो जाते हैं। बेशक कांग्रेस से सांसद और मंत्री रहे सुनील दत्त इस मामले में अपवाद ही नहीं, मिसाल भी साबित हुए, जिन्हें राजनेता से भी ज्यादा संवेदनशील समाजसेवी के रूप में लोग याद करते हैं। भाजपा से सांसद और मंत्री रहे विनोद खन्ना ने भी अपने निर्वाचन क्षेत्र गुरदासपुर के लिए काम किया, पर ज्यादातर हिंदी सितारे राजनीति को भी फिल्मी भूमिका की तरह चमक-दमक का ही खेल मान लेते हैं। प्रशंसकों से तालियों के साथ वोट भी बटोर कर अगले चुनाव तक वे गायब हो जाते हैं। जनता के बीच से तो वे आते ही नहीं, चुनाव जीतने के बाद भी जनता से जुड़े रहने की जहमत नहीं उठाते। नतीजतन कहीं-कहीं तो गुमशुदा सांसद जैसे पोस्टर लगाने की नौबत आ जाती है। जैसी कि निवर्तमान लोकसभा में गुरदासपुर में सनी देओल के लिए आई या पहले बीकानेर में धर्मेंद्र के लिए भी आई थी। रामानंद सागर के टीवी सीरियल 'रामायण' के राम अरुण गोविल की बारी तो अब आई है, लेकिन उसी सीरियल में सीता और रावण की भूमिका निभानेवाले क्रमशः दीपिका चिखलिया और अरविंद त्रिवेदी 1991 में ही भाजपा के टिकट पर चुनाव जीत कर लोकसभा चले गए थे। एक और लोकप्रिय टीवी सीरियल 'महाभारत' में कृष्ण बने नीतीश भारद्वाज भी बहुत पहले संसद सदस्य बन चुके। उसके बाद ये तीनों ही न तो पार्टी में कहीं दिखे और न ही निर्वाचन क्षेत्र में। हिंदी सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन की राजनीतिक पारी भी बेहद निराशाजनक रही। राजीव गांधी से मित्रता के चलते 1984 में इलाहाबाद से हेमवती नंदन बहुगुणा को हरा कर सांसद बने अमिताभ ने बोफोर्स विवाद के चलते सांसदी और राजनीति, दोनों को अलविदा कह दिया।

एक वीडियो से गरमाई पश्चिम बंगाल की राजनीति

प्रभाकर मणि तिवारी

क्या पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में महिलाओं के यौन उत्पीड़न और बलात्कार की घटना और उसके बाद इस मुद्दे पर महिलाओं के जिस दोलन ने देश-विदेश में सुर्खियां बटोरी थी, वह सब मनगढ़ंत था? इस मामले में भाजपा के एक नेता और एक पीड़िता के स्टिंग ऑपरेशन का वीडियो सामने आने के बाद राज्य की राजनीति अचानक गरमा गई है। सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने जहां इसे एक बड़ी साजिश बताया है। वहीं भाजपा का दावा है कि यह वीडियो ही फर्जी है।

उत्तर 24-परगना जिले के जिस संदेशखाली का नाम इस साल पांच जनवरी के पहले देश तो दूर राज्य के ज्यादातर लोग भी नहीं जानते थी वही भाजपा का प्रमुख चुनावी मुद्दा बन गया था। बीती जनवरी में ईडी की टीम पर हमले और उसके बाद तृणमूल कांग्रेस नेताओं के कथित यौन उत्पीड़न के खिलाफ सड़कों पर उतरने वाली महिलाओं के कारण सुंदरबन इलाके में बांग्लादेश की सीमा से सटे इस द्वीप को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां मिलती रही हैं।

पार्टी के निचले स्तर के कार्यकर्ताओं से लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुनावी रैलियों में संदेशखाली की महिलाओं का कथित यौन उत्पीड़न की गूंज सुनाई देती रही है। इस मामले को अपने सियासी हित में भुनाने के लिए ही पार्टी ने संदेशखाली की एक पीड़िता रेखा पात्रा को ही बशीरहाट संसदीय सीट पर मैदान में उतारा है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी शुरुआती दौर में खुद रेखा से फोन पर बात की थी। इससे साफ है कि पार्टी इस मुद्दे को लेकर कितनी गंभीर है। लेकिन अब स्टिंग ऑपरेशन के जरिए तैयार ताजा वीडियो ने इस पूरे मामले को एक नया रंग तो दिया ही है, इससे तृणमूल कांग्रेस को भाजपा पर जवाबी हमले को एक मजबूत हथियार भी मिल गया है। यह वीडियो तृणमूल कांग्रेस ने शनिवार को सोशल मीडिया पर जारी किया था। हालांकि, स्वतंत्र रूप से उसकी पुष्टि नहीं की जा सकी है।

खुफिया कैमरे से रिकॉर्ड किए गए उस वीडियो में यह बात सामने आई है कि संदेशखाली में तृणमूल कांग्रेस के नेताओं की ओर से महिलाओं के बलात्कार की घटना पूरी

तरह झूठी और मनगढ़ंत है और इसके पीछे राज्य के प्रमुख भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी का हाथ है। भाजपा के संदेशखाली ब्लॉक-2 के मंडल अध्यक्ष गंगाधर कयाल को उस वीडियो में यह कहते सुना जा सकता है कि कुछ महिलाओं को पार्टी के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी के निर्देश पर बलात्कार और यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज करने के लिए तैयार किया गया था।

यहां इस बात का जिक्र प्रासंगिक है कि संदेशखाली ब्लॉक-2 की महिलाओं ने ही कथित यौन उत्पीड़न के खिलाफ एकजुट होकर विरोध प्रदर्शन शुरू किया था। वीडियो में सवाल करने वाले का चेहरा नजर नहीं आता। लेकिन भाजपा नेता का चेहरा साफ है। वे कहते हैं- हमने महिलाओं को ट्रेनिंग देकर बलात्कार और यौन उत्पीड़न की शिकायत दायर करने के लिए तैयार किया था। उसका कहना है कि कुछ महिलाएं आखिरी मौके पर डर कर शिकायत करने से पीछे हट गई।

गंगाधर कयाल का दावा है कि शुभेंदु अधिकारी ने उसे और क्षेत्र के अन्य भाजपा नेताओं को शाहजहां शेख, शिबू हाजरा और उत्तम सर्दार नामक तीन तृणमूल नेताओं के खिलाफ बलात्कार के आरोप लगाने के लिए तीन-चार स्थानीय महिलाओं को उकसाने को कहा था। फिलहाल यह तीनों नेता जेल में हैं। कलकत्ता हाईकोर्ट के निर्देश पर संदेशखाली की घटना की जांच सीबीआई कर रही है। संदेशखाली से हाल में भारी तादाद में हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किए गए थे। उस वीडियो में दावा किया गया है कि शुभेंदु अधिकारी ने खुद संदेशखाली के एक घर में हथियार रखवाए थे। बाद में केंद्रीय एजेंसियों ने मौके से उसे बरामद किया था।

दिलचस्प बात यह है कि बशीरहाट की भाजपा उम्मीदवार रेखा पात्रा ने भी अपना यौन उत्पीड़न होने का दावा किया था। इस घटना से उपजी सहानुभूति को भुनाने के लिए ही पार्टी ने उसको बशीरहाट सीट से मैदान में उतारा था। संदेशखाली इलाका इसी लोकसभा के तहत है। वीडियो में एक महिला को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि उसने अंग्रेजी में लिखी एक शिकायत पर बिना समझे हस्ताक्षर कर दिए थे। उसमें लिखा था कि शाहजहां शेख समेत तृणमूल कांग्रेस के तीन नेताओं ने उसके साथ बलात्कार किया है। उस महिला ने बलात्कार की घटना से साफ इंकार किया है। संदेशखाली की घटना से बैकफुट पर आई तृणमूल कांग्रेस इस वीडियो के सामने आने के बाद भाजपा के प्रति आक्रामक हो गई है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपनी एक चुनावी रैली में कहा है कि यह वीडियो भाजपा की मानसिकता को दर्शाता है। यह बंगाल को बदनाम करने की एक सुनियोजित साजिश है।

दूसरी ओर, भाजपा ने इस वीडियो को फर्जी करार दिया है। पार्टी के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी ने अपने एक ट्वीट में उस नेता गंगाधर कयाल का एक वीडियो पोस्ट किया है। उसमें वह कहता नजर आ रहा है कि स्टिंग आपरेश वाले वीडियो में उसकी आवाज विकृत की गई है यानी वह उसकी आवाज नहीं है। शुभेंदु ने भी पत्रकारों से बातचीत में कहा कि यह वीडियो फर्जी है और इसे बनाने के लिए तकनीक का सहारा लिया गया है। उन्होंने इसके लिए तृणमूल कांग्रेस के लोगों को जिम्मेदार ठहराया है। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि फिलहाल इस वीडियो का सत्यापन होना बाकी है। इसे बनाने वाले लोगों के नाम भी सामने नहीं आए हैं। लेकिन अगर इसमें जरा भी सच्चाई है तो इससे चुनाव के बाकी चरणो में भाजपा को नुकसान हो सकता है।

पुनर्वितरण के मुद्दे से बढ़ा चुनावी पारा

डॉ. अश्विनी

देश का चुनावी माहौल हर दिन गर्म होता जा रहा है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने तरीके से मतदाताओं को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनावी घोषणा पत्र, जिसे उसने संकल्प पत्र की संज्ञा दी है, में साफ तौर पर कहा है कि वह समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए काम करेगी। पार्टी का मुख्य फोकस भारत के युवाओं, महिलाओं, गरीबों और किसानों पर है। जब कांग्रेस समेत अन्य राजनीतिक दल जाति आधारित जनगणना की मांग कर रहे थे, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट शब्दों में यह कहा था कि देश को जाति के नाम पर या उसके आधार पर विभाजित करना एक 'पाप' है। उन्होंने यह भी कहा था कि उनके लिए चार सबसे बड़ी जातियां युवा, महिलाएं, गरीब और किसान हैं और उनकी पार्टी इन वर्गों की बेहतरी के लिए काम करेगी। प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के पिछले दस वर्षों के कार्यकाल के दौरान जाति और धर्म के आधार पर कभी कोई भेदभाव नहीं हुआ है।

दो कार्यकालों की अवधि में केंद्र सरकार ने गरीबों के घरों के लिए सब्सिडी, मुफ्त राशन, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त गैस कनेक्शन, गरीबों और गांवों के लिए शौचालय, बिजली, पानी की सुविधा या प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रदान किया। इनके अलावा गरीबों और निम्न आय वर्ग के लिए स्वास्थ्य बीमा, आसान शर्तों पर बिना गारंटी के बैंक कर्ज जैसी अनेक सामाजिक सुरक्षा सुविधाएं मुहैया करायी गयी है। श्रमिकों के लिए पोर्टल बनाने और पेंशन जैसी सुविधाओं की व्यवस्था की गयी है। इस तरह की कल्याण योजनाओं की सूची लंबी है। सभी वर्गों को सरकारी सहायता उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर प्रदान की गयी है, न कि उनकी जाति या धर्म के आधार पर। इन योजनाओं के लाभों को देशभर में देखा-परखा जा सकता है। लेकिन जाति जनगणना का बार-बार जिक्र करने से ऐसा महसूस होता है कि विभिन्न राजनीतिक दल पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए काम नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन्हें वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं। आंध्र प्रदेश में हैदराबाद में एक रैली में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने संकेत दिया कि अगर कांग्रेस सत्ता में आती है, तो पार्टी

जाति सर्वेक्षण के वादे के बाद देश की संपत्ति, नौकरियों और अन्य कल्याणकारी योजनाओं का आर्थिक रूप से पुनर्निधारण करेगी। उन्होंने कथित तौर पर कहा कि 'हम एक जाति जनगणना करेंगे ताकि पिछड़े, अनुसूचित जाति, जनजाति, सामान्य जाति के गरीबों और अल्पसंख्यकों को पता चले कि देश में उनकी (संख्या के संदर्भ में) कितनी हिस्सेदारी है। इसके बाद यह पता लगाने के लिए एक वित्तीय और संस्थागत सर्वेक्षण किया जायेगा कि देश की संपत्ति किसके पास कितनी है। हम आपको वह देंगे, जो आपका अधिकार है।'

हालांकि पुनर्वितरण शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, लेकिन इसके निहितार्थ स्पष्ट हैं- 'जिसकी जितनी ज्यादा जनसंख्या, उसको उतने ज्यादा अधिकार'। पार्टी की मंशा चार बिंदुओं पर स्पष्ट हो जाती है- पहला, विभिन्न जातियों और अल्पसंख्यकों के आकार का अनुमान लगाया जायेगा। दूसरा, वित्तीय और संस्थागत सर्वेक्षण से पता चलेगा कि किसके पास कितनी संपत्ति है। तीसरा, वे क्रांतिकारी कार्य करेंगे और सभी को उनका अधिकार दिलायेंगे। चौथा, इस बारे में भी स्पष्टता है कि किसे कितना मिलेगा- 'जितनी आबादी, उतना हक' यानी जनसंख्या के अनुपात में अधिकार। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार के प्रधानमंत्री रहे डॉ मनमोहन सिंह ने 2006 में कुछ ऐसा ही कहा था। हालांकि कुछ राजनीतिक विशेषज्ञ पूर्व प्रधानमंत्री का बचाव करते हुए तर्क दे रहे हैं कि उन्होंने कभी नहीं कहा कि देश के संसाधनों पर मुसलमानों का पहला अधिकार है, जो उन्होंने कहा, हमें उसकी गहराई में जाना चाहिए। उन्होंने कहा था, 'मेरा मानना है कि हमारी सामूहिक प्राथमिकताएं स्पष्ट हैं- कृषि, सिंचाई और जल संसाधन, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश, और सामान्य बुनियादी ढांचे की आवश्यक सार्वजनिक निवेश आवश्यकताओं के साथ-साथ अनुसूचित जाति/जनजाति, अन्य पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यक और महिलाओं व बच्चों के उत्थान के लिए कार्यक्रम। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए घटक योजनाओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता होगी। हमें यह सुनिश्चित करने के लिए नयी योजनाएं बनानी होंगी कि अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से मुस्लिम अल्पसंख्यकों को विकास के लाभों में समान रूप से साझा करने का अधिकार मिले। संसाधनों पर पहला दावा उनका होना चाहिए।' हालांकि डॉ सिंह ने अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्थान के लिए बनायी गयी नीतियों की चर्चा की, लेकिन उन्होंने मुसलमानों का अलग से जिक्र किया।

उस समय के अखबारों में इसे प्रमुखता से प्रकाशित किया गया था। चूंकि यह एक लिखित भाषण था, इसलिए जुबान फिसलने का कोई बहाना नहीं हो सकता। यह राहुल गांधी या मनमोहन सिंह के बारे में नहीं है, बल्कि विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों से लुभावने वादे कर वोट हासिल करने के बारे में है। संविधान में स्पष्ट कहा गया है कि सरकार देश के हर वर्ग के साथ समान व्यवहार करेगी। लेकिन अल्पसंख्यकों का वोट हासिल करने की होड़ में राजनीतिक दल समाज और संविधान के प्रति अपना कर्तव्य भूल जाते हैं। कांग्रेस ने यह भी कहा है कि जाति जनगणना के बाद वह देश में धन और नौकरियों का आकलन करने के लिए एक वित्तीय और संस्थागत सर्वेक्षण करायेगी, जिसके बाद वह 'क्रांतिकारी' कदम उठायेगी और सभी को उनका अधिकार देगी, जो उनकी आबादी के अनुसार होगा।

प्रधानमंत्री मोदी 2006 के मनमोहन सिंह के भाषण का हवाला दे रहे थे और कांग्रेस के न्याय पत्र को समझा रहे थे। उनके अनुसार, कांग्रेस मुसलमानों, अधिक बच्चों वाले लोगों, घुसपैठियों को पैसे बांटेगी। भारतीय मुस्लिम आबादी 1951 में 9.9 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 14.2 प्रतिशत हो गयी। यह समझ से परे है कि राजनीतिक टिप्पणीकार, जो अपने बयान के लिए प्रधानमंत्री को कटघरे में खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं, सत्ता में आने पर कांग्रेस के 'क्रांतिकारी' वादे पर चुप क्यों हैं।

संसदीय लोकतंत्र का अपमान भी है दलबदल

राजेश बादल

हालिया दौर संसदीय लोकतंत्र के नजरिये से बड़ा भारी बीता है। अलग-अलग स्तर पर राजनेताओं के पार्टियां छोड़ने की खबरें आती रहीं। इनमें निर्वाचित जनप्रतिनिधि हैं, लोकसभा चुनाव के प्रत्याशी हैं और संगठन के नेता भी हैं। पचहत्तर साल के लोकतंत्र के लिए इस तरह की घटनाएं बड़े हादसों से कम नहीं हैं। इतनी लंबी अवधि के बाद अपने नुमाइंदों से यह अपेक्षा तो देश रख ही सकता है कि वे सरकार चलाने की प्रचलित शासन शैलियों के आधार पर ही अपनी राजनीतिक सोच विकसित करें। हजार साल की गुलामी के बाद यह तो तय था कि आजाद भारत में सामूहिक नेतृत्व की प्रजातांत्रिक शैली के अलावा कोई अन्य प्रणाली कामयाब नहीं हो सकती, इसीलिए तो भारतीय संविधान निर्माताओं ने करीब तीन साल तक बारीकी से हर बिंदु पर बहस करने के बाद संसदीय लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप को स्वीकार किया था। तब शायद उन्हें अंदाजा नहीं था कि आने वाली पीढ़ियां सियासत को सेवा के माध्यम की जगह कारोबार बना देंगी। एक ऐसी जम्हूरियत मुल्क के सामने होगी, जिसमें राजनीति का कोई वैचारिक आधार नहीं होगा। निश्चित रूप से यह एक कड़वे सच के रूप में हमारे सामने है। सुनने में अटपटा लगता है कि चंद महीने पहले जो राजनेता विधानसभा के लिए किसी एक पार्टी के टिकट पर चुना जाता है, वह लोकसभा का चुनाव आते-आते अपनी पार्टी छोड़कर प्रतिद्वंद्वी पार्टी में चला जाता है। मध्यप्रदेश में रविवार को कांग्रेस विधायक निर्मला सप्रे ने पार्टी छोड़कर भाजपा ज्वाइन कर ली। वे सागर जिले से इकलौती महिला कांग्रेस विधायक थीं। इस तरह बीते डेढ़ महीने में तीन नवनिर्वाचित कांग्रेस विधायक भाजपा में प्रवेश ले चुके हैं। मुरैना जिले से पार्टी के वरिष्ठतम विधायक रामनिवास रावत और छिंदवाड़ा जिले से ही निर्वाचित कांग्रेस विधायक कमलेश शाह भी अपनी पुरानी पार्टी छोड़ चुके हैं। इस तरह बुंदेलखंड, चंबल और महाकौशल से कांग्रेस को तगड़े झटके लगे हैं। रही सही कसर मालवा ने पूरी कर दी। वहां भी कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी अक्षय बम ने ऐन वक्त पर अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और अगले दिन भाजपा की सदस्यता ले ली। कुछ ऐसी ही खबर छत्तीसगढ़ से आई। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता राधिका खेड़ा ने रायपुर में पार्टी कार्यकर्ताओं पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाया और पार्टी ही छोड़ दी। इसी कड़ी में ओडिशा से एक कांग्रेस प्रत्याशी सुचरिता मोहंती ने पार्टी का टिकट लौटा दिया। उनका कहना था कि उनके पास चुनाव लड़ने के लिए पैसे नहीं हैं और पार्टी ने कोई सहायता नहीं की है। इंदौर की घटना पर कांग्रेस को झटका लगना स्वाभाविक ही था। पार्टी प्रत्याशी के चुनाव में हुई गफलत के लिए बगलें झांक रही है। मगर इस घटनाक्रम की प्रतिक्रिया भाजपा में हुई। आठ बार सांसद रहीं पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने इस तरह पार्टी में प्रवेश को गलत परंपरा बताया। उनका कहना था कि समझदार मतदाता यह सवाल करते हैं कि इसकी क्या आवश्यकता थी? भाजपा के भीतर अब यह सवाल भी उठ रहे हैं कि संगठन में सदस्यता से पहले क्या किसी राजनीतिक कार्यकर्ता का वैचारिक आधार नहीं देखा जाना चाहिए। इन दिनों बड़ी संख्या में कांग्रेस से राजनेता भाजपा में आ रहे हैं। क्या इसका अर्थ यह लगाया जाए कि उन्होंने अपनी विचारधारा छोड़ दी है? यदि नहीं छोड़ी और छोड़ भी दी है तो इसका आकलन करने का क्या पैमाना है? यदि वे अपनी विचारधारा के साथ पार्टी में शामिल हो रहे हैं तो इसका संगठन को नुकसान होना तय है। दूसरी बात यह है कि यदि भविष्य में उन्हें लगा कि उनका राजनीतिक हित फिर मूल पार्टी में है तो इस बात की क्या गारंटी है कि वे वापस अपनी पार्टी में लौटकर नहीं जाएंगे? यदि वे वापस नहीं जाते तो दल के आंतरिक तंत्र में नए किस्म की अवसरवादी विचारधारा पनपेगी, जो राष्ट्रहित में नहीं होगा। असल प्रश्न यहां उत्पन्न होता है। कोई राजनेता एक पार्टी के चिह्न पर चुनाव मैदान में उतरता है और जीत भी जाता है तो स्पष्ट है कि मतदाताओं ने उसे पराजित प्रत्याशी की विचारधारा के खिलाफ मत दिया है।

वर्किंग पैरेंट्स के बच्चों में दिखाई दे सकते हैं साइकॉटिक डिप्रेशन के लक्षण

बच्चों को अच्छी परवरिश देना हर माता पिता के लिए उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है। लेकिन यह जिम्मेदारी उन पैरेंट्स के लिए थोड़ी और कठिन बन जाती है, जहां मां और पिता दोनों वर्किंग होते हैं। जीं हां, ऐसा इसलिए क्योंकि ज्यादातर वर्किंग पैरेंट्स अपने बच्चों को महंगे, खिलौने और अच्छा लाइफस्टाइल तो दिला देते हैं लेकिन अपने बच्चों के साथ गुजारने के लिए पर्याप्त समय नहीं होता। जिसकी वजह से वो कई बार साइकॉटिक डिप्रेशन तक का शिकार बन सकते हैं। आइए जानते हैं आखिर क्या है साइकॉटिक डिप्रेशन, इसके लक्षण और बचाव के उपाय।

क्या है साइकॉटिक डिप्रेशन

साइकॉटिक डिप्रेशन मनोरोग से जुड़ी एक बीमारी है, जिसका समय पर इलाज न होने पर यह काफी गंभीर हो सकती है। इस रोग से पीड़ित होने पर बच्चों के मन में नकारात्मक ख्याल आने लगते हैं। उसे यह लगने लगता है कि उससे जीवन में कुछ नहीं हो पाएगा, उसकी लाइफ असफलता से घिरी हुई है। इस तरह के नकारात्मक ख्याल बच्चे को अंदर ही अंदर परेशान करने लगते हैं।

साइकॉटिक डिप्रेशन

साइकॉटिक डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण आजकल का लाइफस्टाइल है। बड़े लोगों की ही तरह बच्चे भी अपने जीवन में कई तरह के प्रेशर से होकर निकलते हैं।

उदाहरण के लिए समय पर होमवर्क खत्म करने के साथ पढ़ाई करना। जिसकी वजह से कई बार बच्चा खेलकूद के लिए भी समय नहीं निकाल पाता है और नकारात्मक बातें सोचने लगता है। इसके विपरीत जो बच्चे खेलते हैं वो हमेशा खुश रहते हैं, उनका शरीर थकता है और उन्हें अच्छी नींद आती है। इस तरह के बच्चों के पास कुछ भी नेगेटिव सोचने का समय नहीं होता है। लेकिन जिन बच्चों के पैरेंट्स वर्किंग होने की वजह से बेहद व्यस्त रहते हैं उन्हें अपना ज्यादा समय अकेले रहकर ही गुजारना पड़ता हैं और वो परेशान रहते हैं। ऐसे में माता-पिता को अपने बच्चों के लिए थोड़ा समय निकालना चाहिए, जिससे बच्चे अपने मन की बात उनसे साझा करके खुद को हल्का महसूस करें।

- पीड़ित बच्चा अपने ही दोस्तों से जलन महसूस करने लगता है।
- इस रोग से पीड़ित बच्चा हमेशा नकारात्मक ख्याल रखता है, ऐसा बच्चा खुश नहीं रहता है।
- इस रोग से पीड़ित बच्चा खेलना-कूदना बंद कर देते हैं।
- बच्चे किसी से बात नहीं करेंगे, न पैरेंट्स, न पड़ोसियों, न दोस्तों से
- बच्चे अकेला रहने के लिए घर में ही अपनी जगह तलाशेंगे।
- बड़ों का सम्मान नहीं करेंगे, ठीक से बात भी नहीं करेंगे।
- छोटी-छोटी बातों पर भाई-बहन या फिर पैरेंट्स सहित अन्य के साथ लड़ेंगे।
- ठीक से पढ़ाई भी नहीं करेंगे
- खाने पीने में बच्चों का मन नहीं लगेगा

ऐसे करें बचाव

साइकॉटिक डिप्रेशन से बच्चों को बचाए रखने के लिए बच्चों की हर एक्टिविटी पर नजर रखें। यदि उनमें बताए गए किसी प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं तो आपको डॉक्टरी सलाह लेनी चाहिए। इसके अलावा जितना संभव हो बच्चों से बात करें। यदि बच्चा आपका कुछ बोलता भी है तो उसकी बातों को अनसुना न करें। बच्चों को खेलकूद के साथ जो वो करना चाहता है उसकी छूट दें। बच्चों को सही व गलत के बारे में बताएं। बीमारी के लक्षण दिखते ही मनोरोग विशेषज्ञ से सलाह लेना चाहिए।

मूली के पत्ते रखते हैं बड़ी बीमारियों से दूर खाने से पहले बरतें ये सावधानी

हरी पत्तेदार सब्जियां खाने के सेहत के लिए फायदेमंद होती हैं, इसमें कोई शक नहीं। कुछ सब्जियों के पत्ते भी इस श्रेणी में आते हैं। इन्हें हम बेकार समझकर फेंक देते हैं। ऐसे ही हरे पत्ते होते हैं मूली के। मूली के पत्ते कोरिया और चीन में सब्जी के रूप में खाए जाते हैं। भारत में भी इनसे साग और पराठे बनाए जाते हैं। मूली क्रूसीफर सब्जी है। हेल्थ बेनिफिट्स की बात करें तो इससे कई माइक्रोन्यूट्रिएंट्स मिलते हैं।

हेल्थ एक्सपर्ट्स मानते हैं कि क्रूसीफर सब्जियों में पावरफुल ऐंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। ये आपको कैंसर जैसी बड़ी बीमारियों से भी बचाते हैं। यहां जानें मूली के पत्तों के फायदे और इन्हें कैसे खा सकते हैं।

मजबूत करते हैं इम्यूनिटी

मूली के पत्ते विटामिन सी से भरपूर होते हैं। इनमें मूली से छह गुना ज्यादा विटामिन सी होता है। आपको सीजनल एलर्जी, जुकाम, खांसी होता रहता है तो मूली के पत्ते खाना शुरू कर सकते हैं।

वेट लॉस के लिए बेस्ट

मूली के पत्ते वजन कम करने वालों के लिए बढ़िया ऑप्शन है। इनमें कैलोरी कम होती है और आपका मेटाबॉलिजम तेज करते हैं। एक कप में सिर्फ 13 कैलोरी होती है। आप इन्हें सलाद या भुजिया बनाकर खा सकते हैं। पेट भरा रहेगा और पोषण भी मिलेगा।

नैचुरल मल्टीविटामिन

मूली के पत्तों में विटामिन ए, विटामिन बी1, बी6, फॉलिक एसिड, कैल्शियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, पोटैशियम और आयरन होता है। इसमें विटामिन सी भी भरपूर मात्रा में होता है। इन्हें आप नैचुरल मल्टीविटामिन मान सकते हैं। ये भी पढ़ें- ठंड में बीमार पड़ने से बचने के लिए जरूर खाएं ये पांच सब्जियां

एनीमिया में फायदेमद

अगर आपको एनीमिया है तो मूली के पत्ते आपके लिए फायदेमंद हैं। इसमें आयरन होता है जो कि कम हीमोग्लोबिन वाले लोगों के लिए अच्छा ऑप्शन है।

बरतें ये सावधानी

मूली के पत्ते आपकी हेल्थ के लिए काफी अच्छे होते हैं लेकिन इन्हें खाने में सावधानी भी बरतनी चाहिए। कुछ स्टडीज में यह बात सामने आई है कि पत्ते हानिकारक नहीं होते लेकिन सिंचाई के गंदे पानी की वजह से इनमें पल्यूटेंट्स पहुंच सकते हैं।

अगर इन्हें अच्छी तरह उगाया गया है और ठीक तरह से धोकर पकाकर खाया जाए तो खाने में कोई दिक्कत नहीं है। पत्ते बनाने या कच्चे खाने से पहले अच्छी तरह धोना जरूरी है।

सलाह

आप रोजाना अंडे खाने के शौकीन हैं, तो कोशिश कीजिए कि कई दिनों से रखे अंडे का सेवन ना करें। जरूरत हो तो अंडों को खरीद कर लाएं और तभी उनका इस्तेमाल कर लें।

अगर फ्रिज में रखते हैं अंडे तो हो जाए सावधान!, होते हैं ये नुकसान

संडे हो या मंडे रोज खाओं अंडे, ये बात कई बार आपने लोगों को दोहराते हुए सुना होगा। प्रोटीन से भरपूर अंडे सेहत के लिए बेहद फायदेमंद माने जाते हैं। लेकिन क्या आप ऐसा फ्रिज में रखे अंड़ों के बारे में भी कह सकते हैं। क्या वाकई फ्रिज में रखे अंड़े आपकी सेहत के लिए बाहर रखें अंड़ों जितने ही फायदेमंद होते हैं। जवाब शायद ज्यादातर लोगों को निराश कर सकता है। जी हां, आइए जानते हैं आखिर क्यों फ्रिज में रखे अंडे नहीं खाना चाहिए?। फ्रिज में अंड़े रखने से आपका क्या नुकसान हो सकता है।

फ्रिज में अंड़े रखने के नुकसान-

1-अक्सर लोगों को लगता है कि फ्रिज में अंडे रखने से वो सुरक्षित रहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं हैं। अंडे में मौजूद प्रोटीन, कैल्शियम और ओमेगा 3 फैटी एसिड फ्रिज में रखने की वजह से खत्म हो जाते हैं।

2-सर्दियों में अंडा खाने से आपकी सेहत को फायदा मिलता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें प्रोटीन, कैल्शियम और ओमेगा 3 फेटी एसिड होता है, लेकिन फ्रिज में रखने की वजह से इनकी ये खासियत ही खत्म हो जाती है।

3-अंडे फ्रिज में रखने से फ्रेश रहते हैं, लेकिन इनके पोषक तत्व कम तापमान की वजह से खत्म हो जाते हैं। इसके साथ ही इनका असली स्वाद भी खत्म हो जाता है।

4-अंडों को सही तापमान पर स्टोर किया जाए ताकि साल्मोनेला बैक्टीरिया को बढ़ने से रोका जा सके। साल्मोनेला बैक्टीरिया अंडे को बाहरी और भीतरी दोनों ही तरह से दूषित कर सकते हैं। फ्रिज में अंडे रखने से उसके ऊपर मौजूद बैक्टीरिया बढ़ भी सकते हैं। ऐसे में अंडे के अंदर भी इनके घुस जाने की तो संभावना होती ही है।

5- फ्रिज में रखे अंडे को उबालने पर ज्यादातर अंडे तुरंत टूट जाते हैं। इसलिए अगर आप फ्रिज से निकालकर अंडा उबालना चाहते हैं तो पहले उसे कुछ देर के लिए कमरे मे खुला रख दें जिससे उसका तापमान सामन्य हो जाए उसके बाद ही आप उसे उबलने के लिए रखें।

6-कई बार अंडे के ऊपरी भाग पर गंदगी रह ही जाती है तो फ्रिज की दूसरी चीजों को भी संक्रमित कर सकती है।

पैरों में रहता है दर्द तो इन घरेलू उपायों का अपनाएं, जल्द मिलेगा आराम

पैर और पैर की मांसपेशियों में दर्द से राहत दिलाने में सेब का सिरका बहुत लाभकारी है। आपको दो चम्मच सिरके में शहद मिलाकर खाली पेट लेना है, ऐसा करने से दर्द में राहत मिलेगी। साथ ही आप सीधे तौर पर दर्द से प्रभावित हिस्से पर लगा भी सकते हैं।

आज के समय में ज्यादा पैदल चलने या बहुत अधिक देर तक खड़े रहने से लोगों के पैर और पैर की मांसपेशियों में दर्द होना शुरू हो जाता है। पैरों में होने वाला दर्द अधिकतर रात के समय में अधिक परेशान करता है, जिस कारण से रात में सोना मुश्किल हो जाता है। यदि इस समस्या का समय पर निदान न किया जाए तो यह समस्या आगे चलकर एक गंभीर परेशानी को पैदा कर देती है। कुछ लोग तो पेन किलर दवाओं का सेवन करने लगते हैं जो उनकी सेहत के लिए ठीक नहीं है। ऐसे में हम आपको बताते हैं कि आप इन घरेलू उपायों को आजमाकर पैर और पैर की मांसपेशियों में होने वाले इस दर्द से छुटकारा पा सकते हैं।

पैर दर्द के कुछ घरेलू उपाय सेब का सिरका

पैर और पैर की मांसपेशियों में दर्द से राहत दिलाने में सेब का सिरका बहुत लाभकारी है। आपको दो चम्मच सिरके में शहद मिलाकर खाली पेट लेना है, ऐसा करने से दर्द में राहत मिलेगी। साथ ही आप सीधे तौर पर इसे दर्द से प्रभावित हिस्से पर लगा भी सकते हैं। आप टब में एप्पल विनेगर की कुछ बूंदे मिलाकर इसमें पैर डुबोकर भी बैठ सकते हैं।

सरसों का तेल दर्द में सहायक

पैर दर्द में आप सरसों के तेल की मालिश कर सकते हैं जिससे आपको बहुत लाभ मिलेगा। पैरों में होने वाले दर्द से आपको जल्दी ही छुटकारा मिलेगा। यह घरेलु नुस्खा सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाता है।

गर्म पानी

पैर की मांसपेशियों और पैर के दर्द में गर्म पानी बहुत सहायक हैं। आप गर्म पानी में नमक डालकर अपने पैरों को डुबोकर बैठ जाएं। इस प्रक्रिया के करने से आपको दर्द में बहुत राहत मिलेगी। यह एक बेहतरीन प्राकृतिक नुस्खा है।

मेथी का प्रयोग

मेथी भी दर्द से राहत देने में कारगर है। आप एक चम्मच मेथी रात को भिगोकर रख दें और उसे सुबह में खा लें। ऐसा करने से आपको पैर की मांसपेशियों और पैर दर्द में काफी राहत मिलेगी।

हल्दी

हल्दी में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो आपके पैर की मांसपेशियों और पैर दर्द में राहत दिलाने में सहायक होते हैं। हल्दी को गर्म दूध में मिलाकर पीने से भी दर्द में आराम महसूस होता है इसके साथ-साथ आप पैरों पर हल्दी का लेप भी लगा सकते हैं।

नवजात शिशु को 6 महीने तक क्यों नहीं पिलाते पानी?

घर पर नन्हे मेहमान के आते ही दादी-नानी ही नहीं घर का हर बुजुर्ग व्यक्ति माता-पिता को बच्चे की अच्छी सेहत बनाए रखने के लिए सलाह देने लगता है। इसी सलाह में से एक सलाह माता-पिता को यह भी दी जाती है कि अपने नवजात शिशु को 6 महीने से पहले पानी नहीं पिलाना है। लेकिन क्या आप इस सलाह के पीछे की असल वजह जानते हैं और क्या है बच्चे को पानी पिलाने का सही समय। आइए जानते हैं ऐसे ही कुछ सवालों के जवाब, जिनके बारे में माता-पिता को जरूर पता होना चाहिए। नवजात बच्चों को शुरू के 6 महीने अलग से पानी पिलाने की जरुरत नहीं होती हैं। उनके लिए उनकी मां का दूध ही काफी होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि मां के दूध में ही 80 प्रतिशत पानी होता है, जो उसे सभी जरुरी पोषण और हाइड्रेशन देता है। इसके अलावा जो बच्चे फॉर्मूला मिल्क पीते हैं उनका शरीर भी हाइड्रेट रहता है। यही वजह है कि कम से कम 6 महीने बाद ही बच्चों को पानी पिलाने की सलाह दी जाती है। ध्यान रखें पतला फॉर्मूला मिल्क पिलाने या ज्यादा पानी पिलाने की वजह से बच्चे की तबियत खराब हो सकती है।

पानी पिलाने का सही समय क्या है?

विशेषज्ञों के मुताबिक बच्चा जब ठोस आहार खाना शुरू कर दे तो उसे पानी पिलाना शुरू कर देना चाहिए। इसके लिए आप बच्चों के हाथ में सिपर पकड़ा सकते हैं।

नाईट शिफ्ट से प्रभावित हो सकती है पुरुषों की प्रजनन क्षमता, ऐसे करें बचाव

नींद की कमी से लोग मोटापे और दिल के रोग जैसी कई गंभीर बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। लेकिन अब ये बात सामने आई है कि अनिश्चित काम के घंटों या नाईट शिफ्ट से पुरुषों की सेक्स ड्राइव में कमी आ सकती है। इतना ही नहीं इसकी वजह से पुरुषों के बाप बनने की संभावना भी कम हो जाती है।

मौजूदा समय में, लोगों के पास अपने हिसाब से नौकरी करने के विकल्प मौजूद हैं। कई लोग सुबह तो कई रात के समय नौकरी करते हैं। ऐसे में नाईट शिफ्ट में काम करने वाले लोगों की नींद बुरी तरह प्रभावित होती है, जिसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। नींद की कमी से लोग मोटापे और दिल के रोग जैसी कई गंभीर बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। लेकिन अब ये बात सामने आई है कि अनिश्चित काम के घंटों या नाईट शिफ्ट से पुरुषों की सेक्स ड्राइव में कमी आ सकती है। इतना ही नहीं इसकी वजह से पुरुषों के बाप बनने की संभावना भी कम हो जाती है।

आईवीएफ और इनफर्टिलिटी स्पेशलिस्ट डॉ. हृषिकेश डी पई ने हिंदुस्तान टाइम्स के साथ बातचीत में इस मुद्दे पर बात की। डॉ. हृषिकेश के अनुसार, शिफ्ट में काम करने वाले पुरुष इन समस्याओं का सबसे ज्यादा शिकार होते हैं। काम करने का पैटर्न निश्चित रूप से कर्मचारियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। इससे उनका सोने का पैटर्न, खाना खाने का समय और व्यायाम करने की क्षमता प्रभावित होती है। नींद की कमी पुरुषों में मूत्र संबंधी समस्याओं और इरेक्टाइल डिसफंक्शन का कारण बन सकती है।

काम करने का अनियमित शेड्यूल पुरुषों में सेक्स ड्राइव को बढ़ावा देने वाले टेस्टोस्टेरोन हार्मोन के स्तर को कम सकता है। इसकी कमी की वजह से पुरुषों के सीमेन की गुणवत्ता ख़राब हो जाती है और वह महिला को प्रेगनेंट करने की क्षमता खो सकते हैं। मौजूदा समय में ख़राब खाने-पीने की आदतों और बिगड़ी जीवनशैली की वजह से पुरुषों की प्रजनन दर पहले की तुलना में कम हो गयी है।

नाईट शिफ्ट में काम करने वाले पुरुषों के लिए टिप्स

- लगातार रात में काम करने से बचें।
- बार-बार बदलने वाली शिफ्ट में काम करने से बचें।
- घर जाते समय तेज रोशनी से बचें, ऐसा करने से आपके लिए सो जाना आसान हो जायेगा।
- दिन में सोते समय धूप से बचने के लिए पर्दों का इस्तेमाल करें।
- लंबी यात्रा करने से बचें, इसकी वजह से आपकी नींद प्रभावित होती है।
- सोने के समय फोन साइलेंट पर रखें ताकि नींद ख़राब न हो।
- सोने से पहले कैफीन का सेवन करने से परहेज करें।

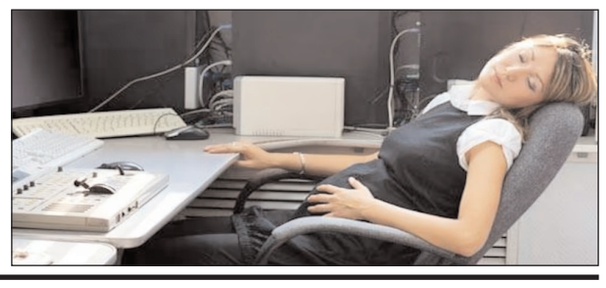

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

पीएम मोदी ने किया मतदान जनता से भी अपील की

अहमदाबाद। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के तहत सुबह सात बजे से मतदान हुआ। 10 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश की 93 सीटों पर लोग वोटिंग हुई। इस क्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात की गांधीनगर लोकसभा सीट के एक मतदान केंद्र पर अपने मताधिकार का प्रयोग किया जिसका वीडियो सामने आया है। आपको बता दें कि गुजरात की सभी 25 सीट पर मतदान एक ही चरण में हो रहा है पीएम मोदी सुबह सात बजे मतदान शुरू होने के कुछ ही देर बाद अहमदाबाद शहर के रानिप इलाके में स्थित निशान पब्लिक स्कूल में बनाए गए मतदान केंद्र पर गए। यहां उन्होंने अपना वोट डाला। जब वे मतदान केंद्र पर पहुंचे तो केंद्रीय गृह मंत्री एवं बीजेपी के वरिष्ठ नेता अमित शाह वहां मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि अमित शाह गांधीनगर सीट से ही चुनावी मैदान में हैं। अपने मताधिकार का प्रयोग करने के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने लोगों से लोकसभा चुनाव में बहुत अधिक संख्या में मतदान करने की अपील की।

कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं राधिका खेड़ा

नईदिल्ली। कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय मीडिया समन्वयक राधिका खेड़ा और मशहूर अभिनेता शेखर सुमन ने भाजपा ज्वाइन की। इस दौरान पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े और मीडिया प्रभारी अनिल बालूनी, संजय मयूख भी रहें। गौरतलब है कि राधिका ने सोमवार को कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देते हुए कहा था कि छत्तीसगढ़ में चुनाव के दौरान उनके साथ दुर्व्यवहार हुआ और इसे लेकर उन्होंने कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं से अपनी बात रखी, लेकिन उनकी किसी ने मदद नहीं की। इसके बाद उन्हें इस तरह का बड़ा फैसला लेना पड़ा। भाजपा ज्वाइन करते ही कांग्रेस नेता राधिका खेड़ा ने कहा, रामभक्त होने के नाते, रामलला के दर्शन करने के कारण कौशल्या माता की धरती पर मेरे साथ जिस तरह से दुर्व्यवहार किया गया, अगर मुझे भाजपा सरकार का संरक्षण नहीं मिला होता तो मैं यहां तक नहीं पहुंच पाती।

लालू यादव ने की मुसलमानों को आरक्षण देने की वकालत

पटना। लोकसभा के तीसरे चरण के मतदान को लेकर राजद सुप्रीमो लालू यादव का बड़ा बयान सामने आया है। पत्रकारों से बातचीत के क्रम में उन्होंने कहा कि तीसरे चरण में भी महागठबंधन के पक्ष में वोटिंग हुई है। गृह मंत्री अमित शाह और पीएम नरेंद्र मोदी को निशाने पर लिया। लालू यादव ने कहा कि अमित शाह लोगों को भड़का रहे हैं। वो डर चुके हैं। वहीं आरक्षण को लेकर पूछे गये सवाल का जवाब देते हुए लालू यादव ने मुसलमानों को आरक्षण देने की वकालत की। पत्रकारों ने लालू यादव से सवाल किए कि अमित शाह जब बिहार आते हैं तो जंगलराज की बात कहते हैं। जिसपर लालू यादव ने कहा कि वो लोगों को भड़का रहे हैं। दरअसल, वो डरे हुए हैं। वहीं जब पीएम मोदी के इस दावे पर उनसे सवाल किया गया कि पीएम कह रहे हैं कि जब कांग्रेस के साथ आप आएंगे तो लोगों की संपत्ति छीन ली जाएगी। जिसपर लालू ने कहा कि वो संविधान और लोकतंत्र को खत्म करना चाहते हैं।

लालू यादव के बयान पर मुख्यमंत्री योगी का पलटवार

लखनऊ। मुस्लिम आरक्षण को लेकर लालू यादव का एक बयान आया है। लालू ने मुस्लिम आरक्षण का समर्थन किया है। अब इसी को लेकर वह विरोधियों के निशाने पर आ गए हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लालू के बयान पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री यही कह रहे हैं कि इंडी गठबंधन से जुड़े दल, चाहे वे कांग्रेस हों, राजद हों, समाजवादी पार्टी हों, वे ओबीसी, एससी और एसटी के आरक्षण में गड़बड़ी करने की कोशिश करेंगे और उनके घोषणापत्र में इसका उल्लेख है। जब कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार सत्ता में थी, तो राजद और समाजवादी पार्टी दोनों उसके घटक थे। योगी ने कहा कि उस समय इन लोगों ने रंगनाथ मिश्र समिति और सच्चर समिति का गठन किया था। रंगनाथ मिश्रा कमेटी ने मुसलमानों को 6% आरक्षण देने की सिफारिश की थी, जिसका उस समय भारतीय जनता पार्टी ने कड़ा विरोध किया था। बीआर अंबेडकर धर्म के आधार पर आरक्षण के खिलाफ थे।

मनीष सिसोदिया की हिरासत कोर्ट ने 15 मई तक बढ़ाई

नईदिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने कथित उत्पाद शुल्क नीति घोटाले से संबंधित केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दायर मामले में मंगलवार को पूर्व उपमुख्यमंत्री और आप नेता मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 15 मई तक बढ़ा दी। दिल्ली हाई कोर्ट के निर्देशानुसार सीबीआई मामले में आरोपियों के खिलाफ आरोप तय करने पर सुनवाई 15 मई तक के लिए टाल दी गई है। इस बीच, सुप्रीम कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से पूर्व डिप्टी सीएम की गिरफ्तारी से पहले और बाद में दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति घोटाले पर केस फाइलें पेश करने को कहा। इससे पहले तीन मई को दिल्ली उच्च न्यायालय ने आबकारी नीति में कथित घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार एवं धनशोधन मामलों में पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की जमानत याचिका पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से जवाब मांगा था।

मध्य प्रदेश के धार में विपक्षी गठबंधन पर बरसे प्रधानमंत्री

कांग्रेस और इंडी गठबंधन को ना हमारी आस्था की परवाह है और ना ही देशहित की : मोदी

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के धार में विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने विपक्षी गठबंधन पर जमकर निशाना साधा। मोदी ने कहा कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन को ना हमारी आस्था की परवाह है और ना ही देशहित की। उन्होंने अपने संबोधन की शुरूआत में कहा कि आज सुबह मैं मेरा कर्तव्य निभाने गया था और सुबह मैं वोट करके आपके पास आया हूं। मेरा हमेशा से मत रहा है कि ये लोकतंत्र का उत्सव है और हर नागरिक को इसे उत्सव के रूप में मनाना चाहिए। आज मैं धार में देख रहा हूं, यहां की माताएं-बहनें जिस तरह से परंपरागत वेशभूषा में आई हैं, जैसे अपने परिवार में कोई अवसर हो। ये लोकतत्र का मिजाज है।

मोदी ने कहा कि एक प्रकार से चुनाव, संस्कार की प्रक्रिया भी है, लोकतंत्र के प्रति समर्पण को और अधिक प्रभावी बनाने का उत्तम अवसर है। धार के मेरे भाई-बहनों ने आज जो ये उत्सव को माहौल बना दिया है, मैं धार के लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि मंगलवार को तीसरे चरण का मतदान हुआ। पहले चरण में विपक्ष पस्त पड़ गया था, दूसरे चरण में विपक्ष ध्वस्त हो गया था और मंगलवार को तीसरे चरण में जो कुछ बाकी रह गया है, वो भी अस्त हो जाएगा। क्योंकि पूरे देश ने ठान लिया है- फिर एक बार मोदी सरकार।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस, बाबा साहेब से नफरत करती है, इसी नफरत में अब कांग्रेस ने एक और चाल चली है। कांग्रेस चाहती है कि संविधान बनाने का श्रेय बाबा साहेब को न मिले। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने कहना शुरू कर दिया है कि संविधान बनाने में बाबा साहेब का योगदान तो कम था, संविधान बनाने में नेहरु जी ने सबसे बड़ी भूमिका निभाई थी। उन्होंने कहा कि इन परिवारवादियों ने पहले देश का इतिहास तोड़ा-मरोड़ा, आजादी के महान सपूतों को भुलवा दिया। इन परिवारवादियों ने अपना महिमामंडन करने के लिए झूठा इतिहास लिखा और अब ये संविधान को लेकर भी झूठ गढ़ने लगे हैं। मोदी ने कहा कि कांग्रेस के लोग एक नई

अफवाह उड़ा रहे हैं कि मोदी को 400 सीटें मिल गईं, तो वो संविधान बदल देगा। ऐसा लगता है जैसे कांग्रेस वालों की बुद्धि पर वोट बैंक का ताला पड़ गया है। अरे, इनको पता होना चाहिए कि 2014 से 2019 और 2019 से 2024 मोदी के पास एनडीए और एनडीए+ के रूप में 400 सीटों का समर्थन तो था ही। उन्होंने कहा कि मोदी ने 400 सीटों का इस्तेमाल... 370 हटाने के लिए किया, एससी/एसटी के आरक्षण को 10 साल आगे बढ़ाने के लिए किया, एक आदिवासी बेटी को पहली बार देश का राष्ट्रपति बनाने के लिए किया, महिला आरक्षण के लिए किया।

उन्होंने कहा कि अब मोदी 400 सीटें इसलिए मांग रहा है... ताकि मैं कांग्रेस और इंडी गठबंधन की हर साजिश को रोक सकूं, ताकि कांग्रेस कश्मीर में धारा 370 फिर से लागू न कर दें, ताकि अयोध्या के राम मंदिर पर बाबरी, ताला न लगा दे, ताकि कांग्रेस देश की खाली जमीन, खाली द्वीप दूसरे देशों को न सौंप दे. ताकि एससी/एसटी/ओबीसी को मिले आरक्षण पर कांग्रेस वोट बैंक के लिए डाका न डाले. ताकि कांग्रेस अपने वोट बैंक की सभी जातियों को रातों रात ओबीसी न घोषित कर दे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तुष्टिकरण के दलदल में ऐसा धंस चुकी है कि उसे और कुछ नजर नहीं आ रहा। कांग्रेस की चली तो कांग्रेस कहेगी कि भारत में जीने का पहला हक भी उसके वोट बैंक का है। मोदी ने कहा कि जब तक मोदी जिन्दा है, नकली सेक्युलरिज्म के नाम पर भारत की पहचान मिटाने की कोई भी कोशिश मोदी सफल नहीं होने देगा। और ये हजारों वर्ष पुराने भारत को, उसकी इस संतान की गारंटी है।

देश निर्णायक मोड़ पर, आपको तय करना है कि 'वोट जिहाद' काम करेगा या 'राम राज्य'

मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के खरगोन में एक रैली को संबोधित किया और लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के पहले दो घंटे में हुए मतदान की रफ्तार पर संतोष जताया। अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा कि लोगों के प्रयासों से देश आगे बढ़ रहा है। आपके वोट ने भारत में 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने का काम किया है। विरोधियों पर हमला करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि विपक्षी 'इंडी' गठबंधन को देशवासियों की कोई चिंता नहीं है। भारत इतिहास के निर्णायक मोड़ पर है, आपको तय करना है कि 'वोट जिहाद' काम करेगा या 'राम राज्य'। उन्होंने कहा कि आपके वोट ने भारत को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाया है। यही नहीं अनुच्छेद 370 समाप्त कराया है और एक आदिवासी महिला को देश की राष्ट्रपति बनाया है। पीएम मोदी ने मध्य प्रदेश के खरगोन में रैली को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस के इरादे कितने खतरनाक हैं, यह समझने के लिए उन लोगों की बात सुनने की जरूरत है जो 20-25 साल तक कांग्रेस में थे, लेकिन अब वह पार्टी का दामन छोड़ चुके हैं। जो लोग कांग्रेस छोड़ रहे हैं वे ताजी हवा में सांस ले रहे हैं और कह रहे हैं कि 'बहुत हो गया'। आगे प्रधानमंत्री ने कहा कि एक महिला ने कहा कि राम मंदिर जाने को लेकर उनको बहुत प्रताड़ित किया गया जिस वजह से उन्हें कांग्रेस छोड़नी पड़ी। उसने कहा कि कांग्रेस को मुस्लिम लीग ने हाईजैक कर लिया है। राहुल गांधी पर तंज कसते हुए पीएम मोदी ने कहा कि मैं कांग्रेस के शहजादे से पूछता हूं कि आपके ये साथी जो बोल रहे हैं, इनकी मंशा क्या है? पाकिस्तान से इतनी मोहब्बत और हमारी सेना से इतनी नफरत क्यों? इसलिए लोग कहते हैं- 'कांग्रेस का हाथ'।

कांग्रेस ने मतदान प्रतिशत के आंकड़ों पर उठाए सवाल

खरगे ने इंडिया गठबंधन के नेताओं को लिखा पत्र

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने विपक्षी इंडिया गठबंधन के नेताओं को पत्र लिखा है। इस पत्र में चुनाव आयोग द्वारा जारी किए गए मतदान के आंकड़ों पर सवाल उठाए हैं और कथित धांधली का आरोप लगाया है। पत्र में खरगे ने विपक्षी गठबंधन के नेताओं से अपील की कि वे ऐसी धांधलियों के खिलाफ आवाज उठाएं। खरगे ने लिखा हमारा एकमात्र उद्देश्य संविधान की रक्षा और लोकतंत्र की संस्कृति की रक्षा करना है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने लिखा इंडियन नेशनल डेवलेपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया) के तौर पर यह हमारा साझा प्रयास होना चाहिए कि हम लोकतंत्र की रक्षा करें और चुनाव आयोग की निष्पक्षता को बचाएं।% खरगे ने मतदान प्रतिशत के आंकड़ों में हुए फेरबदल पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि %यह अंतिम नतीजों में फेरबदल करने की कोशिश हो सकती है।% खरगे ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि पहले दो चरणों में मतदान के रुझानों को देखते हुए पीएम मोदी और भाजपा परेशान है। पूरा देश जानता है कि यह तानाशाही सरकार सत्ता के नशे में चूर है और अपनी कुर्सी बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है।

आंकड़े जारी करने में हुई देरी पर उठे सवाल

दरअसल लोकसभा चुनाव के दो चरणों के मतदान प्रतिशत और डाटा साझा करने में हुई देरी पर विपक्षी पार्टियां सवाल उठा रही हैं। पहले दो चरणों में मतदान प्रतिशत कम रहा। हालांकि चुनाव आयोग ने मतदान के कई घंटे बाद मतदान प्रतिशत के नए आंकड़े जारी किए, जिसमें मतदान प्रतिशत में 5-6 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई। इस विपक्षी दलों ने सवाल उठाया कि आंकड़े जारी करने में इतनी देरी क्यों लगी? विपक्ष ने चुनाव में धांधली का आरोप लगाया। मंगलवार को लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए मतदान हो रहा है, जिसमें 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 93 लोकसभा सीटों के लिए वोट डाले जा रहे हैं।

फेज 1-2 के लिए सीट वाइज वोटिंग रिपोर्ट प्रदान किया जाए : टीएमसी

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने सोमवार को मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार से मतदान प्रतिशत रिपोर्ट जारी करने में देरी के लिए स्पष्टीकरण के साथ-साथ चरण 1 और 2 के लिए निर्वाचन क्षेत्र-वार सटीक मतदान आंकड़े तत्काल प्रस्तुत करने को कहा। सीईसी को संबोधित एक पत्र में टीएमसी ने कहा कि भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) ने 30 अप्रैल को पहले दो चरणों के लिए मतदान प्रतिशत देर से जारी किया और कहा कि रिपोर्ट में पात्र मतदाताओं की कुल संख्या और कुल संख्या के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

टीएमसी ने कहा कि यह पिछले चुनावों की पिछली मतदाता मतदान रिपोर्ट (रिपोर्टों) से एक आदर्श बदलाव है, जहां ईसीआई ने इस संबंध में एक विस्तृत रिपोर्ट प्रदान की थी। मतदान प्रतिशत डेटा साझा करने में ईसीआई द्वारा देरी के विपक्ष के आरोपों के बीच, चुनाव निकाय ने पिछले शुक्रवार को जोर देकर कहा कि प्रकटीकरण और पारदर्शिता चुनाव आयोग के काम में मानक प्रथाएं हैं और डाले गए वोटों की वास्तविक संख्या का बूथ-वार डेटा जल्द ही उम्मीदवारों के पास उपलब्ध है। टीएमसी ने यह भी दावा किया कि रिपोर्ट शुरू में रिपोर्ट किए गए प्रतिशत में उल्लेखनीय विसंगतियों और विसंगतियों को दर्शाती है।

खेल
प्रमुख समाचार

लखनऊ को हराने आज उतरेगी सनराइजर्स

नईदिल्ली। अपने बल्लेबाजों के खराब प्रदर्शन से उबरकर सनराइजर्स हैदराबाद लखनऊ सुपर जाइंटस के खिलाफ बुधवार को आईपीएल के मैच में जीत दर्ज करके प्लेआफ का दावा पुख्ता करने के इरादे से उतरेगी। दोनों टीमों के 11 मैचों में 12 अंक हैं। सनराइजर्स का नेट रनरेट (माइनस 0 . 065) लखनऊ (माइनस 0 . 371) से बेहतर है। अंकतालिका में कोलकाता नाइट राइडर्स (16), राजस्थान रॉयल्स (16) और चेन्नई सुपर किंग्स (12) उससे ऊपर हैं। सनराइजर्स और लखनऊ में से जो जीतेगा वह प्लेआफ की दौड़ में एक कदम आगे होगा।

पैट कमिंस की कप्तानी वाली टीम में प्रतिभा की कमी नहीं है लेकिन पिछले कुछ मैचों में उसके विजय अभियान पर रोक लग गई है। पिछले चार में से तीन मैचों में सनराइजर्स को पराजय का सामना करना पड़ा है क्योंकि उसके आक्रामक बल्लेबाज नाकाम रहे हैं। मुंबई इंडियंस के खिलाफ पिछले मैच में वे बड़ा स्कोर नहीं बनाने के कारण सात विकेट से हार गए। ट्रेविस हेड को छोड़कर बाकी बल्लेबाज पिछले कुछ मैचों में खराब फॉर्म में रहे हैं। युवा अभिषेक शर्मा पिछले चार मैचों में 30 रन से आगे नहीं जा सके हैं। सनराइजर्स के मुख्य कोच डेनियल विटोरी ने स्वीकार किया कि हर बार सलामी बल्लेबाजों पर ही जिम्मेदारी नहीं छोड़ी जा सकती, मध्यक्रम को भी कमान संभालनी होगी। हेनरिच क्लासेन लगातार अच्छा खेलने में नाकाम रहे हैं और नीतिश रेड्डी ने भी टुकड़ों में अच्छा प्रदर्शन किया है। टी नटराजन ने अच्छी गेंदबाजी की है जबकि अनुभवी भुवनेश्वर कुमार ने भी लय हासिल कर ली है। दूसरी ओर लखनऊ सुपर जाइंट्स ने कोलकाता के खिलाफ इकाना स्टेडियम पर निराशाजनक प्रदर्शन किया और पहली बार 200 से अधिक रन देने के बाद 137 रन पर आउट हो गई। कप्तान केएल राहुल नाकाम रहे जबकि मार्कस स्टोइनिस और निकोलस पूरन भी बड़ी पारियां नहीं खेल सके।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 384 अंक टूटा, निफ्टी फिसलकर 22,300 पर आया

नईदिल्ली। मंगलवार को भी भारतीय शेयर बाजार में मुनाफावसूली जारी रही। निवेशकों ने विभिन्न सेक्टरों में शेयर बेचे। शेयरों का मूल्यांकन ऊंचा होने को लेकर चिंता के बीच एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज और आईसीआईसीआई बैंक में बिकवाली से बाजार नीचे आया। इस बीच ग्लोबल मार्केट में पॉजिटिव रुझान देखें गए। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 383.69 अंक यानी 0.52 फीसदी की गिरावट के साथ 73,511.85 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में आज 73,259.26 और 74,026.80 के रेंज में कारोबार हुआ। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के निफ्टी में भी 140.20 अंक यानी 0.76 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 22,302.50 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी में आज 22,232.05 और 22,499.05 के रेंज में कारोबार हुआ।

जयप्रकाश एसो. ने 4,616 करोड़ रु.का कर्ज नहीं चुकाया

नईदिल्ली। संकटग्रस्त जेपी समूह की प्रमुख कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स ने मूलधन व ब्याज राशि सहित 4,616 करोड़ रुपये के ऋण का भुगतान नहीं किया है। जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) ने सोमवार देर रात शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि कंपनी ने 30 अप्रैल को 1,751 करोड़ रुपये की मूल राशि और 2,865 करोड़ रुपये के ब्याज के भुगतान में चूक की है। जेएएल ने कहा, ''कंपनी का कुल उधार (ब्याज सहित) 29,805 करोड़ रुपये है, जिसे 2037 तक चुकाया जाना है। इसमें से 30 अप्रैल 2024 तक 4,616 करोड़ रुपये बकाया था।'' ये ऋण विभिन्न बैंकों से लिया गया है। कंपनी ने कहा कि 29,805 करोड़ रुपये की कुल उधारी में से 18,955 करोड़ रुपये प्रस्तावित विशेष प्रयोजन वाहन को हस्तांतरित किए जाएंगे। इसके लिए सभी विधिवत अनुमोदित एक व्यवस्था योजना को हितधारकों की मंजूरी मिल गई है।

बीमा कवर के साथ-साथ निवेश का भी उठाएं फायदा

नईदिल्ली। यूलिप यानी यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान में आम लोगों की रुचि पिछले कुछ बदलावों के बाद फिर से बढ़ी है। इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि लाइफ इंश्योरेंस कंपनियों के एसेट अंडर मैनेजमेंट में फिलहाल 10 फीसदी से ज्यादा की हिस्सेदारी अकेले यूलिप की है। वैसे लोग जो बेहतर रिटर्न, टैक्स सेविंग के साथ साथ रिस्क कवर यानी जीवन बीमा का लाभ भी चाहते हैं, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प हो सकता है। यूलिप का लॉक इन पीरियड 5 साल है। मतलब प्लान की शुरुआत के 5 साल बाद आप इसे रिडीम/सरेंडर कर सकते हैं। अगर आप 5 साल तक इस स्कीम में निवेश जारी रखते हैं तो आपको 80सी के तहत अधिकतम 1.5 लाख रुपये तक (निवेश के अन्य विकल्पों को मिलाकर) डिडक्शन का फायदा मिलेगा। यूलिप ईईई (एग्जेंप्ट-एग्जेंप्ट-एग्जेंप्ट) कैटेगरी में है। यानी इस स्कीम के तहत न तो जमा करने पर, न मिलने वाले रिटर्न और न निकासी पर टैक्स है।

सीजी पावर का चौथी तिमाही में नेट प्रॉफिट 233.81 करोड़

नईदिल्ली। सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशंस लिमिटेड का वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 233.81 करोड़ रुपये रहा। कंपनी का पिछले वित्त वर्ष 2022-23 की चौथी तिमाही में मुनाफा 426.22 करोड़ रुपये रहा था। सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशंस लिमिटेड का 31 मार्च 2024 को समाप्त वित्त वर्ष में शुद्ध लाभ 1,427.61 करोड़ रुपये रहा, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 962.97 करोड़ रुपये था। वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में कंपनी की एकीकृत आय बढ़कर 2,239.83 करोड़ रुपये हो गई जो वित्त वर्ष 2022-23 की इसी तिमाही में यह 1,917.05 करोड़ रुपये थी। वित्त वर्ष 2023-24 की एकीकृत आय 8,152.24 करोड़ रुपये रही जो 2022-23 में 7,040.30 थी। कंपनी ने बयान में कहा कि उसने 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए 1.30 रुपये प्रति शेयर का अंतरिम लाभांश दिया है।

अमेरिकी बैंक क्यों हो रहे दिवालिया?

प्रह्लाद सबनानी

अमेरिका में वर्ष 2023 में 3 बैंक (सिलिकन वैली बैंक, सिगनेचर बैंक, फर्स्ट रिपब्लिक बैंक) डूब गए थे एवं वर्ष 2024 में भी एक बैंक (रिपब्लिक फर्स्ट बैंक) डूब गया है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अमेरिकी केंद्रीय बैंक, यूएस फेडरल रिजर्व, द्वारा ब्याज दरों में की गई वृद्धि के चलते बैंकों के असफल होने की यह परेशानी बहुत बढ़ गई है।

सिलिकन वैली बैंक ने कई तकनीकी स्टार्ट अप एवं उद्यमी पूंजी फर्म को ऋण प्रदान किया था। इस बैंक के पास वर्ष 2022 के अंत में 20,900 करोड़ अमेरिकी डॉलर की सम्पत्तियां थी और यह अमेरिका के बड़े आकार के बैंकों में गिना जाता था और हाल ही के समय में डूबने वाले बैंकों में दूसरा सबसे बड़ा बैंक माना जा रहा है। इसी प्रकार, सिगनेचर बैंक ने न्यूयॉर्क कानूनी फर्म एवं अचल सम्पत्ति कम्पनियों को ऋण सुविधाएं प्रदान कर रखी थीं। इस बैंक के पास वर्ष 2022 के अंत में 11,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की सम्पत्ति थी और अमेरिका में हाल ही के समय में डूबने वाले बड़े बैंकों में चौथे स्थान पर आता है। 31 जनवरी 2024 तक के आंकड़ों के अनुसार, रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की कुल सम्पत्तियां 600 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं जमाराशि 400 करोड़ अमेरिकी डॉलर थीं। न्यू जर्सी, पेनसिल्वेनिया और न्यूयॉर्क में बैंक की 32 शाखाएं थीं जिन्हें अब फुल्टन बैंक की शाखाओं के रूप में जाना जाएगा क्योंकि फुल्टन बैंक ने इस बैंक की सम्पत्तियों एवं जमाराशि को खरीद लिया है।

ऐसा कहा जाता है कि विशेष परिस्थितियों को छोड़कर अमेरिका में सामान्यत: बैंक असफल नहीं होते हैं। परंतु,

इस सम्बंध में अमेरिकी रिकार्ड कुछ और ही कहानी कह रहा है। वर्ष 1941 से वर्ष 1979 के बीच, अमेरिका में औसतन 5.3 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं। वर्ष 1996 से वर्ष 2006 के बीच औसतन 4.3 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं एवं वर्ष 2015 से वर्ष 2022 के बीच औसतन 3.6 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं। वर्ष 2022 में अमेरिकी बैंकों को 62,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ था। अमेरिका में इतनी भारी मात्रा में बैंकों के असफल होने के कारणों में मुख्य रूप से शामिल है कि वहां छोटे छोटे बैंकों की संख्या बहुत अधिक होना है। बैंकों के ग्राहक बहुत पढ़े लिखे और समझदार हैं। बैंक में आई छोटी से छोटी परेशानी में भी वे बैंक से तुरंत अपनी जमाराशि को निकालने पहुंच जाते हैं, जबकि बैंक द्वारा इस राशि से खड़ी की गई सम्पत्ति को रोकड़ में परिवर्तित करने में कुछ समय लगता है। इस बीच बैंक यदि जमाकर्ता को जमाराशि का भुगतान करने में असफल रहता है तो उसे दिवालिया घोषित कर दिया जाता है और इस प्रकार बैंक असफल हो जाता है। कई बार बैंकों द्वारा किए गए निवेश (सम्पत्ति) की बाजार में कीमत भी कम हो जाती है, इससे भी बैंकें अपने जमाकर्ताओं को जमाराशि का भुगतान करने में असफल हो जाते हैं। अभी हाल ही में अमेरिका में मुद्रा स्फीति की दर को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार बढ़ौतरी की गई है, जिससे इन बैंकों द्वारा अमेरिकी बांड में किये गए निवेश की बाजार में कीमत अत्यधिक कम हो गई है। अब इन बैंकों को बांड में निवेश की बाजार कीमत कम होने के स्तर तक प्रावधान करने को कहा गया है और यह राशि इन बैंकों के पास उपलब्ध ही नहीं है, जिसके चलते भी यह बैंक असफल हो रहे हैं। एक सर्वे में यह बताया गया है कि आने वाले समय में अमेरिका में 190 अन्य बैंकों के असफल होने का खतरा मंडरा रहा है क्योंकि ब्याज दरों के बढ़ने से ऋण की मांग बहुत कम हो गई है। विभिन्न कम्पनियों ने अपने विस्तार की योजनाओं को रोक दिया है, इससे निर्माण की गतिविधियों में कमी आई है। अमेरिकी केंद्रीय बैंक, फेडरल रिजर्व, का पूरा ध्यान केवल मुद्रा स्फीति को कम करने पर है एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्था में विकास दर को नियंत्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उत्पादों की मांग कम हो और मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में लाया जा सके।

छत्तीसगढ़ की 7 सीटों पर 67.07% वोटिंग, बढ़ेंगे आंकड़े

रायपुर. लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में छत्तीसगढ़ की सात सीटों पर शांतिपूर्ण वोटिंग हुई. शाम 6 बजे तक छत्तीसगढ़ में 67.07 प्रतिशत वोटिंग हुई. आंकड़े अभी बढ़ेंगे. मतदान समाप्ति के बाद मतदान दल भी वापस लौटने लगे हैं. सेजबहार के इंजीनियरिंग कॉलेज में स्ट्रॉंग रूम बनाया गया है, जहां विधानसभावार ईवीएम और VVPAT मशीनों को रखी जा रही है. जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह सहित सभी सहायक रिटर्निंग अधिकारी भी सेजबहार कॉलेज परिसर में मौजूद हैं. रायपुर ग्रामीण बूथ क्रमांक 305 के रूप में प्रथम दल का आगमन हुआ. विधानसभा से मतदान केंद्र क्रमांक 193 दिव्यांग बूथ के दल वापस लौटे हैं. शांतिपूर्ण चुनाव के लिए मतदान अधिकारियों ने प्रशासन का धन्यवाद दिया. अधिकारियों ने कहा, सभी के सहयोगात्मक सफल प्रयास से मतदान कराने का अनुभव सुखद रहा.

छग में मौसम ने ली करवट

रायपुर सहित प्रदेश के कई हिस्सों में हल्की बारिश के आसार, येलो अलर्ट जारी

रायपुर। छत्तीसगढ में एक बार फिर मौसम ने करवट ली है. राजधानी रायपुर सहित प्रदेश के कई हिस्सों में मंगलवार को प्रदेश के कई जिलों में घने बादल छाए रहे, वहीं कई इलाकों में आंधी तूफ़ान के साथ झमाझम बारिश हो रही है. इस बीच मौसम विभाग ने राज्य के 18 जिलों के लिए येलो अलर्ट जार किया है. मौसम विभाग के मुताबिक, बालोद, बलौदाबाजार, बेमेतरा, बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग, गरियाबंद, गौरेला पेंड्रा मरवाही, जांजगीर-चांपा, जशपुर, कोरबा, मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी, रायगढ़, रायपुर, राजनांदगांव, सक्ती, सारंगढ़ बिलाईगढ़, सरगुजा में कुछ स्थानों पर तेज हवा के साथ आंधी और बारिश होने की संभावना है. मौसम विभाग का कहना है कि अगले 24 घंटे तक मौसम ऐसे ही रहेगा. मौसम विज्ञानी एचपी चंद्रा ने बताया कि सिनोप्टिक सिस्टम एक चक्रवर्ती परिसंचरण दक्षिणी झारखंड और आसपास के क्षेत्र में समुद्र तल से 0.9 किलोमीटर ऊपर स्थित है. जबकि एक ट्रफ रेखा दक्षिण झारखंड से पश्चिम मध्य प्रदेश तक चक्रवर्ती परिसंचरण के ऊपर से समुद्र तल से 0.9 किलोमीटर बनी हुई है. समुद्र तल से 0.9 किलोमीटर ऊपर पूर्वी विदर्भ से लेकर तेलंगाना-रायलसीमा-दक्षिण आंतरिक कर्नाटक से दक्षिण तमिलनाडु तक एक ट्रफ का विच्छेदन बना हुआ है. इसकी वजह से छत्तीसगढ़ के मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है.

किसानों को हुआ नुकसान- मौसम में अचानक आए बदलाव की वजह से छत्तीसगढ़वासियों को एक तरफ जहां भीषण गर्मी से राहत मिली है. वहीं दूसरी तरफ बारिश ने जमकर कहर भी बरपाया है. बस्तर में शहरी क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण अंचलों में बिजली के खंभे गिर जाने से विद्युत व्यवस्था ठप हो गई है. इसके अलावा किसानों की खड़ी फसल भी बारिश की वजह से बर्बाद हो गई है. बस्तर के अलावा सरगुजा में भी आंधी तूफान के साथ भारी बारिश हो रही है. वहीं पूरे प्रदेश के तापमान में गिरावट दर्ज की गई है. आपको बता दें कि खराब मौसम के बारे में बताने के लिए मौसम विभाग की ओर से येलो अलर्ट जारी किया जाता है.

येलो अलर्ट का मतलब होता है कि मौजूदा स्थिति में खतरा नहीं है, लेकिन कभी भी मौसम की खतरनाक स्थिति आपके सामने आ सकती है, इसके लिए तैयार रहें. येलो अलर्ट जारी करने का मकसद वास्तव में लोगों को सतर्क करना होता है. इसके मुताबिक आपको तुरंत कोई खतरा नहीं होता, लेकिन मौसम के हाल को देखते हुए सावधान रहना चाहिए. इस प्रकार की चेतवानी में 7.5 से 15 मिमी. की भारी बारिश होती है जो कि अगले 1 या 2 घंटे तक जारी रहने की संभावना होती है जिसके कारण बाढ़ आने की संभावना रहती है.

विकास के लिए भाजपा के पक्ष में भारी संख्या में स्वस्फूर्त मतदानः किरण सिंह देव

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने छत्तीसगढ़ में मंगलवार को तीसरे चरण के पूर्ण हुए मतदान के बाद भाजपा को अभूतपूर्व जनसमर्थन मिलने का विश्वास व्यक्त करते हुए कहा है कि बस्तर, काँकेर, राजनांदगाँव और महासमुंद में पहले और दूसरे चरण के मतदान में भाजपा को अपना भरपूर आशीर्वाद देने के बाद अब दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, जांजगीर-चाँपा और सरगुजा लोकसभा की जनता-जनार्दन ने पूरे छत्तीसगढ़ के विकास के लिए भाजपा के पक्ष में भारी संख्या में स्वस्फूर्त मतदान किया है। तीसरे चरण चुनाव में मतदाताओं में भारी उत्साह दिखा और 7 लोकसभा सीटों में हुए मतदान लगभग 75 प्रतिशत रहा। श्री देव ने कहा कि शुक्रवार को मतदान के दूसरे चरण में मतदान का भारी प्रतिशत भाजपा के लिए काफी उत्साहजनक हैं और भाजपा का यह विश्वास फलीभूत होने जा रहा है कि प्रदेश की सभी 11 लोकसभा सीटों पर कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो रहा है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री देव ने कहा कि छत्तीसगढ़ के सभी संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में सम्पन्न तीनों चरणों के मतदान के रूझान से यह स्पष्ट हो गया है कि प्रदेश में भाजपा कार्यकर्ताओं ने पूर्ण उत्साह और समर्पण के साथ भाजपा के पक्ष में अभूतपूर्व जनसमर्थन जुटाया और भाजपा की ऐतिहासिक जीत की पटकथा लिखी है और छत्तीसगढ़ की सभी सीटों पर भाजपा प्रचंड मतों से विजयी होगी। नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, कांग्रेस के छलावों, झूठ और दंभपूर्ण अमर्यादित टिप्पणियों के दंश से लहूलुहान छत्तीसगढ़ की जनता ने अब छत्तीसगढ़ को कांग्रेसमुक्त राज्य बनाने के अभियान पर पक्की मुहर लगाई है। देव ने कहा कि एक ओर जहाँ बस्तर, राजनांदगाँव, महासमुंद, बिलासपुर, कोरबा, जांजगीर-चाँपा में कांग्रेस प्रत्याशियों को लेकर क्षेत्र के कांग्रेस कार्यकर्ताओं में ही काफी आक्रोश देखा गया.

लिव इन रिलेशनशिप में बच्चे का जन्म, पिता मुस्लिम और मां हिंदू, अब छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने सुनाया बड़ा फैसला

रायपुर। हाईकोर्ट जस्टिस गौतम भादुड़ी व जस्टिस संजय एस अग्रवाल की डीबी ने लिव इन रिलेशनशिप से जन्म लिए बच्चे का संरक्षण प्राप्त करने पेश की गई अपील में बड़ा फैसला दिया है। कोर्ट ने कहा कि समाज के कुछ वर्ग में लिव इन रिलेशनशिप का पालन किया जाता है, जो भारतीय संस्कृति में अभी कलंक के रूप में जारी है, क्योंकि लिव इन रिलेशनशिप एक आयातित दर्शन है, जो भारतीय सिद्धान्तों के सामान्य अपेक्षाओं के विपरीत है।

कोर्ट ने कहा कि विवाहित पुरुष के लिए लिव इन रिलेशनशिप से बाहर निकलना बहुत आसान है। मामले में अदालत इस संकटपूर्ण लिव इन रिलेशनशिप के उत्तरजीवी और इस रिश्ते से पैदा हुए बच्चे की कमजोर स्थिति के प्रति अपनी आँखें बंद नहीं कर सकती है।

कोर्ट ने मुस्लिम ला में चार शादी की अनुमति होने के तर्क पर कहा इसके लिए सामान्य नियम है। इसमें पहली पत्नी से तलाक होना चाहिये और यह मुस्लिम रीति को मानने वालों के बीच होना चाहिए। मामले में दूसरा पक्ष हिन्दू है और उसने अपना धर्म नहीं बदला है। मामले में सुनवाई के बाद कोर्ट ने अपील को खारिज कर दिया है। दंतेवाड़ा निवासी शादीशुदा अब्दुल हमीद सिद्दिकी करीब तीन साल से एक हिंदू महिला के साथ लिव इन रिलेशनशिप में था। साल 2021 में महिला ने धर्म परिवर्तन किए बगैर उससे शादी कर ली। पहली पत्नी से उसके तीन बच्चे हैं। हिंदू महिला ने अगस्त 2021 में बच्चे को जन्म दिया। 10 अगस्त 2023 को महिला अपने बच्चे के साथ गायब हो गई।

पिता की अपील खारिज

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

आप तो मर चुके हैं वोट नहीं डाल सकते

रायपुर। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए छत्तीसगढ़ की 7 लोकसभा सीटों रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, दुर्ग, जांजगीर-चांपा और सरगुजा के लिए मतदान जारी है। सुबह से मतदान केंद्र तक पहुंचकर लोग मतदान कर रहे हैं, लेकिन इस बीच छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से अजीबोगरीब मामला सामने आया है। मतदान कर्मियों ने एक मतदाता को ये कहकर मतदान करने से रोक दिया कि उसकी मौत हो चुकी है। अपनी मौत की खबर सुनकर खुद मतदाता भी हैरान हो गया। मिली जानकारी के अनुसार मामला रायपुर के मदर टेरेसा वार्ड के बूथ क्रमांक 10 का है, जहां सुधीर मंडपे नामक मतदाता अपने अधिकार का प्रयोग करने पहुंचे थे। पहले तो सुधीर लाइन में लगकर अधिकारियों तक पहुंचे, जहां डॉक्यूमेंट देखने के बाद अधिकारी बोले आप तो मर चुके हो। ये सुनकर सुधीर का माथा ठनक गया और पूछने लगे कि तो क्या मैं भूत हूं? हैरानी की बात तो ये है कि 4 महीने पहले ही सुधीर ने इसी बूथ पर विधानसभा चुनाव के लिए मतदान किया था और 120 दिन के भीतर निर्वाचन आयोग ने उन्हें मृत साबित कर दिया। वहीं, मतदान प्रतिशत की बात करें तो दोपहर 1 बजे तक 58.19% मतदान हुआ है।

लोकतंत्र के पर्व में एक साथ सहभागी बने चार पीढ़ियां

रायपुर। लोकसभा निर्वाचन-2024 में आज 07 मई मतदाताओं को उत्साह देखते ही बना। आज रायपुर उत्तर विधानसभा में सुंदर नजारा देखने को मिला। वहां जैन परिवार की एक साथ चार पीढ़ी मतदान करने पहुंची। यहीं नही इन्होंने सुबह उठते साथ सबसे पहले मतदान केन्द्र का रूख किया और पहले जलपान करने के बजाय सहपरिवार वोट करना उचित समझा। परिवार के सबसे वरिष्ठ सदस्य 84 वर्षीय श्री बाबूलाल जैन के नेतृत्व में पूरा परिवार मतदान करने सुबह-सुबह ही उत्तर विधानसभा के बी.पी. पुजारी स्कूल पहुंच मतदान किया। यहीं नही उन्होंने मुख्य दरवाजे पर प्रवेश करने के पश्चात बी.पी-शुगर चेकअप करवाया। उसके बाद मतदाता प्रतीक्षाकक्ष में बैठकर अपना समय बिताया। जैन परिवार वोट देने के लिए बूथ की लाईन में लग गए, परंतु वहां की व्यवस्था देखकर खुश हुए और लाईन पर खडे होने के बजाय बैठने के लिए बैंच-चेयर व्यवस्था थी, वह भी महिला एवं पुरूष का अलग अलग। प्यास लगने पर बाहर जाने की जरूरत नही पड़ी वहीं पर स्टॉल पर जाकर पानी पिया।

शिक्षा मण्डल की हेल्पलाईन पर 65 फोन कॉल का हुआ समाधान

रायपुर। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा 1 मई से 15 मई तक परीक्षा परिणाम से पूर्व विद्यार्थी के मन में परीक्षा परिणाम के भय से होने वाले उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिए टोल-फ्री नम्बर 18002334363 पर सुबह 10.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक और मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाईन टेली मानस टोल-फ्री नम्बर 14416 पर चौबीस घण्टे सातों दिन निःशुल्क परामर्श दिया जा रहा है। टोल-फ्री हेल्पलाईन पर आज कुल 65 फोन कॉल आए। जिलों से प्रश्न पूछा गया कि रिजल्ट कब तक आयेगा, फिक्स डेट बता सकते हैं क्या? तनाव हो रहा है, मेरा रिजल्ट क्या होगा? कितने नम्बर में पास होते है। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा चिन्हाकिंत मनोवैज्ञानिक, चिकित्सकों, कैरियर काउंसलर द्वारा पूछे गए प्रश्नों और समस्याओं का त्वरित निराकरण किया गया। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती रेणु जी पिल्ले के संरक्षण में एवं सचिव श्रीमती पुष्पा साहू के आदेशानुसार हेल्पलाईन नम्बर 18002334363 संचालित है। परीक्षा परिणाम के पूर्व विद्यार्थियों के मन में परीक्षा परिणाम के भय से होने वाले तनाव के प्रबंधन, कैरियर, विषय चयन संबंधी मार्गदर्शन के लिए आज मनोवैज्ञानिक, कैरियर काउंसलर डॉ. स्वाती शर्मा, डॉ. वर्षा वरवंडकर, मण्डल के उपसचिव श्री जे.के. अग्रवाल, नोडल अधिकारी डॉ. प्रदीप कुमार साहू के नेतृत्व में सहायक प्राध्यापक श्रीमती मनीषी सिंह, श्रीमती प्रीति शुक्ला, श्री सिरीज पॉल द्वारा परीक्षार्थियों, अभिभावकों में परीक्षा परिणाम से पूर्व उनके मन में आने वाले विभिन्न प्रकार के प्रश्नों, समस्याओं का त्वरित निराकरण किया गया।

शिकार के आरोपी ने वन विभाग पर लगाया थर्ड डिग्री का आरोप

गरियाबंद। गरियाबंद के उदंती अभयारण्य एंटी पोचिंग टीम पर आरोपी को थर्ड डिग्री का इस्तेमाल कर टॉर्चर करने का मामला सामने आया है. न्यायालय ने आरोपी की मेडिकल जांच कराने के बाद विभाग के जिम्मेदार अफसरों के नाम सम्मन जारी कर जवाब मांगा है. दरअसल, अभयारण्य में 25 दिन पहले पोटाश बम से हमला कर भालू का शिकार किया गया था. शिकार की भनक जब तक वन विभाग की एंटी पोचिंग टीम को लगती, तब तक आरोपी फरार हो गए थे. टीम ने भालू के अवशेष जप्त कर जांच जारी रखा था. रविवार को टीम ने कालिमाटी के पास आरोपी हजारी गोंड को हिरासत में लिया और मंगलवार की देर शाम देवभोग न्यायालय में पेश किया, जहां आरोपी ने न्यायधीश के समक्ष थर्ड डिग्री के इस्तेमाल का आरोप लगाया. आरोपी ने करंट व पिटाई से बने चोट के निशान भी दिखाए, जिसके बाद न्यायालय ने मेडिकल जांच कराने के बाद विभाग के जिम्मेदार अफसरों के नाम सम्मन जारी कर जवाब मांगा है.

कलेक्टर ने मतदान दलों का माला पहनाकर और मुंह मीठा कराकर किया स्वागत

बलौदाबाजार। लोकसभा चुनाव 2024 बलौदाबाजार जिले में सुव्यवस्थित और सुरक्षित तरीके से संपन्न हो गया. मतदान संपन्न कराकर लौटे मतदान दलों का कलेक्टर सहित प्रशासन के अधिकारियों ने मतदान सामग्री वितरण केंद्र में फुल देकर, माला पहना और मुंह मीठा कराकर स्वागत किया.लोकसभा चुनाव के तीसरा चरण का मतदान मंगलवार शाम छह बजे समाप्त हुआ. इसके बाद मतदान दलों के लौटने का सिलसिला प्रारंभ हुआ जो देर रात तक चलता रहा. वहीं पहली बार मतदान दलों को एक अच्छी व्यवस्था जिला प्रशासन ने दिया, सभी मतदान दल प्रशंसा कर रहे हैं. मतदान कराकर लौटने पर स्वागत किया गया, मिठाई खिलायी गई और छाछ भी पिलाया गया. मतदान दल की महिलाओं ने बताया कि वे पहले भी मतदान संपन्न कराये है पर इस बार बहुत अच्छी व्यवस्था रही. जिसके लिए उन्होंने प्रशासन को धन्यवाद दिया है. वहीं अब ईवीएम को कड़ी सुरक्षा के बीच स्ट्रांग रूम में रखा गया. कलेक्टर के एल चौहान ने बताया कि मतदान का अंतिम प्रतिशत अभी नहीं आया है. फिर भी जनता ने बहुत अच्छे से लोकतंत्र के इस पर्व में भाग लिया. मतदान के दौरान कुछ जगह तकनीकी दिक्कत आई पर हमारी टीम ने तत्काल ठीक कर लिया. जिले के 1009 मतदान केंद्रों में मतदान संपन्न हुआ है.

व्यक्तित्व विकास के लिए अपनी सोच को सकारात्मक बनाएंः सविता दीदी

रायपुर। रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि अपने आचरण, व्यवहार और सोच को सकारात्मक बनाकर बुरी आदतों, व्यसनों आदि से स्वयं को मुक्त करना ही सच्चे अर्थों में व्यक्तित्व का विकास करना है। हमारे शारीरिक, बौद्धिक और व्यक्तित्व विकास के लिए राजयोग की साधना बहुत ही उपयोगी है। ब्रह्माकुमारी सविता दीदी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विधानसभा मार्ग पर शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में आयोजित समर कैम्प में जीवन में नैतिकता विषय पर बोल रही थीं। उन्होंने बच्चों को स्वयं में विशेषताएं भरकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुत ही उपयोगी सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि जैसे लोग अपने बाह्य स्वरूप को सजाने सँवारने के लिए ब्यूटी पार्लर में जाते है उसी प्रकार अपने आंतरिक स्वरूप को निखारने के लिए ऐसे पार्लर की आवश्यकता है, जहाँ अंतर्मन को दिव्य गुणों और मानवीय मूल्यों से सजाया जा सके। जीवन में सम्मान एवं आज्ञाकारिता का महत्व बतलाते हुए उन्होंने बच्चों से कहा कि हमें अपने बड़ों का आदर करना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए इससे न केवल बड़े-बुजुर्गों की बल्कि भगवान की भी दुआएं मिलती हैं। सविता दीदी ने कहा कि हरेक बच्चे को जीवन में सफल होने के लिए अपना लक्ष्य अवश्य बनाना चाहिए। लक्ष्य निर्धारित करने से आगे बढने् का मार्ग सुनिश्चित हो जाता है। इससे मन यहाँ-वहाँ भटकने की अपेक्षा शान्त चित्त होकर एक ही दिशा में अर्थात लक्ष्य को प्राप्त करने पर विचार करेगा। ऐसा करने से सफलता प्राप्त करना सहज हो जाएगा। जीवन में लक्ष्य नहीं बनाया तो उम्र में बड़े तो हो जाएंगे किन्तु सफल व्यक्ति नहीं कहलाएंगे। उन्होने सभी बच्चों को व्यक्तिगत डायरी रखने का सुझाव देते हुए कहा कि एकान्त में बैठकर रोजाना उसमें अपने मन की बातें लिखने की आदत डालें। इससे मन हल्का रहेगा और आपकी कल्पनाशक्ति बढ़ जाएगी। अगर भाषा अच्छी होगी तो भविष्य में आप अच्छे लेखक या कवि भी बन सकते हैं।

मतदान के बाद साफ हो गया भाजपा से ज्यादा सीटें जीतेंगे : दीपक बैज

रायपुर। तीसरे चरण के मतदान के बाद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने मतदाताओं का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि छत्तीसगढ़ की जनता ने भीषण गर्मी की परवाह नहीं करते हुये अपने लोकतांत्रिक कर्तव्य को मतदान करके निभाया यह छत्तीसगढ़ के मतदाताओं की अपने प्रजातांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूकता को दिखाता है। कांग्रेस पार्टी सभी मतदाताओं का अभिनंदन करती है। तीसरे चरण के साथ ही राज्य के सभी 11 लोकसभा सीटों पर मतदान पूरा हो गया है। सभी 11 सीटों पर कांग्रेस के जीत की संभावनायें प्रबल है। कांग्रेस भाजपा से ज्यादा सीटें जीत रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि छत्तीसगढ़ की जनता ने बदलाव के लिये मतदान किया है। जनता ने महंगाई, बेरोजगारी, वादाखिलाफी के विरोध मतदान किया। आज मतदान हुये सभी 7 लोकसभा क्षेत्रों में कांग्रेस के पक्ष में रूझान साफ दिख रहा था। लोग मोदी सरकार की विदाई के लिये भीषण गर्मी में अपने घरों से निकलकर मतदान केन्द्रों तक आये और कांग्रेस के पक्ष में मतदान किया। पहले दो चरणों से ही साफ हो गया था प्रदेश की जनता में मोदी सरकार के लिये आक्रोश है। तीसरे और अंतिम चरण में मतदाताओं के रूख ने पुख्ता कर दिया कि राज्य की जनता मोदी सरकार के 10 साल के कुशासन और वादाखिलाफी से परेशान है। जनता ने अपने मतदान की शक्ति से देश के हालात को बदलने का मन बना लिया था और मतदान केंद्र पहुंचकर भाजपा सरकार के खिलाफ वोट किया।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.